द ओडीसी

एराउन्ड द वर्ल्ड आन बाइसिकिल

बी०पी० सिंह - इण्डिया



Touring the world on a bicycle, Brij Pal Singh, 27, is resting in Toronto before embarking on next leg of journey. Starting in New Delhi three years ago , he has covered 43,600 miles and has worn out three bicycles. He is paying way through occassional jobs and assistance from Indian communties, and plans to write a book about experiences after tour's end in 1978.

GLOBE AND MAIL (CANADA) FRIDAY, MAY 14, 1976

कैल एवं मसूरी से मनीला तक

एक छात्र जिसने 5 महाद्वीपों एवं 76 देशों का भ्रमण साइकिल से किया

लेखक - यश कुमार ढाका
(ढाका जी)

द ओडीसी

अराऊण्ड द वर्ल्ड ऑन बाईसिकिल (बी0 पी0 सिंह- इण्डिया)

साईकिल पर विश्व भ्रमण की बात, वो भी 5 वर्ष में, एक सपने जैसी लगती है। किन्तु इस बात को हकीकत में बदलने का बीड़ा उठाया "म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज- मसूरी" के एक छात्र ने जिसका नाम था ब्रजपाल सिंह। श्री ब्रजपाल सिंह ने एम0 ए0 इकोनामिक्स से उत्तीर्ण करने के बाद कुछ नया करने की सोची। उन्हें स्वामी विवेकानन्द के सिद्धान्तों से प्रेरणा मिली और उन्होंने विश्व भ्रमण की ठान ली। ये ग्राम कैल (शामली) जनपद मुजफ्फरनगर के मूल निवासी थे।

27 वर्ष की उम्र में, 27 अप्रैल, 1973 को उन्होंने अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे अमृतसर से हवाई मार्ग द्वारा अफगानिस्तान और वहाँ से अपनी साइकिल द्वारा ईरान होते हुए एक देश से दूसरे देश की ओर बढ़ते गए। उन्होंने आठ डालर से यात्रा प्रारम्भ की थी। उन्होंने पूरी यात्रा में चार साईकिल बदली तथा पाँच पास पोर्ट का प्रयोग किया। **3 दिसम्बर, 1976 तक श्री बी0 पी0 सिंह ने 48 हजार मील से अधिक साईकिल चलाई तथा 76 देशों व पाँच महाद्वीप (एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिण अमेरिका) को अपनी साईकिल से पार कर लिया।**

नोर्थ अमेरिका में श्री बी0 पी0 सिंह को **'इण्डियन एब्रोर्ड'** समाचार-पत्र ने शुक्रवार, अप्रैल 23, 1976 को **'यंग इण्डियन यूलिसिस ऑफ 20th सैन्चुरी'** कह कर पुकारा तथा 'यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास, स्टूडेण्ड न्यूज पेपर- आस्टिन' ने उन्हें **'साईक्लिंग प्रोफेसर'** कह कर नवाजा।

उनकी यात्रा का उद्देश्य न केवल साहसिक अथवा जोखिम भरी यात्रा करना था वरन् सम्पूर्ण मानव जाति को अज्ञानता एवं अंधकार से बचने का एक प्रखर संदेश देना भी था तथा साथ ही साथ वे अर्थशास्त्र में शोध (Ph.D.) हेतु सामग्री, एकत्र करना चाहते थे।

उन्होंने अपनी यात्रा में कई स्थानों पर अपने खर्चे की पूर्ति हेतु नौकरी भी की। किसी-किसी देश में वहाँ के नागरिकों ने उनका सहयोग किया। **'नेटिंघम-इंगलैण्ड'** की 'रेलिग' कम्पनी ने अपनी दस गेयर की साईकिल उन्हें उपहार स्वरुप दी। कई स्थानों पर उन्हें देखने के लिए सड़क जाम हो जाती थी।

सम्पूर्ण यात्रा के दौरान उनका 22 पौण्ड वजन घटा तथा 23 अप्रैल, 1976 को उनका वजन 132 पौण्ड था तथा घर से चलते समय 154 पौण्ड था। यात्रा के दौरान उन्होंने तीन भाषायें- अंग्रेजी, जर्मनी तथा स्पेनिश सीख ली थी। उन्होंने 15 से 20 मील प्रति घंटे की गति से साईकिल चलाई तथा एक दिन में 100 किमी0 से 200 किमी0 तक साईकिल चलाई।



B. P. Singh

उनका विचार 1978 के पूर्वाद्ध तक अपना छठा महाद्वीप- आस्ट्रेलिया पार कर 60000 मील साईकिल चलाकर 100 देशों की यात्रा पूर्ण कर लेने का था। सम्पूर्ण यात्रा में उनके 15 हजार डालर खर्च हुए तथा 5 हजार डालर अग्रिम यात्रा हेतु आवश्यक थे। यात्रा के दौरान उन्होंने अनेक कष्ट उठाये। जर्मनी में उनका धन लुटा, इथोपिया में बदमाशों ने उनके सिर पर हमला किया। दार-एस-सलाम में कपड़े चोरी हो गए। पेरू में कैमरा खो गया। चिली के रेगिस्तान में साईकिल टूट गई तथा नेरोबी के जंगल में जानवरों के डर से पेड़ों पर वक्त गुजारना पड़ा आदि।

मनीला में कुछ दिन तक बीमार रहने के बाद 29.12.1976 **को भारत का यह वीर सपूत- सदैव के लिए चिरनिद्रा में सो गया।** उनका विचार अपनी यात्रा की समाप्ति के बाद एक पुस्तक 'ओडीसी' नाम से लिखने का था। उनकी भावनाओं का आदर करते हुए, **मैंने इस पुस्तक का नाम "द ओडीसी" रखा है। हम ऐसे महारथी का** शत्-शत् नमन करते हैं। 20 मार्च, 2005 को से0नि0 ब्रिगेडियर आर0 के0 सिंह ने उन्हें **वर्ल्ड टूरिस्ट नं0-1** विमोचन के समय कहा तथा राष्ट्रीय रामायण मंच के निर्णायक मण्डल ने उन्हें **कोलम्बस ऑफ इण्डिया** की उपाधि प्रदान की तथा यह भी कहा कि 20 मार्च, 2005 का दिन **'ओडीसी डे'** के रूप में जाना जायेगा।

नोटः विस्तृत एवं सम्पूर्ण जानकारी हेतु **श्री बी. पी. सिंह** पर प्रकाशित पुस्तक **"द ओडीसी"** अवश्य पढ़े।

लेखक-

डॉ0 यश कुमार ढाका (मानद)

एम0ए0 अंग्रेजी, हिन्दी तथा धर्मरत्न
सहयोग सम्मान एवं साहित्यक सम्मान प्राप्त
ढाका हाउस, 8/1, नेहरू नगर, गढ़ रोड़ मेरठ।
दूरभाषः 0121-2770008

With love and respect—

द ओडीसी

To - Sh. Sareen Sahib

"एराउन्ड द वर्ल्ड आन बाइसिकिल"

[signature] 1/4/2024

॥ एक अद्भुत विश्व साइकिल यात्री ॥

'म्यूनिसिपल पोस्टग्रेजुएट कालेज, मसूरी-देहरादून (अब उत्तरांचल में) के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष श्री ब्रजपाल सिंह द्वारा साइकिल पर सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण 5 वर्ष में पूर्ण करने का संकल्प लेकर 27-5-1973 से प्रारम्भ की गई विश्व यात्रा के साहसिक एवं रोमांचकारी अनुभवों से परिपूर्ण एक रोचक पुस्तक।



लेखकः

डा० यश कुमार ढाका

एम०ए० अंग्रेजी व हिन्दी

बी०ए० आनर्स एवं धर्मरत्न

"सहयोग सम्मान" एवं "साहित्यिक सम्मान" से सम्मानित

8 / 1, नेहरू नगर, गढ़ रोड, मेरठ-2

फोन :- 2770008

E-mail- yndhaka@rediffmail.com

Ph - 9259075674

मूल्य 108/-

CHIEF POINTS

1. *What - will it (your book) be called ? Asked the reporter.*
   "The Odyssey ". Sh. Singh replied on 23rd April, 1976 in North America.
   It means - A long adventurous Journey
2. *"Australia is the last- destination of my journey."*
3. *Sh. Singh said-*
   "I want to save humanity from ignorance and darkness."
4. *"If you have strong determination and courage, money will come later."*
5. *"I am a farmer's son and can turn my hand to a number of things."*

B.P. Singh

Writer's other books-

A- Have you retired or going to be ?

B- The pride of the country.

Yash Kumar Dhaka

Garg Computers, Nehru Nagar, Main Road, Phool Bagh, Meerut. 2769409

"THE ODYSSEY"

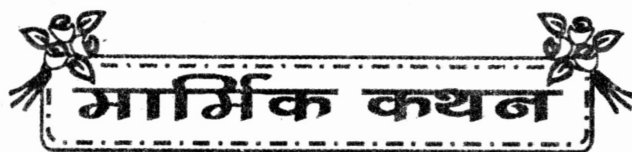
AROUND THE WORLD ON BICYCLE



Brij Pal Sing Verma de bicicleta para conhecer a situação dos povos

B.P. SINGH
INDIA

"A WONDERFUL CYCLIST OF THE WORLD"



(A) अरूगुआ में श्री सिंह ने अपनी यात्रा की कठिनाईयों का वर्णन इस प्रकार किया-

"कितनी भयानक है आज की यात्रा। रास्ते का कोई पता नहीं। न जाने आज की रात कहाँ होऊँगा। कच्चा रास्ता, सामने की हवा उड़ती हुई धूल और खाने का सामान पास नहीं। बस्ती भी कोई नजर नहीं आती।"

(B) साओ पाऊलो से-

"भारत से बाहर जाड़े की रात में कितने ही दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं, तब कहीं जाकर सोने की लिये स्थान प्राप्त होता है। कई बार बाहर भी सोना पड़ जाता है।"

(C) श्री सिंह ने लिखा है कि-

''ब्राजीलिया से साओपाउलो के बीच लगभग एकहजार मील की दूरी थी। रास्ते में कोई भी अंग्रेजी बोलने वाला नहीं मिला। हजारों मील तक भी शहर नजर नहीं आये। सिर्फ एक विशाल अन्तर के बाद पैट्रोल पम्प नजर आते थे। कई बार तो मुझसे मिलने और स्वागत करने हेतु सड़क रूक जाती थी। किन्तु एक बात देखने को मिली कि एक या दो जगह को छोड़कर किसी ने भी खाने का पैसा मुझसे नहीं लिया।"

(D) चिली के रेगिस्तान का वर्णन-

"इस विशाल रेगिस्तान में चलते चलते थक गया। न पास में खाना रहा और न पानी। रेगिस्तान का कचोई अन्त नहीं। दो सौ चालीस किलोमीटर्र चल चुका हूँ। कोई भी शक्ति नहीं बची है। साईकिल टूट चुकी है। समय भयानक है। कोई आशा नहीं अब सिवाय मौत के। यही सोचते--2 मैं रेत के ढेर पर लेट गया।"

समर्पण

ये

पुस्तक

श्री ब्रजपाल सिंह

की माता स्वर्गीय श्रीमती परसन्दी देवी
एवं उनके पिता स्व० श्री जिले सिंह जी
के करूणामयी, लावण्यमयी, स्नेहिल,
एवं पावन चरणों में सादर समार्पित है।
हम उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं।



1 – पत्रकार ने नार्थ अमेरिका में उनसे पूछा – 'आप अपनी किताब का नाम क्या रखेंगे? –

"द ओडीसी" श्री बी0 पी0 सिंह ने उत्तर दिया।

2 – अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने 4 साईकिल तथा 5 पासपोर्ट का प्रयोग किया।

3– बर्न स्विटजरलैण्ड में 7–7–1974 को उन्हें "**सिंह**" की उपाधि देकर सम्मानित किया गया।

4 – "नार्थ अमेरिका" में 'इण्डियन एब्रौड' समाचार पत्र में 23 अप्रैल 1976 को श्री बी0 पी0 सिंह को "**20 वी शताब्दी का यूलिसिस**" कहा तथा "**यंग इण्डियन यूलिसिस**" के नाम से न्यूज दी गई।

5 – 'द डेली टैक्सास' (The Daily taxas-Austin) ने 19 जनवरी 1976 में श्री बी0 पी0 सिंह को –"**साईकिलिंग प्रोफेसर**" की उपाधि से नवाजा।

6 – यात्रा पूरी करते 2 अप्रैल 1976 तक उनका वजन 22 पौण्ड घट गया तथा 132 पौण्ड बचा।

7 – श्री बी0 पी0 सिंह ने अपनी यात्रा के दौरान एक घण्टे में 15 मील तक साईकिल चलाई तथा उन्होंने कहा है कि वे एक दिन में 200 मील तक साईकिल चला सकते हैं।

8 – (साउथ चाईना मर्निग पोस्ट –10 नवम्बर, 1976 से)

श्री सिंह को उम्मींद थी कि वे 1978 के प्रारम्भ तक 60000 मील साईकिल चलाकर 100 देशों से अधिक की यात्रा पूर्ण कर लेगें।

9 – श्री सिंह अपने अन्तिम समय से पूर्व 48000 मील से अधिक साईकिल चलाकर 76 देश व 5 महाद्वीपों की यात्रा पूर्ण कर चुके थे। उनका छठा महाद्वीप आस्ट्रेलिया था जो कि अधूरा रह गया।

10 – 5 मई 1973 को ताईफालियो (TAIFALEO) नामक समाचार पत्र में श्री सिंह ने अपने गाँव – कैल शिकारपुर व जनपद – मुजफ्फरनगर का नाम विश्वस्तर पर प्रकाशमान किया।

11 – **('अलरियाज – समाचार पत्र द्वारा')**

श्री सिंह ने हवाई मार्ग से यात्रा प्रारम्भ की। पहले अफगानिस्तान गये, फिर अपनी साईकिल पर सवार होकर 'ईरान' फिर तुर्की और उसके बाद तो एक के बाद दूसरे देश पार होते चले गये।

12 – उनकी यात्रा का उद्देश्य न केवल साहसिक कार्य करना था वरन् मानव जाति को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालकर ''ज्ञान की खोज'' करना था।

13 – उन्होंने कहा है कि –

"मैं संसार के भविश्य के बारे में और अधिक जानने आया हूँ।"

(I have come to learn more about the future of the world.)

14 – अपने देश भारत से श्री सिंह को अपार लगाव रहा तथा उसकी ख्याति को हमेशा बढ़ाया।

15 – वे स्वामी विवेकाननद के भक्ते थे। उनके दृष्टान्त श्री सिंह के लिए प्रेरणादायक बनते गये। यात्रा में श्री सिंह की ताकत 'स्वामी जी' के श्रेष्ठ वचन ही थे।

16– श्री बी0 पी0 सिंह ने इथोपिया में लिखा है कि –

"यदि इस प्रयत्न में हम मर भी जायें तो भी बुरा नहीं"

17— अतिथि सत्कार में संसार हिन्दुस्तान से बहुत पीछे हैं।

18— किसी भी देश की संस्कृति भारतीय संस्कृति की तुलना में कहीं नहीं ठहरती और सिद्वान्त दिल तथा दिमाग को शांति प्रदान करते हैं।

19— एच0 डी0 होरनाडे ने लास एन्जिल्स में कहा –
''भारत को समझना वैस्ट वालों के लिये आसान नहीं है। भारत एक महान राष्ट्र है और बेहद शाक्तिशाली है।''

20— उन्होंने स्वयं के लिये लिखा है कि –
''ब्रजपाल सिंह, पृथ्वी के अन्तिम छोर तक जाना, इस संसार में कोई भी तेरे बारे में कुछ भी सोचे, यह जानने की कोशिश करना ही मूर्खता एवं समय की बर्बादी है। जो तुझे अच्छा लगता है, गम्भीर रूप से उस पर चिन्तन करते हुये आगे बढ़ता जा।''

नोट— ''यह पुस्तक श्री ब्रजपालसिंह के विश्व भ्रमण एवं सिद्धान्तों पर प्रकाश डालती है। इसके कुछ पृष्ठों को अंग्रेजी भाषा में इस लिये दिया गया है ताकि अहिन्दी भाषी व्यक्तियों को भी इस पुस्तक को समझने व श्री बी०पी० सिंह का परिचय प्राप्त करने में कठिनाई न हो।''

TRIBUTE

IN THE SWEET MEMORY OF







1946 **1976**

'SH. BRIJ PAL SINGH JI'

__*His Words*__— "With the determination and will 'nothing is impossible' in the mortal world. Outer conduct and inner perfection must blend for men to be happy."

All the members of Dhaka families pay their tribute to this immortal soul with the pearls of tears to ascertain his place on the golden seat of heaven.

May this soul appear in this world again and again to encourage the young generation to create something wonderful by removing the weakness of heart and the ignorance of mind.

Yash Kumar Dhaka

श्रद्धाँजलि

आदरणीय ब्रजपाल सिंह इस नश्वर संसार को त्यागकर दिनांक 29-12-1976 को अपने आध्यात्मिक पिता- 'परमपिता परमेश्वर' के घर अपनी यात्रा बीच में ही छोडकर चल दिए। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

उनके शब्द :-

उनका जीवन सिद्धान्त 'दूसरों को सम्मान, देश भक्ति, कार्य के प्रति लगन तथा सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने की उनकी इच्छाशक्ति हम सब को एक प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

उनके समस्त रिश्तेदार, मित्रगण, ग्रामवासी व क्षेत्रवासी तथा उनका कैल परिवार -

श्री पुरूषोत्तम सिंह, श्री महीपाल सिंह, श्री सतेन्द्रपाल जी, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री वीरसेन जी, श्री सत्यपाल सिंह, श्री धर्मवीर सिंह, श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री रविन्द्र कुमार एंव श्री अरविन्द कुमार, अपने अश्रुरूपी पुष्प अर्पित कर उनकी आत्मा की शान्ति हेतु अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं कि -

'प्रभु इस दिवंगत आत्मा को स्वर्ग में उच्च स्थान प्रदान करें तथा पुनः इस आत्मा को पृथ्वी पर साकार मानव रूप में जन्म दें ताकि वह विश्व स्तर पर भाई चारा, प्रेम व सद्भावना कायम कर न केवल अपने परिवार बल्कि क्षेत्र, प्रान्त व देश का नाम अपने श्रेष्ठ कार्यो से गौरवान्वित कर, आसमान की बुलन्दियों तक पहुँचा सके।'

पुष्पाँजलि



श्री ब्रजपाल सिंह के कार्यों का वर्णन अवर्णनीय है। स्वामी विवेकानन्द जी की शान व भक्ति का दीप हदय मे प्रज्जवलित कर सम्पूर्ण भूमण्डल पर "बसुधैव कुटम्बकम" के स्वप्न को साकाररूप प्रदान करने की क्षमता रखने वाले सन्त श्री सिंह की छवि तो अपने आप में ही एक अनुकरणीय उदाहरण है, जो सदैव दूसरों को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

ऐसी श्रेष्ठ आत्मा को हम सब पुष्प अर्पण करते हैं -

श्रीमती अलका बालियान	-	श्री जितेन्द्र बालियान
श्रीमती नीलम ढाका	-	श्री यश कुमार ढाका
श्रीमती अनीता दराल	-	श्री मुकेश दराल
श्रीमती रेणु धनकड़	-	श्री विनोद धनकड़
श्री उपेन्द्र कुमार	-	श्रीमती मोनिका सिंह
श्री दीपेन्द्र कुमार	-	श्रीमती कविता
श्री श्रवण कुमार	-	श्रीमती रविता
श्री लवी जी	-	....

PREFACE

I extend my great pleasure to hand over this book to you. It throws light on the brave and wonderful deeds of Sh. Brijpal Singh Ji who dared go on the bicycle for the world tour in 1973.

It was not an easy task. Only a few people take such type of step. Sh. Singh was one of them. He got the inspiration for the trip by reading the notes of Swami Vivekanand, the greatest monk of India. He was his sole God. Sh. Singh expressed his views on 30th Sep. 1974 through 'Evening Mail'......

"I am a Hindu. I live by the teachings of Swami Vivekanand, a famous teacher, in India who taught me to have tremendous perseverance.

I feel, I have the sort of energy and will power and I am sure, I will reach my goal."

He wanted to do something new in this world. He wished to create a friendly atmosphere in the world. He adduced the massage of love and unification to the people of the world on behalf of Indian people decorating it with the flowers of respect. He disclosed his heart in Philippines on 26th November 1976.

"Nothing is impossible in this mortal world and if we are strongly determined to seek wisdom and to see our goal then we can do everything."

His gold character is beyond description. I tried my best to highlight his golden deeds and qualities. During the tour, he attained a high moral spirit that took him higher than the common man.

I spread my flowers of tears to wash the dust and thorns of his feet.

Yash Kumar Dhaka

उद्देश्य एवं आभार

इस पुस्तक का उद्देश्य श्री ब्रजपाल सिंह के साहसिक कार्यों (छात्र जीवन व साईकिल यात्रा-विश्व भ्रमण) को प्रकाश में लाना है। उनका साईकिल पर *76* देशों व *5* महाद्वीपों को पार करना तथा सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण *5* वर्ष तक निश्चित रूप से पूर्ण कर लेने की प्रतिज्ञा आने वाली पीढ़ी के लिए मार्ग दर्शन का कार्य करेगी। आधुनिक संसार में उनका "साईकिल पर विश्व यात्रा" का साहस व जोखिम भरा कदम उठाना अपने आप में एक उदाहरण है।

यह पुस्तक किसी भी तर्क, वितर्क, बहस अथवा वाद एवं विवाद के विषय से पूर्णरूपेण मुक्त है। पुस्तक में दिए गये कथन उनकी 'चार डायरी' व विदेशी अखबारों से प्राप्त किए गये है जो कि मनीला (फिलीपीन्स) में स्थित भारतीय दूतावास ने उनके परिजनों को श्री बी० पी० सिंह की धरोहर के रूप में उनके देहान्त के पश्चात भिजवाये थे।

पुस्तक में दी गई सामग्री द्वारा पाठकों को श्री सिंह के कार्यों से परिचित कराना मात्र है। लेखक अथवा मुद्रक किसी भी त्रुटि, स्थान, दिनांक, धटना, दुर्धटना एवं अन्य किसी भी बेमेल स्थिति अथवा असंगतता के लिये जिम्मेदार नही होंगे। किसी भी वाद के लिए वाद क्षेत्र मेरठ ही मान्य होगा। लेखक ने श्री बी० पी० सिंह की डायरी एवं अखबारों से प्राप्त जानकारियों का सरलीकरण व सौन्दर्यीकरण अपनी कलम रूपी तुलिका से कर उसमें विभिन्न रंगों की छ्टा बखेरने का प्रयास ही किया है।

इस लेखन कार्य हेतु तथ्यों को संकलित कराने में मदद श्री पुरूषोत्तम जी, श्रीमती समन्दरी जी, श्रीमती राजेश जी, श्री महीपाल सिंह जी, श्रीमती विद्यादेवी, श्री सतेन्द्र कुमार जी, श्री देशपाल जी व श्री श्रवण कुमार ने की। मैं हृदय से उनका आभारी हूँ और उन्हें साधुवाद देता हूँ।

यश कुमार ढाका

अनुक्रम

एक साहसी एवं प्रतिभाशाली यात्री

ब्रजपाल सिंह

(धैर्य, गुण और ज्ञान का अद्भत संगम)

उनका परिचय :-

ये सच है कि समय कभी नहीं ठहरता और न ही किसी की प्रतीक्षा करता है। समझदार व्यक्ति स्वयं समय के साथ चलता है। समय को अपने अनुसार चलाने की गलती नहीं करता। ऐसे ही व्यक्ति दुनियां में एक उदाहरण छोड़ जाते है। उनके जीते जी और मृत्यु उपरान्त भी लोग उन्हें याद करके उनके उदाहरण आने वाली पीढियों को सुनाते रहते हैं ताकि वे भी अच्छा कार्य अपने जीवन में कर सकें। इस संसार में लोगों की भीड़ है और जो भीड़ को चीर कर रास्ता बना ले, उसे जाँबाज (Superman) कहते है और ऐसे ही जाँबाज थे श्री ब्रजपाल सिंह जिन्होंने साईकिल से अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु विश्वभ्रमण की ठान ली। कितनी सत्य हैं ये पंक्तिया उन पर –

''मै अकेला ही चला,
पर रास्ता बनता गया,
धैर्य, हिम्मत और बल
राह में मिलता गया'' ।

(ढाका जी)

उस दिन चारों तरफ एक अजीब सी शान्ति थी। समय अपनी गति से चल रहा था। शामली, (जनपद –मुजफ्फरनगर) से 18 किमी दूर एक

गाँव–कैल शिकारपुर (तहसील –कैराना, अब–शामली) अपने आँचल में उस दिन की खुसियाँ समेटे हुए था। खुश होने वाली बात भी थी क्योंकि उस दिन गांव मे सन् 1946 में चौ0 जिले सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परसन्दी देवी के घर उनकी तीसरी सन्तान ने जन्म लिया था। बालक को बडी खुशियों के साथ पाला जाने लगा। उसका नाम उसके बाबा श्री अर्जुन सिंह जी ने ब्रजपाल सिंह रखा। सबको उस बालक से विशेष स्नेह था क्योकि उसके पिता उसके जन्म के लगभग 15 माह बाद ही बीमारी से चल बसे थे तथा बालक अपने परिजनों के भरोसे था। बालक की गतिविधियाँ और चपलता सामान्य से कुछ अलग थी। सभी उससे विशेष स्नेह रखते थे।

शिक्षा और छात्र जीवन :-

इसी प्रकार हंसते खेलते दिन गुजरते गये तथा बालक स्कूल जाने योग्य हो गया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की प्राइमरी पाठशाला में हुई। वहीं से उन्होने कक्षा 5 पास की। कक्षा 6 में 'गढ़ीपुख्ता' में पढाई की तथा कक्षा 7 में 'नोजल' में अध्ययन किया। कक्षा 8 में 'ऊन' जाकर शिक्षा ग्रहण की। प्रारम्भिक शिक्षा सामान्य ढंग से प्राप्त की। कक्षा 9 में उन्होंने 'बघरा' इन्टर कालिज (स्वामी कल्याण देव का) से शिक्षा प्राप्त की तथा इसके बाद की शिक्षा 'जनता वैदिक कालेज' बडौत –जनपद –बागपत में प्राप्त की। वहाँ से इण्टर पास करने के पश्चात् श्री ब्रजपाल सिंह ने मसूरी देहरादून) में स्नातक स्तर पर शिक्षा प्राप्त की और अपनी M.A Economics की पढ़ाई मसूरी में ही पूर्ण की। अध्ययन करते हुये ही उन्होंने राजनीति में कदम रखा था तथा 'Muncipal Post-Graduate College' -Mussoorie के Founder President चुने गये। ये चुनाव उन्होंने 1971–72 में जीता। M.A Economics 1973 में पूर्ण कर लेने के

बाद उन्होंने कुछ नया करने की सोची। वह Economics के बारे में कुछ नया खोजना चाहते थे। उनका इरादा Ph.D. करने का था। वे अपने विषय पर जो कि "Comperative & Complete Study of World Economics" से सम्बन्धित था, पर शोध करना चाहते थे। उन्होंने स्वयं इस विषय पर कहा है कि –

"मैं अपनी विश्वयात्रा" पूर्ण कर लेने पर दो कार्य करूँगा, एक तो अर्धशास्त्र विषय पर (Ph.D) व दूसरा "साइकिल पर विश्वभ्रमण" के दौरान अर्जित अनुभवों पर एक पुस्तक का लेखन"।

प्रतिज्ञा :-

इसके लिये उनके पास अब एक रास्ता बचा था कि यदि किताब में तथा अपने विषय में सच्चाई लानी है तो स्वंय घर छोड़ना पड़ेगा तथा एक देश से दूसरे देश जाकर वहाँ की 'अर्थव्यवस्था' की जानकारी लेनी पड़ेगी। यह कार्य आसान नहीं था। श्री ब्रजपाल सिंह ने मुश्किलों से टकराने का मन बना लिया था। यात्रा पर जाने से पूर्व उन्होनें एक "भीष्म प्रतिज्ञा" की तरह शपथ भी ली। उन्हीं के शब्दों में–

"जिस प्रकार महाभारत मे भीष्म ने भयंकर एवं महान प्रतिज्ञा ली कि मैं आजीवन शादी नहीं कँरूगा, उसी प्रकार मेरी भी भयंकर प्रतिज्ञा है कि समस्त विश्व की अविराम यात्रा करना।"

उन्होंने इस सन्दर्भ में महान यात्री फह्यान का भी उदाहरण दिया है। वे समस्त संसार की लम्बाई ओर चौड़ाई अपने पैरों से तय करना चाहते थे। यात्रा के प्रति उनका उद्देश्य इस प्रकार था।

AIM "The aim and end of my 'Around the World' is to travel for the 'UNIVERSAL SALVATION'

इस यात्रा के 'प्रारम्भ और अन्त' का मेरा उद्देश्य-

"समस्त संसार को पापों से मुक्ति दिलाने का सन्देश फैलाना, अज्ञानता दूर करना तथा भाईचारा स्थापित करना एवं बुद्धिमानी से कुछ नया खोजना है।"

समय :-

उन्होंने लिखा है कि **"विश्व यात्रा का कम से कम समय तीन वर्ष होगा और अधिक से अधिक पाँच वर्ष। इस निश्चित समय में अधिक से अधिक यात्रा करनी होगी।"**

इच्छा:-

उनके शब्दों में –

"विश्व यात्रा" **के दौरान एक पुस्तक के लिये भी साम्रगी तैयार करनी होगी। इस पुस्तक के द्वारा ही मानव सेवा करनी होगी। इस पुस्तक का एक–2 पन्ना और एक–2 शब्द प्रत्यक्ष अनुभव को स्पष्ट** दर्शायेगा।

प्रेरणा:-

श्री ब्रजपाल सिंह जी के जीवन में स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव सर्वोपरि रहा। वे 'गीता' तथा 'महाभारत' से भी शिक्षा ग्रहण करते रहे। उन्हें "साईकिल से विश्वभ्रमण" के लिये भी स्वामी विवेकानन्द के साहित्य से ही प्रेरणा मिली।

उन्होंने लिखा है कि–

"मैने भारत के प्रसिद्ध गुरू स्वामी विवेकानन्द से आदर्श ग्रहण किये हैं जिसने मुझे अत्यधिक मेहनत से कार्य करना सिखाया। मुझमें

बहुत अधिक शक्ति है तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अपनी मंजिल तक अवश्य पहुंच जाऊँगा।"

उच्च शिक्षा के विषय में उन्होंने कहा कि–

"उच्च शिक्षा का उद्देश्य जीवन की समस्याओं का समाधान करना है।"

"The use of higher education is to find out how to solve the Problems of Life."

प्रकृतिः–

वे प्रकृति के विषय में बड़े गम्भीर और स्पष्ट विचार रखते थे। उन्होंने लिखा कि –

"अब तो जो कुछ भी पाना है, तो वह प्रकृति से टकराकर ही पाना है। अब तो अविराम संधर्ष प्रकृति से ही करना है। "हार हो या जीत, युद्ध करना हमारा धर्म है। मेरे और प्रकृति के बीच जो युद्व होगा, उसका निर्णय समय और सत्य करेगा"

पुस्तकों एवं साहित्यकारों के बारे में उनके विचारः–

वे लिखते हैं कि – "समाज में अधिक दोष इस लिये पाये जाते है कि समाज और पुस्तकों की दौड़ में पुस्तकें पीछे रह जाती है। बहुत ही कम लेखक होते है। जो समाज के साथ अपनी कलम को चला पाते है। अनेकानेक साहित्यकारों में एक साहित्यकार सच्चा निकलता है और उसकी भी कलम एक लम्बे समय के उपरान्त ही परिपक होती है।"

देश के प्रति उनके विचारः–

श्री ब्रजपाल सिंह जी की राष्ट्रभक्ति व देश के प्रति प्यार उनके शब्दों में झलकता है।

"मेरी प्रेम भरी आँसुओं की बूंदें भारत के खेतों और मुहानों में ओस कर्ण बन जायें जैसे एक शैव, शिवजी की उपासना करता है, एक वैस्णव, विष्णु जी की, एक बौद्व, बुद्ध की, एक ईसाई, ईसामसीह की तथा एक मुसलमान, मुहम्मदसाहब की, इसी प्रकार उसी अनुराग की ज्वाला और लज्जा की लालिमा से मैं भारत को देखता हूँ। – मैं भारत की उपासना करता हूँ।"

(स्वामी रामतीर्थ से प्रेरणा ग्रहण)

उन्होंने पेरू में कहा है कि–

विष्व स्तर पर भारत के समान धार्मिक व आध्यात्मिक राश्ट्र कोई दूसरा नहीं है। विष्व में भारत की बराबरी कोई भी देष नहीं कर सकता है।

अपनी माता, भाईयों, परिवार के सदस्यों व बच्चों के प्रति उनका स्नेह अत्यधिक था। मैंने उनके पत्र पढ़े। ये पत्र उन्होंने अपने परिवार वालों को लिखे थे। उनके अधिकांश पत्र अपने चाचा जी श्री सरदार सिंह जी, अपने भाई महीपाल सिंह जी व सुरेशपाल सिंह जी को सम्बोधित कर लिखे गये थे। सभी पत्रों में अपनी माँ की कुशलता पूछी गई थी तथा चचेरे व तयेरे भाइयों को यथायोग्य अभिवादन के साथ प्यार व सुलह से रहने की सलाह दी गई थी। कुछ पत्रों में 'गीता' के उपदेश से प्रेरणा लेने की बात थी तो कुछ में स्वामी विवेकानन्द का द्रष्टान्त। एक पत्र में अपनी भतीजी 'अलका' को 'मुन्नी' कहकर सम्बोधित किया गया था और पूछा गया था कि 'मुन्नी' और 'नीरू' के स्कूल भी खुल गये होंगे तथा वे स्कूल जाने लगी होंगी। अपने चचेरे भाई सत्येन्द्रपाल के स्कूल जाने के बारे में भी पूछताछ की गई थी तथा सत्येन्द्रपाल जी को मेहनत से पढ़ने की सलाह दी गयी थी। ये पत्र उन्होंने 6–07–1973 को बियोग्रेड (यूगोस्लाविया) से लिखा था। जोकि चौ. सरदार सिंह, चौ. गिरवर सिंह व श्री पुरूषोत्तम सिंह के नाम से था। 'उपेन्द्र' को 'मुन्ना' कहकर सम्बोधित किया गया था तथा "उजाला" नाम से भी पुकारा था।

विवाह के सन्दर्भ में:-

अपने विद्यार्थी जीवन से ही उनका ध्यान लक्ष्य और मंजिल की ओर था। उन्होंने अपने विवाह को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। उनके पास फ्रांस से 'कैरोली फ्रेप्चन' व जर्मनी से 'चारूलता' के पत्र जरूर आये किन्तु उन्होनें अपने लक्ष्य को ही सर्वोपरि प्राथमिकता प्रदान की।

उन्होंने डेनहैग – हालैण्ड (DenHaag- Holland) से 7–8–1973 को एक पत्र अपने चचेरे भाई श्री सुरेशपाल जी को लिखा था जिसमें उन्होने कहा था कि मेरी माँ से कहना–

''रही मेरी शादी की बात, पहली बात तो यह है कि मैं शादी करूँगा ही नहीं और अगर होगी तो हिन्दुस्तान से ही होगी वरन् बिल्कुल नहीं होगी।''

ये बातें उनकी बड़ों के प्रति श्रद्धा और विश्वास तथा देश के प्रति असीम लगाव ही प्रकट करती हैं।

श्री सिंह ने फ्रंकफर्ट (प0 जर्मनी) में अपने विवाह के सम्बन्ध में लिखा है कि–

"I shall marry after having attained full growth and Vigour of mind and body and acquired perfect knowledge and moral training.

यात्रा हेतु उनकी इच्छाशक्ति द्रढ व उच्च हो गई थी तथा सदाचार व नैतिकता की भावना प्रबल होने लगी थी। उन्होंने पूर्ण रूपेण निश्चय कर लिया था कि विश्व यात्रा हेतु शीघ्र ही प्रस्थान करना है। उन्होंने अब अपना ध्यान यात्रा हेतु औपचारिकताओं की पूर्ति में लगा दिया। वे अपनी इस युवा उम्र को यूं ही नहीं खोना चाहते थे। इसलिए उन्होंने बिना रूके और बिना धैर्य खोये अपनी व्यवस्था पूर्ण की। अब वे मंजिल को पाकर ही रूकना चाहते थे। और फिर श्री बी०पी० सिंह चल पड़े........................ ।

भाग -1

प्रथम डायरी

मसूरी (देहरादून) से स्वीडन

Mussoorie (Dehradun) to swedon

15-5-1973 से प्रयासरत

24-5-1973 को परिवार (कैल) से विदा ली

27-5-1973 से यात्रा प्रारम्भ

1973 तक का सफर पूर्ण होने पर

श्री बी० पी० सिंह ने कहा-

"1973 में मैंने लक्ष्य से अधिक यात्रा पूर्ण कर ली।"



विभिन्न देशों में

सच्ची लगन मन में हो तो मंजिल दूर नहीं होती, चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो। उनके लिये ये शब्द कितने उचित हैं। –

" आप आयें या न आयें,

मैं चलूँगा लक्ष्य तक

राह सूनी पथ में काँटे,

चाहे आयें अन्त तक "

(ढाका जी)

श्री ब्रजपाल सिंह ने किसी के साथ आने का इन्तजार नहीं किया, उन्हें इन्तजार था तो बस अपने पासपोर्ट का । वह दिन भी आ गया –

14–5–1973 की सायंकाल का वक्त था। श्री ब्रजपाल सिंह ने अपना पासपोर्ट श्री नित्यानन्द स्वामी' से प्राप्त किया। उन्होंने लिखा है–

''आज शाम को मैंने अपना पासपोर्ट श्री नित्यानन्द स्वामी जी एम. एल. ए. देहरादून से लिया और साथ आज मैंने चौ० चरणसिंह, अध्यक्ष–भारतीय क्रान्तिदल से विदा ली। चौ० साहब ने दो दिन देहरादून का दौरा किया तथा जगह–जगह भाषण किये।''

इस प्रकार 14–5–1973 से 23–5–1973 तक श्री ब्रजपाल सिंह ने अपना टिकट इत्यादि का कार्य पूर्ण किया। टिकट मुम्बई (बम्बई) से इराक तक का था।

24–5–1973 दिन बृहस्पतिवार को श्री ब्रजपाल सिंह अपने गाँव 'कैलशिकारपुर'– शामली (मुजफ्फरनगर) से अपनी विश्वयात्रा हेतु निकल पड़े। वे फतेहपुर होते हुए मसूरी गये। वहाँ से अपना आवश्यक सामान लेकर 27–5–1973 को रेल से बम्बई से चल दिये। 29–5–1973 को

मुम्बई (बम्बई) में ''हरीसिंह एण्ड सन्स'' के यहाँ पहुँच कर शिप (पानी के जहाज) के बारे में पता किया। ज्ञात हुआ कि जहाज एक महीने बाद जायेगा। उन्हें बहुत दुःख हुआ और वे 4—6—1973 को दिल्ली लौट आये।

6—6—1973 की रात उन्होंने श्री रधुवीर सिंह शास्त्री के पुत्र देवपाल सिंह के साथ बिताई तथा 7—6—1973 को अमृतसर से काबुल के लिये टिकट बुक करा लिया।

उनकी विदेश यात्रा

अफगानिस्तान (AFGHANISTAN) :-

12 जून 1973, को दिन बुधवार, समय ठीक 1 बजे, श्री बी0 पी0 सिंह ने अमृतसर 'राजासांसी' एयरपोर्ट से प्रस्थान किया तथा लाहौर पहुँच गये। वहाँ 2 धण्टे वायुयान रूका और वहाँ से काबुल के लिये उड़ चला और ठीक 4 बजे 'काबुल अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर जा पहुँचा।

इरान (IRAN) :-

श्री सिंह ने 2—3 दिन काबुल में धूमने के बाद इरान के लिये प्रस्थान किया तथा ''तेहरान' पहुँच गये।

इराक (IRAQ) + टर्की (TURKY) :-

2—3 दिन वहाँ धूमने के बाद उन्होंने इराक तथा टर्की के लिये वीसा आदि प्राप्त किया और आगे प्रस्थान किया तथा रास्ते मे ''इस्ताम्बुल'' में दो तीन दिन रूक कर आगे बढ गये।

बल्गेरिया (BULGARIA) :-

'इस्ताम्बुल' से चलकर श्री सिंह 'बल्गेरिया' पहुँच गये। बल्गेरिया की राजधानी 'सोपिया' में पहुँच गय़े तथा वहाँ वे 3..—4 दिन रूक कर विभिन्न व्यक्तियों से मिले और अपना वीजा आदि बनवाकर आगे बढ़ गये।

यूगोस्लाविया (YOGOSLAVIA):-

श्री सिंह 'बल्गोरिया' के बाद यूगोस्लाविया की राजधानी 'वियोग्राड' पहुँच गये। वहाँ वे 3–4 दिन रूककर विभिन्न व्यक्तियों से मिले और अपना वीजा आदि बनवाकर आगे बढ़ गये।

आस्ट्रिया (AUSTRIA): –

श्री सिंह समस्त औपचारिकतायें पूर्ण कर आगे बढते थे। इसी क्रम में वे आस्ट्रिया पहुँच गये। वहाँ पर 3–4 दिन रूककर लोगों से बातचीत कीं।

जर्मनी (GERMANY): –

आस्ट्रिया से चलकर 'श्री सिंह जर्मनी में म्यूनिख मे रूके तथा फिर राजधानी 'बोन' **(BONN)** पहुँच गये।

हालैण्ड (HOLLAND): –

पं0 जर्मनी से चलकर श्री सिंह 'हालैण्ड' की ओर चले दिये तथा वहाँ के प्रसिद्व नगर 'डेम हाउस' पहुँच गये।

श्री सिंह के शब्दों में –

"आज 20–8–1973 का दिन है "डेनहोग" – हालैण्ड का एक सुन्दर नगर है। मैंने इस शहर में एक महीना व्यतीत किया। हालैण्ड का दूसरा शहर 'रोटरडम' अत्यन्त आधुनिक है तथा बन्दरगाह बहुत सुन्दर है। 'हालैण्ड की अर्धव्यवस्था दुग्ध एवं कृषि पर आधारित है तथा जनसंख्या 30 मिलियन है।"

बैल्जियम (BELGIUM):-

श्री सिंह हालैण्ड से बैल्जियम की ओर चल पडे। तीन–चार दिन उन्होनें बैल्जियम का भ्रमण किया तथा कापिनहेगन होते हुए स्वीडन पहुँच गये।

स्वीडन (SWEDON):-

10 सितम्बर, 1973 को श्री सिंह स्वीडन की राजधानी 'स्टोकहोम' पहुँचे तथा कुछ दिन रूककर वहाँ का भ्रमण किया।

फिनलैण्ड (FINLAND):-

13–9–1973 को श्री सिंह फिनलैण्ड पहुँच गये। वहाँ पर दो या तीन दिन भ्रमण किया और आगे बढ़ गये।

नार्वे (NARVE) :-

फिनलैण्ड से श्री सिंह नार्वे की राजधानी 'ओसलो' पहुँच गये। चूँकि परिस्थितियाँ प्रतिकूल थी इस लिये उन्होने वहाँ कुछ समय तक नौकरी की तथा पुनः भयंकर जाड़ा, बर्फ व बरसात के मौसम में आगे बढ़ गये। नदियों व झीलों का पानी बर्फ बनता जा रहा था तथा थर्मामीटर शून्य से बीस डिग्री सैल्सियस नीचे आ गया था।

उन्होंने कहा है कि –''नार्वे की राजधानी औसलो का भ्रमण करने के उपरान्त 28–12–1973 को नार्वे का बार्डर पार कर मैं पुनः स्वीडन आ गया।''

नोट– वर्ष 1973 में मैंने लक्ष्य से अधिक यात्रा पूर्ण कर ली तथा महसूस किया कि सुखों की अपेक्षा दुखों से ज्यादा शिक्षा मिलती है। हमें उच्च शिक्षा गम्भीर समस्याओं के निवारण हेतु प्रयोग में लानी चाहिये।

इस प्रकार हमने देखा कि श्री बी0 पी0 सिंह का अपने कार्य के प्रति आदर और निष्ठाभाव उनको आगे बढ़ाने में अत्यन्त कामयाब हुआ। कार्य के प्रति उनकी श्रद्धा उनकी ताकत बन गयी और वह एक नायक के रूप में आगे बढ़ता गया।

भाग -2
द्वितीय डायरी

स्वीडन से प० जर्मनी
Swedon to W. Germany

1-1-1974 से 31-12-1974 तक

1973 तक का सफर पूर्ण करने के बाद श्री सिंह का स्वागत वर्ष 1974 ने किया। श्री सिंह उसी गति व उत्साह से अपनी मंजिल की ओर बढ़ते चले गये।

वर्ष 1974 में उन्होंने क्या प्राप्त किया, यह इस भाग में पढ़ें।



एक नायक के रूप में

श्री वी0 पी0 सिंह ने चलते 2 वर्ष 1973 को पीछे छोड़ दिया तथा वर्ष 1974 में प्रवेश कर गये। दृढ़ इच्छा शक्ति का सहारा लेकर यह नोजवान अपनी साईकिल पर बढ़ता चला गया।

स्वीडन (SWEDON)—

नोट –1

वर्ष 1973 तक उन्होंने जिस हालत में दुनियाँ को देखा तो उनका मन व्यथित हो उठा। उन्हीं के शब्दों में –

"दुनिया भर का भ्रमण करने के उपरांत मै इस निचोड़ पर पहुँचा कि हम नकारात्मक विचारों के एक भयानक युग से गुजर रहे हैं। जहाँ 99% लोग आदर्शहीन जीवन व्यतीत कर रहे हैं। भूमण्डल पर बोझ है, तथा अंधकार में छलांगे लगा रहे हैं।"

बर्लिन - (BERLIN)—

नोट –2

श्री ब्रजपाल सिंह 5–2–1974 को बर्लिन पहुँच गये। वहीं अपने जीवन का आदर्श वाक्य प्रस्तुत किया–

मेरा आदर्श बहुत ही कम शब्दों में लिखा जा सकता है और वो है–

"भारत की पवित्र भूमि की सेवा करना बिना किसी उपहार के ।"

वे कहते है कि –

"भगवान के बारे में सोचो, भगवान के बारे में बात करो, अच्छे बनो, अच्छा काम करो, भगवान पर प्रवचन करो तथा उनकी मदद करो जो अच्छा करते हैं। अपनी आवश्कताओं को सीमित रखो, सामान्य रहकर उच्च सेवा की आदत डालो। यही ऋगवेद का कहना है।"

उन्होंने लिखा है कि –

गाँधी जी कहते हैं:– सच ही भगवान है।

टैगोर कहते हैं– सुन्दरता ही भगवान है।

किन्तु स्वामी विवेकानन्द कहते हैं – कि यदि तुम अपने आप पर भरोसा रखते हो तो तुम स्वयं ही अपने ब्रहमाण्ड हो, भगवान हो।

उन्होनें वेदों के बारें में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।–

"चारों वेदों का लक्ष्य मनुष्य के मन में भगवान के प्रति प्रेम उत्पन्न करना ही है।"

"अपने माता–पिता, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति पूरी क्षमता से श्रद्धावान होना ही पूजा है।"

नोट–3

वे "महाभारत" के शब्दों को इस प्रकार से कहते है कि–

"मृत्यु सभी के लिये एक समान है। चाहे वह बहादुर हो या कमजोर किन्तु एक क्षत्रिय का आदर्श कर्त्तव्य अपनी जाति और धर्म हेतु शत्रु पर विजय पाकर अपनी ख्याति को बनाये रखना है।"

वे लिखते है कि–

"हमें पुराने कपड़े को नये धागे से इस प्रकार सीलना है कि उसमें सारे सुराख बन्द होकर वह नया लगने लगे तथा समस्त भारतवासियों को उपयुक्त लगे।"

नोट–4

उन्होंने कहा –

"जो संग्राम में हजारों मनुष्यों को जीत ले उससे उत्तम संग्राम विजयी वह है जो एक अपने आप को जीत ले।"

गीता में लिखा है कि –

"किसी भी कार्य को बुद्धिमतापूर्ण वैज्ञानिक आधार पर करना ही कर्म है।"

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि –

"एक लम्बे युद्ध के बाद अन्त में विजय श्री प्रेम से ही मिलती है।"

अपनी यात्रा के दौरान भिन्न–2 स्थानो पर अलग प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में ब्रजपाल सिंह जी आते गये। उनका ज्ञान व आदर्श हर स्थान पर विकसित एवं परिपक होता गया उनका झुकाव सांसारिक मोह–माया से हटकर आध्यात्म की ओर हो गया। उन्होंने गीता, महाभारत, स्वामी विवेकानन्द तथा गाँधी जी के श्रेष्ठ सिद्धान्तों एवं आदर्शो को अपने जीवन में उतार लिया। कर्म को प्रधानता दी तथा साधारण से दिखने वाले शरीर में उच्च कोटि की आत्मा का वास हो गया। वे जिन–2 देशों से होकर गुजरे लोग उनकी भाषा शैली व आदर्शो के कायल होते चले गये।

अब तक ब्रजपाल सिंह इतना आगे बढ़ गये थे कि उनके मन में अपने लिये ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र (हिन्दुस्तान) के कल्याण व विश्वस्तर पर राष्ट्रों में मैत्रीभाव की भावना ने घर कर लिया था। सम्पूर्ण विश्व में भाईचारा, प्रेम व एकता का सूत्र स्थापित करना उनकी साइकिल यात्रा – "एराऊण्ड द वर्ल्ड" (Around the World) का उददे्श्य बन गया था। **"यह नौजवान छात्र – ब्रजपाल सिंह प्यार व एकता के मोतियों की माला सारे विश्व को पहनाने अपनी साईकिल से आगे बढ़ता गया।"**

ब्रजपाल सिंह ने लिखा है कि –

"विश्व का कोई भी अध्ययन इतना लाभदायक व सुन्दर नहीं हो सकता जितना कि उपनिषदों से लिया गया ज्ञान। इनसे मेरे जीवन में

शांति का संचार हुआ है और मैं जानता हूँ कि ये मुझे मृत्युपरांत ही शांति प्रदान करेंगे।''

उनकी महाभारत के प्रति अपार श्रद्धा इस बात से झलकती है। उन्होंने श्री कृष्ण के ''गीता'' के नौवे अध्याय में बोले गये कथन को इस प्रकार लिखा है कि –

''यदि कोई अतिशय दुराचारी भी मेरा भक्त होकर अनन्य भाव से मुझको भजता है तो उसे साधु ही मानना चाहिये क्योकि वह यथार्थ निश्चय वाला है अर्थात् उसने भली भाँति निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कोई वस्तु नहीं है। ऐसा व्यक्ति शीध्र ही धर्मात्मा हो जाता है और शाश्वत आनन्द और शान्ति को प्राप्त होता है।

हे अर्जुन ! तुम स्पष्ट जान लो कि मेरी भक्ति कभी नष्ट नहीं होती।''

नोट–7

उन्होंने 1 जनवरी 1974 में स्वीडन में अपने प्रवास के दौरान 'चरित्र निर्माण' के बारे में इस प्रकार कहा –

''सहस्त्रों बाधाओं का भेदन करने के उपरान्त एक शकितशाली चरित्र का निर्माण होता है। मानव स्वयं में एक गम्भीर रहस्य है अर्थात् अपने आप में एक आश्चर्यजनक खोज।''

नोट –8

1 जनवरी 1974 को ब्रजपाल सिह स्वीडन के एक प्रतिष्ठित परिवार के साथ सुबह के समय चर्च गये तथा 2 जनवरी को वहाँ से विदाली व एक अन्य परिवार के साथ रूके। 3 जनवरी 1974 को 12 बजे

दोपहार में साईकिल द्वारा स्वीडन के एक प्रसिद्व शहर गोटीबोर्गस पहुँचे तथा पहले पुलिस स्टेशन जाकर प्रमाण पत्र लिया।

4 जनवरी 1974 को उन्होंने एक भारतीय लड़का जो मैसूर का रहने वाला था व जिसका नाम अनूप था, के साथ जाकर विश्राम किया। अनूप के शब्दों में –

"श्री ब्रजपाल सिंह ने साईकिल से संसार भ्रमण के दौरान शुक्रवार को मेरे साथ शाम गुजारी। वह शाम हमारे लिये बड़ी सुखद रही।"

प्रेस (Press)—

अगले दिन 5 जनवरी 1974 को स्वीडन के एक प्रसिद्व समाचार पत्र ने उनकी यात्रा का एक विस्त्रित लेख प्रकाशित किया।

6 जनवरी 1974 को मैं श्रीलंका के एक व्यापारी से मिला तथा रात्रि विश्राम हम दोनों ने एक साथ किया।

(स्वीडन से – ब्रजपाल सिंह)

डेनमार्क (DENMARK)—

7 जनवरी 1974 को स्वीडन से चलकर मैं डेनमार्क पहुँच गया तथा 8 जनवरी 1974 को मैनें डेनमार्क के हाई स्कूल का दौरा किया तथा छात्रों को अपनी विश्वयात्रा के विषय में बताया।

यात्रा के बीच 2 में उन्होंने अपने अनुभव भी अपनी डायरी में लिखे और साथ ही आध्यात्मिक बातें भी स्पष्ट की–

"आशा ही परम दुख हैं तथा निराशा ही परम सुख है।"

अर्थात् अन्धकार की अवस्था में आशा की एक किरण होती है। तथा प्रकाशमई अवस्था में भी निराशा की एक स्पष्ट झलक दिखायी देती

है। अतः हमे अपनी यात्रा को निराशावादी बिन्दु से प्रारम्भ करना चाहिये क्यों कि स्वर्ग का रास्ता भी नर्क से होकर जाता है।

नोट –9

स्वामी विवेकानन्द के शब्द कितने सच हैं –

"कि संसार का इतिहास कुछ ही व्यक्तियों के आत्मविश्वास का इतिहास है तथा इस परम विश्वास को ही दैवीय चमत्कार और आशीर्वाद कहते हैं।"

उन्होंने लिखा है कि –

"सारथी द्वारा दमन किये गये अश्व के समान जिनकी इच्छाएं शान्त हो गई हों, उस महान पुरूष की तो देवता भी चाह करते हैं।"

वे महाभारत के कथन से वे बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कहा है कि–

"हमें मालूम है कि धर्म क्या है परन्तु उसके करीब नहीं जाते हैं और हमें यह भी मालूम है कि अधर्म क्या है किन्तु हम उससे दूर नहीं रह सकते हैं।"

एडवर्ग (ADVERG)—

प्रेस (Press)— 10 जनवरी 1974 को डेनमार्क के प्रसिद्व शहर एडवर्ग में श्री ब्रजपाल सिंह का साक्षात्कार हुआ तथा समाचार पत्रों व अखबारों में उनकी चर्चा हुई। उनमें से एक प्रैस फोटोग्राफर ने भारत की यात्रा कर रखी थी।

नोट –10

"आलसी और अनुपयोगी के 100 वर्ष के जीवन से एक कर्मचारी का एक दिन का जीवन श्रेष्ठतर होता है।"

श्री ब्रजपाल सिंह डेनमार्क का एक रोचक किस्सा सुनाते हैं कि–

"12–1–1974 का दिन था, डेनमार्क में रेण्डर नगर के मेयर श्री पी0 पौंड पौलसीन को समाचार पत्रों द्वारा श्री ब्रजपाल सिंह का पता चला। वह उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अखबार के दफ्तर को फोन करके उनके बारे में जानकारी चाही और फिर स्वयं ही कार लेकर श्री ब्रजपाल सिंह को ढूंढने चल दिये। काफी देर बाद श्री ब्रजपाल सिह उनको मिले। वह उन्हें अपने घर ले गये तथा शाही ढंग से उनका सम्मान किया। ये मेयर साहब यू॰ एन॰ ओ॰ में भी रह चुके हैं, तथा भारत और पाकिस्तान के बार्डर पर दो वर्ष रहे हैं। ये भारत से काफी प्रभावित हैं।"

मेयर साहब के शब्दों में –

"We are very pleased having you our guest. Thankyou for the fine meal you made. Have a good bye back to India"

हैमलेट ग्रेव –(HAMLET GRAVE)

उसके बाद दिंनाक 14–1–1974 को ब्रजपाल सिंह '–हैमलेट ग्रेव" देखने चले गये। इसी के ऊपर शैक्सपीयर (Shakespeare) का महान नाटक 'HAMLET' भी लिखा गया है। हैमलेट डेनमार्क का राजा था।

नोट –11

उनके कार्यो व गतिविधियों से डेनमार्क का शिक्षित वर्ग काफी प्रभावित लगा। उन्होंने उनके सम्मान में समाचार पत्रों मे चित्र सहित काफी छापा।

एक पत्रकार के शब्द –

Dear Brij Pal Singh,

We shall meet sometimes, somewhere again. My wife and my daughter have an urged to have you our guest for a night. We want you a good time.

Yours
Hagen H.Christensen (Journalist)
Greena, (Denmark)

ग्रीना (GREENA)—

दिंनाक 15–1–1974 को श्री ब्रजपाल सिंह डेनमार्क के प्रसिद्ध शहर ग्रीना में पहुँचे तथा अखबार ने उनके फोटों के साथ सम्पूर्ण यात्रा का ब्यौरा दिया तथा 16–1–1974 को हीलोर्ड नगर पहुँच गये।

कापेनहेगन (COPENHEGAN)—

उसके बाद 17–1–1974 को डेनमार्क की राजधानी **Copenhegan** (कापेनहैगन) पहुँच गये तथा वहाँ भारतीय दूतावास पहुँच कर मि. गुप्ता से मुलाकात की और उन्हें अपनी विश्वयात्रा के सम्बन्ध में बताया। वहाँ के अन्तर्राष्ट्रीय अखबार **'POLITIKEN'** ने उनकी यात्रा का वर्णन 19–1–1974 को चित्र सहित किया। उन्होंने वहाँ किंग्सपार्क, किंग पैलेस आदि देखा। वहाँ के **Sports** विशेषांक में भी उनकी खबर निकली।
कोपेनहेगेन में श्री ब्रजपाल सिंह सरदार शमशेरा सिंह के यहाँ 4 दिन रूके। तत्पश्चात् 23 जनवरी 1974 को भारतीय दूतावास जाकर वहाँ भारत की राजदूत से मिले। वे केरल प्रदेश की रहने वाली थीं।

25 जनवरी 1974 दिन शुक्रवार 4:30 पर वे 'गैडसर' बन्दरगाह पहुँचे तथा पुलिस का आटोग्राफ लिया।

प0 जर्मनी (W. GERMANY)—

इसी क्रम में ब्रजपाल सिंह आगे बढ़ते चले गये। तथा 28 जनवरी को जर्मनी पहुंच गये तथा वहाँ के प्रसिद्ध नगर (लू बैंक) के लुबैकर समाचार पत्र में उनका समाचार प्रकाशित हुआ।

पश्चिमी जर्मनी में कहे गये उनके शब्द–

"निरोग **होना परमलाभ है, सन्तोष परमधन है, विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है** तथा **निर्वाण सबसे बड़ा सुख है"**

टिप्पणी – कार्ल फ्रेजा के श्री सिंह के लिये स्नेहिल शब्द–

"We wish you good luck and a good journey"

पश्चिमी बर्लिन (W. BERLIN)—

उनके घूमने का क्रम आगे बढ़ता चला गया तथा 30 जनवरी 1974 को वह ईस्ट जर्मनी को पार करते हुये पश्चिमी बर्लिन पहँच गये तथा पुलिस वालों के यहाँ रात्रि विश्राम किया।

टिप्पणी –

बर्लिन में भारत के अधिकारी ने उनके सम्मान में इस प्रकार कहा–

"It is nice to see enterprising young man from India, Sh. Brij Pal Singh, taking round the world on cycle. We wish good. He will uphold the dignity of this country wherever he goes.

By -

31-1-1974

Sh. S. Sharma

Consular Agent

Consualate General of India, Berlin

नोट–12

बर्लिन में उनके शब्द –

"यदि साथ विचरण करने वाला अनुकूल पण्डित मित्र मिल जाये, तो सभी विघ्नों को दूर कर उसके साथ स्मृति ज्ञान प्रसन्न होकर विहार करें।"

प्रेस –

बर्लिन के **बी.जेड.** अखबार में **1** फरवरी **व 4** फरवरी 1974 को श्री ब्रजपाल सिंह की साईकिल यात्रा का वर्णन छापा गया। वे अपना बर्लिन में एक रेस्तोंरेन्ट का अनुभव लिखते है। कि –

"बर्लिन के एक रेस्टोरेन्ट में शराब पीते हुये एक नौजवान ने बड़े करूणाजनक शब्दो में पुकारा– "ओ हिटलर, एक बार फिर आना, पुकार रही है जर्मन भूमि।"

नोट –13

उन्होंने आगे लिखा है कि

"यदि साथ विचरण करने वाला अनूकुल पण्डित मित्र न मिले तो राजा की भांति पराजित राष्ट्र को छोड़कर हस्तिराज के समाज अकेला विचरण करे।"

नोट –14

श्री ब्रजपाल जी ने अपने अनुभव में एक विचित्र कड़ी जोड़ी जो कि काफी हास्यप्रद भी है और हमें सोचने पर मजबूर भी करती है जो कि बर्लिन की वृद्ध महिलाओं के बारे में है। बर्लिन की एक आम कहावत है कि अगर आप एक बुढ़िया को मार दें तो आपको उस बुढ़िया की पेंशन में से पैसे मिलेंगे।

उन्हें शुभकामनाएँ देने वालों में अपने देश के और विदेश के सभी जागरूक लोग शामिल थे–

श्री अजीत गुप्ता जो कि बर्लिन में रहते हैं। लिखते हैं कि–

"Glad to meet you and all the best wishes for the future.

होरा सिनन होरो जो कि बर्लिन के हैं। इसी कड़ी में शामिल हैं–वे लिखते हैं कि –

"I was glad to receive Mr. Singh at my place. I wish him a good, journey and all the best for the future."

Hora Senon Horo

1, Berlion

बर्लिन से फ्रारू बैगनर उनके बारे में लिखते हैं कि –

'यदि मेरे दरवाजे से आज हिटलर निकला होता तो उसे देखकर में जितना खुश होता उतना ही आपको यहाँ देखकर और पाकर हो रहा हूँ।'

ओलम्पिक स्टेडियम (OLYMPIC STADIUM)—

11 फरवरी को बर्लिन में ही श्री सिंह ने स्टेडियम देखा जहाँ 1936 में ओलम्पिक खेल हुए थे तथा West और East Berlin के बीच की दीवारें भी देखी। चर्च व अन्य टूटी हुई इमारतों के खण्डहर भी देखे।

West Berlin में 'घूमते हुए ही उन्होंने अपने देश के प्रति अपने प्यार को दर्शाया है। उन्होंने लिखा है कि–

"India lives in her ten lakh of villages. I would like to go and settle down in one of such villages that is real India, my India."

नोट –15

बर्लिन प्रवास के दौरान उन्होंने वेद के एक पैसेज का वर्णन किया कि–

"ये आत्मा और ये सच्चाई कभी भी एक कमजोर हृदय वाले व्यक्ति के द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती। ये कमजोर के लिए नहीं है। कमजोर हृदय वाले के लिए नहीं है तथा कमजोर शरीर वाले के लिए नहीं है। इस प्रकार के व्यक्ति इसे कभी नहीं पा सकते।"

नोट –16

स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव उन पर झलकता है। जब वे लिखते हैं कि–

"सच्चाई, पवित्रता और निःस्वार्थ भाव से युक्त एक मनुष्य भी समस्त विश्व के विरोध का सामना कर सकता है।"

Sh. T.K. Alphonse उनके बारे में लिखते हैं कि–

Mr. Pal, I wish you all the best in your world tour on cycle.

श्री ब्रजपाल सिंह को सभी वर्गों द्वारा समर्थन मिलता गया। जब वे बर्लिन में थे तो फारूक नामक एक व्यक्ति ने उनके बारे में अपने बंगला देश वाले मित्र युसुफ से उनके स्वागत हेतु अपील की। फारूक भाई लिखते हैं कि–

Dear Yusuf,

I met this world trevelor in Hemburg. It is pleasure to meet such an important man. I would be very pleased if you take good care of him. All the best wishes-

Faruk

Hemburg

नोट –17

ब्रजपाल सिंह ने गुरू और शिष्य की परम्परा पर इस प्रकार प्रकाश डाला है–

"दो हृदयों का मिलन ही श्रद्धा है। जहाँ शिष्य अपने आपको गुरू को समर्पित कर देता है वहाँ उसे गुरू योग्य मार्ग का दर्शन भी कराता है।"

बर्लिन के बारे में उन्होंने लिखा है कि–

"Berlin is one of the interesting city in my whole travel. Berlin was the capital of Hitler and fortune of the world, and unfortunate of Germany and few."

Berlin is a historical city and head of two ideology. East is the teacher of Communism and west is the teacher of capitalism.

नोट –18

ब्रजपाल सिंह की दार्शनिक विचारधारा का उदाहरण इस प्रकार है–

"यदि तुम्हारे हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है तो तुम अपने हाथों में फूल खिलने की आशा कैसे कर सकते हो। अगर मनुष्य मात्र को कुछ करना है तो सर्वप्रथम अपने हृदय को सुन्दर करना होगा।"

ये वर्णन 24–2–1974 का है। ब्रजपाल सिंह, टौम अगस्तन (Tom Agoston) जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार है, के मकान पर पहुँचे। टौम साहिब ने उनसे कहा कि साईकिल में ताला अच्छी तरह से लगा देना। चोरों का साम्राज्य संसार में हर जगह है। तत्पश्चात् टौम साहिब ने 4

घण्टे तक उनका इण्टरव्यू "विश्व यात्रा" के सम्बन्ध में लिया। टौम ने "कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय लन्दन" से M.A. Economics पास किया था।

हैमबर्ग- (HEMBURG)

हैमबर्ग में श्री बनर्जी (काउन्सल जनरल) की शुभकामनाएँ इस प्रकार रहीं–

"I wish you fulfilment of your mission."

नोट –19

श्री ब्रजपाल सिंह की उदार विचारधारा इस बात से प्रकट होती है जैसा कि उन्होंने लिखा है–

"हे परमात्मा ! मेरा कोई शत्रु नहीं है पर यदि कोई मेरा शत्रु है तो फिर उसकी शक्ति मुझसे अधिक हो, अगर अधिक नहीं तो कम से कम मुझ जितनी अवश्य हो ताकि इस धर्मयुद्ध में सत्य की विजय हो।"

Note - बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों से ज्यादा नहीं कहलवाता। वह तो जरा से इशारे से ही समझ लेता है। जैसे–

"अच्छे घोड़े कोड़े की छाया से ही गाते पकड़ लेते हैं।"

(गौतम बुद्ध)

हेमबर्ग (जर्मनी) से दीपक शर्मा लिखते हैं कि–

"Most energetic man, I have ever met, but being a man from Indian village, little case to think before saying and act with the peopal in foreign countries, is to be taken. My best wishes are with you."

नोट –20

ब्रजपाल सिंह मनुस्मृति का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं–

"हर किस्म की पवित्रता से धन की पवित्रता जरूरी है। जो धन को कमाने और खर्च करने में पवित्र है। उसी को पवित्र कहना चाहिये। पानी और साबुन से की गई पवित्रता केवल बहार की पवित्रता है।

नोट –21

श्रीस्वामी रामतीर्थ के दोहे से भी वे प्रभावित हुये जो इस प्रकार है–

''न हर भूलो, न जग छोडो, कर्मकर जिदंगी में रहो, दुनिया में यूं जैसे, कमल रहता है पानी में''

ब्रजपाल सिंह जर्मन वासियों की कार्य पद्धति से बहुत प्रभावित थे। उन्होनें लिखा है कि –

"आज दिनांक 9 मार्च 1974 को मैंने "Hannover" की Visit की।

पूरे यूरोप का भ्रमण करने के उपरांत मैं इस सीमा पर पहुँचा कि जर्मनी से अधिक परिश्रमी लोग पूरे यूरोप में नहीं है। यहाँ की औरतें तो अधिक ही मेहनती हैं।

''10 मार्च 1974 को "Hannovor" के City Hall" का म्यूजियम देखा और "Hannovor 1939 -1945 देखा।''

नोट –22

श्री सिंह ने छात्र–छात्राओं की गतिविधियों का भी बारीकी से अध्ययन किया। Osterode restaurant में वे छात्र–छात्राओं के एक समूह से मिले तथा कुछ समय उनके साथ रहे। वे उन सभी का खान–पान, बात–चीत व व्यवहार कुशलता देखना चाहते थे कि गुरू व शिष्य की परम्परा का निर्वाह ये कैसे करते हैं।

जब श्री ब्रजपाल सिंह प० जर्मनी में अपनी साईकिल यात्रा पर थे, तब उनकी मुलाकात एक सैन्य अधिकारी लै० कर्नल श्री कबूल सिंह जी से हुई। श्री कबूल सिंह जी 1972 में सेना से सेवानिवृत होकर यूरोपियन देशों के भ्रमण पर थे।

उनकी मुलाकात श्री सिंह से वैस्ट जर्मनी में हुई। कर्नल साहिब माडल टाऊन, जलन्धर (भारत) के रहने वाले थे। उन्होंने श्री सिंह की साईकिल यात्रा के बारे में लिखा है कि –

"I came on European Tour in 1972 and while touring European Countries I met young Indian cyclist, tourist at Frankfurt, West Germany. I am glad to see him in high spitrits and with good determination to tour on till he visits all Countries of the World. He seems well versed, and a good mannered youth. I wish him good health and Success in his mssion. Welldone."

फरीदकोट पंजाब (भारत) के रहने वाले श्री भागसिंह गिल की मुलाकात श्री ब्रजपाल सिंह से फ्रैंकफर्ट में हुई। श्री गिल उनसे बहुत प्रभावित हुये और उनके बारे में लिखा कि –

"I met B.P. Singh, The world tourist on cycle in Frankfort in West Germany. He is a man of high will power and strong determination. A very few man of this nature are found on the world Tour. I appreciate his mission and wish him success.

श्री सिंह ने उस समय की स्थिति पर प्रकाश डाला है कि यूरोप देशों में जो भारतीय लोग हैं वे अधिकांशतः टूरिस्ट ऐजेन्ट्स लोगों के शिकार हैं तथा यूरोप में उनकी स्थिति अच्छी नहीं है।

नोट –23

श्री ब्रजपाल सिंह ने लिखा है कि –

"You can not believe in God until you believe in yourself."

"आप उस समय तक भगवान पर भरोसा नही कर सकते जब तक कि आपको स्वयं पर भरोसा न हो।'

दिंनाक 7–4–1974 को श्री ब्रजपाल सिंह कर्नल कबूल सिंह जी के साथ फ्रैंकफर्ट (प० जर्मनी) में चिड़िया घर देखने गये तथा उनकी संगत का आनन्द उठाया।

जर्मन घूमने पर ब्रजपाल सिंह को यह अनुभव हुआ कि युद्व हारने के बाद जर्मन ने अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया किन्तु उसका नैतिक स्तर गिर गया। वे वर्लिन विश्वविद्यालय का अपना अनुभव लिखते हैं कि–

''जब में बर्लिन विश्वविद्यालय पहुँचा तो हैरान हो गया। एक तरफ से लड़के और लड़कियाँ 'हिप्पी' बने शराब तथा चरस पिये घूम रहे थे। जिस राष्ट्र ने महान कवि गोटे और महान दार्शनिक मैक्स मूलर जैसों को जन्म दिया हो तो आज वहाँ के विश्वविद्यालयों के ये हाल।'

नोट – 24

ब्रजपाल सिंह जर्मनवासियों की लगन से प्रभावित थे। वे लिखते हैं कि जर्मनवासियों की कहावत है–

"हम जिस खेल प्रतियोगिता का अपने देश में आयोजन करते हैं। उसी खेल में खो जाते हैं। खेल के प्रति यही हमारा समर्पण है।'

जर्मनी में उनके कार्यो की अत्यधिक सराहना की गई। उनके प्रशंसकों ने उनका मनोबल बढ़ाने हेतु उन्हें अपनी बधाईयाँ प्रस्तुत की तथा उनकी सफलता हेतु प्रभु से कामना की।

टिप्पणी –

जर्मनी में 'CONSULATE GENERAL OF INDIA' GERMANY की ओर से उन्हें शुभकामनाएं दी गई –

We are glad to meet Sh. B.P. Singh at our Office. We wish him good luck on life long journey back to India.

टिप्पणी –

ब्रजपाल सिंह ने जर्मनी के "HOTEL GOSTHOF, Z. LOMM-SCHOMBERG' में एक रात गुजारी। Hotel का मालिक लिखता हैं कि–

" He has stayed for one night in this hotel and the owner of the hotel wished to you much fun and the best wishes for the future."

स्विट्जरलैण्ड– (SWITZERLAND)

बृहस्पतिवार का दिन था। श्री ब्रजपाल सिंह जर्मनी से चलकर 25 April 1974 को स्विट्जरलैण्ड आ गये।

प्रेस – 28 April 1974 दिन रविवार को 'Blick Zurich Swiss' समाचार पत्र में उनके "Around the World" के बारें में समाचार छापा गया।

इतने देश धूमने के बाद श्री सिंह ने बच्चों के बारे में अपना अनुभव लिखा है कि –

"बच्चे समस्त संसार मे एक ही जैसे है।"

टिप्पणी –

स्विट्जरलैण्ड में घूमते हुए उनकी मुलाकात श्री सिराज एफ लक्कडवाला से हुई वे श्री सिह से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने लिखा है कि –

"I never met any body from my Country so daring, enthusiastic and full of will Power who can make round the world trip on Bicycle with less requirements. I found him one of the best - example for travellers. I congratulate every success in his life.

नोट – 25

स्विटजरलैण्ड के बारे में उनके विचार इस प्रकार थे–

"स्विटरलैण्ड एक छोटा सा, सुन्दर सा राष्ट्र है जिसमें कहीं पर्वत है तो कही झील है तो कहीं समतल पर लहराती फसलें भी है। जनेवा, ज्यूरिक और बार्न उसके मुख्य नगर है। यह घड़ियों का देश है और शांति का पुजारी।'

स्विटरलैण्ड में उन्होंने ब्रच्चों को देखकर अनुभव किया कि भगवान बच्चों के सबसे निकट होता है। बड़ों में वो भोलापन और सरलता नहीं मिलती है जो बच्चों में होती है। उन्होंने कितना सुन्दर लिखा है कि –

"Children runout of the temple and play in the dust, God watches their games and forgets the priest-"

बच्चे मन्दिर के बाहर धूल में खेलते रहते है तथा भगवान पुजारी को भूलकर बच्चों का खेल देखते रहते हैं।'

नोट – 26

स्विट्जरलैण्ड में अपने प्रवास के दौरान 5–5–1974 को उन्होंने लिखा है कि –

"मेरी इच्छा प्रकृति से ज्ञान प्राप्त कर दूसरों की मदद करने की है।"

नोट – 27

बर्न- (BARN)

श्री ब्रजपाल सिंह ने 6–5–1974 को बर्न शहर (Bern) में लिखा है कि –

I start my journey with 8 U.S. Dollar and unexpectant heart in the month of May 1973 for around the world by dead Iron (by cycle)"

"My journey is long and grievous. It is not the journey of a day and the way is full of the most deadly thorns."

"My master Swami Vivekanand says- "No good thing can be done without abstruction. Have Conquer in the long run."

नोट – 28,

A- दिनांक 7th May 1974 को श्री ब्रजपाल सिंह स्विटजरलैण्ड की राजधानी बर्न में थे तथा वहाँ के प्रसिद्व अखबार "BERNER TAGBLETS" में उनकी यात्रा का वर्णन निकाला गया।

B - उन्होंने 10–5–1974 दिन शुक्रवार को उपनिषद की पंक्तियाँ इस प्रकार लिखीं–

"हे प्रभु, मुझे अवास्विकता से वास्तविकता की ओर ले चलो, तथा मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।"

C - उन्होंने ऋगवेद से प्रभु का वर्णन इस प्रकार से किया–

"हम भगवान को पुकारने हेतु विभिन्न नामों का प्रयोग करते है किन्तु उन सब की शक्तियाँ एक है और एक समान है। हम हर रास्ते से प्रभु की शरण में जा सकते हैं।"

नोट – 29

उन्होंने अपने **Swiss** प्रवास के दौरान आगे लिखा है कि–

"यदि एक शक्ति प्रभु को अपने हृदय के मन्दिर में देख पाने में समर्थ है तो वह प्रभु को काशी और मथुरा में भी देख पाने में समर्थ हो सकेगा।

उन्होंने कहा है कि–

"India is a diamond of Spiritual Knowledge and Treasury of all religions.

नोट – 30

उन्होंने भगवान बुद्ध का कथन इस प्रकार से वर्णित किया है कि–

"Greater than the sacrifice of animals is sacrifice of the self."

"अपनी कुर्बानी देना किसी पशु की कुर्बानी देने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।"

उन्होंने महाभारत के कथन को इस प्रकार से लिखा है कि–

"I know the right but I do not wish to engage in it, I know the wrong but I do not wish to refrain from it-"

"मैं जानता हूँ कि सच क्या है किन्तु मैं उसे अपनाना नहीं चाहता और मैं जानता हूँ कि गलत क्या है, किन्तु मैं उसे छोड़ना नहीं चाहता"।

उन्होंने संस्कृत की एक कविता जो कि एक सन्त द्वारा कही गई, को इस प्रकार लिखा है कि –

"Why weepest Thou, my friend ? There is no weepest Thou ? There is no fear, nor death for thee. Why weepest thou? There is no misery for you for the art like the nature. Clouds of all Colours come before it, play for a moment, pass away, it is the same sky, thou haste only to drive away the clouds."

उन्होंने लिखा है कि–

"वेदान्त में संघर्ष (जीवन में) करते रहने के लिये तो स्थान है किन्तु भय के लिये बिल्कुल नहीं।

विशेष –

स्विट्जरलैण्ड में 23–5–1974 दिन बृहस्पतिवार को उन्होंने लिखा है कि–

"स्वामी जी की अनुकम्पा से आज मेरी "यात्रा" का एक वर्ष पूरा हो गया है और नव वर्ष का प्रारम्भ हो गया है। परमात्मा की कृपा से इस वर्ष का भी एक–एक दिन नव जीवन लेकर आयेगा, ऐसा मेरा विश्वास है और मेरे विश्वास को कभी धक्का नहीं लगा है।

"Non Killing is the highest virtue."

विशेष –

श्री ब्रजपाल सिंह ने 24–5–1974 दिन शुक्रवार को अपनी यात्रा के विषय में इस प्रकार लिखा –

"आज 24-5-1974 को मेरी विश्वयात्रा का दूसरा वर्ष प्रारम्भ होता है। भगवान मुझे महाशक्ति दे, ताकि मैं अपने लक्ष्य पर पहुँच सकूँ।'

विशेष –

उन्होंने पुनः अपनी यात्रा के बारे मे लिखा हैं कि –

"मेरी अविराम 'यात्रा' का उद्देश्य – मानवीय परिवर्तन है, उच्च ज्ञान के द्वारा।'

उन्होंने आगे लिखा है कि –

"According to our philosophers, freedom is the goal, knowledge can not be the goal, because knowledge is a Compound."

"The ultimate goal of all mankind, the aim and end of all religions, is but one reunion with God."

स्विटजरलैण्ड में अपनी साईकिल यात्रा के दौरान उन्हें एक नवयुवती मिली जो बातचीत से बहुत योग्य प्रतीत हुई। उन्होंने उससे पूंछा–

"कि तुम अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण में एक अनभिज्ञ मानव को कैसे आकर्षित कर लेती हो"

उसने उत्तर दिया–

"हम उनसे उपहार रहित प्रेम करते है और उपाय वो आकर स्वयं बता देते हैं।"

उन्होंने लिखा है कि –

"All the ideas and the different branches of knowledge have their roots in India."

नोट – 31

उन्होनें सृष्टि के वर्णन के बारे में ऋग्वेद के कथन को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि –

"जब सत भी नही था, असत भी नहीं था, तम के द्वारा तम धिरा था। तब क्या था इसका उत्तर दिया गया है कि तब वह निस्पद अवस्था में था, इस आशा से कि सत्ता तब भी थी किन्तु उसमें कोई गीत नहीं था, बिना स्पन्दन के अस्तित्ववान था।"

विशेष –

सौरभसंहिता के कथन को उन्होंने इस प्रकार लिखा–

"जिन्हें ज्ञान मिल जाता है, वे जानते है कि मानवीय सुख वस्तुतः दुख है और फिर व्याख्या करते हैं कि यह सुख जो आसानी से प्राप्त विषयों में कामनाओं की पूर्ति में, सफलताओं से मिलता है, वस्तुतः वही दुख है। वह एक प्रकार की आन्तरिक मौत है। एक प्रकार का अंत नैतिक अपच है।"

उनका **R.N. Tagore** से लिया गया ये कथन कितना हृदयस्पर्शी है–

One morning in the flower garden, a blind girl came to offer me a flower chain in the cover of lotus leaf. I put it round my neck, and tears came to my eyes. I kissed her and said, "You are blind as the flowers are. You yourself know not how beautiful is your gift."

स्विटजरलैण्ड के बारे में उनके विचार इस प्रकार रहे–

"Switzerland is the land of beauty and love. It is the land of bank of banks. It is the land under U.S. influence. It is the land of Snow and mountains. It is the land of German, French and Italian."

नोट – 32

वे लिखते है कि 'महाभारत के प्रणेता वेदव्यास ने राजधर्म को सब धर्मो का अंतर्भाव माना है–

''जैसे हाथी के पांव में सबका पांव है। वैसे ही राजधर्म में सब धर्मो की उपस्थिति है।''

नोट – 33

उन्होंने लिखा है कि 'कुरान शरीफ' में सभी सन्देशों व तर्को को दूर करने वाली एक नेक सलाह सभी को दी गई है कि –

''याद रखो, तुम्हें बदले में वही मिलेगा, जो तुमने लिया है या जो तुमने दिया है।''

उन्होनें इस संसार के बारे में अपने विचार 24–6–1974 को इस प्रकार व्यक्त किये है।

''सारा संसार ही कुम्हार के चक्र की तरह से धूम रहा है। मानवता अपना साम्राज्य छोड़ कर जंगलों में जा छुपी है। मुठठी भर लोग है जो इस संसार में कार्य कर रहे है।''

टिप्पणी –

बर्न (स्विट्जरलैण्ड) में श्री ब्रजपाल सिंह की मुलाकात टाईफैनसपिटल के निदेशक एवं उनकी धर्मपत्नी उसूला से हुई। श्री सिंह के बारे में उन्होंने अपने विचार इस प्रकार से व्यक्त किये।

"We were very happy to have B.P. Singh in our hospital where he worked in the garden. We appreciated him about his modest behaviour and his interesting way of life. Good luck for the future.

Usuala Mamie
Tiefenauspital

विशेष--

बर्न में श्री सिंह की मुलाकात श्री रनबीर सिंह से हुई जो मूल रूप से हसनगढ़–रोहतक (हरियाणा) भारत के रहने वाले है। श्री रनबीर सिंह

उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए तथा अपने कथन में उन्हें "सिंह" की उपाधि देकर सम्मानित किया।

उन्हीं के शब्दों में –

"When see your braveness and Courage for such a high goal, every body can say with trust that you are not only Singh by name but you are actually a "SINGH" buck up, my dear Sathi, Now you are near the goal. I pray my GOD to bless you more and more power and courage, happiness, peace and strength to reach at the Peak of success. I am always with you for greeting and to wish you all the best.

जब श्री सिंह 'बर्न' में भ्रमण कर रहे थे तो उनको Ion तथा Libby Gilford नामक आस्ट्रेलिया के पर्यटक मिले। वे श्री सिंह की साईकिल यात्रा व उनके उद्देश्य से बड़े प्रभावित हुए तथा उन्हें आस्ट्रेलिया अपने घर आने का निमन्त्रण दिया।

जेनेवा– (GENEVA)

जेनेवा में भ्रमण के दौरान वहाँ के समाचार पत्र– "TRIBUNE" DE GENEVA ने उनकी यात्रा का एक विचित्र ब्यौरा पेश किया तथा उनके सम्मान में वहाँ के पत्र संचालक ने इस प्रकार से लिखा–

"I hope you will find a nice world."

(मुझे आशा है कि आपको एक सुन्दर संसार अवश्य मिलेगा।)

श्री सिंह ने स्विटजरलैण्ड की अर्थ व्यवस्था के बारे में इस प्रकार से लिखा है कि –

"जहाँ तक स्विटजरलैण्ड की अर्थव्यवस्था का सम्बन्ध है। वह कैष्टव की आर्थिक स्थिति के अनुसार "अति उपयोग" की अवस्था में आता है। प्रतिव्यक्ति आय – 2000 **FR.** है।"

उनकी यात्रा में सभी तरह के पड़ाव आते चले गये। यात्रा कभी सामान्य तो कभी अति कठिन होती रही। Swiss यात्रा के दौरान श्री सिंह ने एक जगह लिखा है कि–

"आज की यात्रा अत्यन्त कठिन रही। 8000 फीट ऊँचे बर्नेड के पर्वतों को पार करना पड़ा।"

इटली– (ITALY)

अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते हुये वे 15–7–1974 को 'इटली' पहुँच गये तथा 16–7–1974 को वहाँ के प्रसिद्व समाचार पत्र ने 'STAMPA' TORINO' ने उनके बारें में विस्तार से समाचार प्रकाशित किया।

टिप्पणी –

अपने भ्रमण के दौरान उनकी मुलाकात पुरूगिया इन्सटीट्यूट के डा० गिल से हुई। वे मूल रूप से जलन्धर पंजाब के रहने वाले थे। डा0 गिल उनकी साईकिल यात्रा से बड़े प्रभावित हुये तथा उन्होंने अपने कथन में उनके बारे मे इस प्रकार लिखा है कि –

"It was a thrilling occasion when I met young enthusiastic Mr. B.P. Singh in Italy making an interesting tour around the world and glorifying the nation."

With best wishes-

Mr. J.S. Gill
Institute of chemica
University di Perugia (ITALY)

नोट – 34

उन्होंने जीवन में कर्मयोग को अति महत्वपूर्ण माना है और एक जगह लिखा है कि–

"The end of life is freedom, unselfishness and state happiness through the Karamyoga.

रोम में अपनी साईकिल यात्रा के दौरान उन्हें Carman Dacosta नामक एक लड़की मिली जो बंगलौर (भारत) की रहनें वाली थी। वह उनकी यात्रा व उद्देश्य से अत्यधिक प्रभावित हुई तथा उन्हें अपनी शुभकामनायँ व बंगलौर में अपने घर आने का निमन्त्रण भी दिया। उसके शब्द–

" Here`s wishing you ever success in your journey 'Around The World', and to our other meeting I hope, in India.

टिप्पणी – रोम

अपनी रोम यात्रा में ही श्री सिंह की मुलाकात 22–7–1974 को रोम में भारतीय दूतावास के उच्च अधिकारी श्री गुरूचरण सिंह जी से हुई। श्री गुरूचरण सिंह उनके उद्देश्यों को जानकर उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंनें श्री ब्रजपाल सिंह को अपनी शुभकामनाऐं दी।–

"I wish Sh. B.P. Singh success in his voyage of discovery."

Guru Charan Singh
First- Secretary
Embassy of India. (ROME)

टिप्पणी –

उनकी साईकिल यात्रा के समाचार को इटली के सबसे बड़े समाचार पत्र में प्रकाशित किया गया। समाचार पत्र ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार दी–

"Good Luck and every success"

रोम में रहते हुये उन्होंने वहाँ के धर्मगुरू व चर्च के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। वहाँ कैथोलिक धर्म का बोलबाला है किन्तु धर्म में लोगों की अरूचि भी प्रकट हो रही है। ये बात उन्होंने 26–7–1974 को अपने कथन में स्पष्ट की। उन्होंने रोम को पश्चिमी धर्म, कला और संस्कृति का घर बताया।

विशेषः उन्होंने 28–7–1974 को कहा कि इन्सान जब अकेले में स्वयं से प्रश्न करता है तो सही उत्तर मिलता है क्योंकि परिणाम बिना किसी विवाद के सही निकलता है।

श्री सिंह ने इटली को अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में कुछ गरीब जरूर माना है किन्तु साथ–साथ उसकी अर्थव्यवस्था को परिपक्व व श्रेष्ठ भी माना है।

नोट – 35

फ्रांस- (FRANCE)

31–7–1974 के बाद श्री बी0 पी0 सिंह इटली से फ्रांस आ गये। अपने फ्रांस भ्रमण के दौरान वे एक लेखक जिसका नाम ऐड्रींमालरोक्स था, ने उन्हें बताया कि वर्तमान समय में यहाँ पर धार्मिक समस्याएं हैं। उसके पश्चात श्री सिह भारतीय दूतावास पहुँचे तथा वहाँ उच्च अधिकारियों से

अपनी साईकिल यात्रा के बारें में बताया। वहाँ के एक अधिकारी श्री विजय कुमार जी ने उनकी प्रतिष्ठा में लिखा हैं कि –

"It was a pleasure to meet Sh. B.P. Singh. He is a really an intresting gentleman. I wish him all the success in his mission."

7-8-1974 **Vijay Kumar**
Senior Secretary
Embassy of India (PARIS)

स्पेन– (SPAIN)

श्री सिंह **SPAIN** मे भम्रण पर थे। वहाँ उन्हें एक उच्चकोटि का व्यक्ति मिला। जो उनकी यात्रा के बारे में जानकर बड़ा प्रभावित हुआ तथा उनसे यह भी प्रार्थना की कि वे अपनी यात्रा के विवरण पर जो किताब लिखे, उसकी एक कापी उसको भी भेजें। वह उन्हें अपने घर रात्रिभोज पर भी ले गया।

उसने लिखा है कि –

"I am sure that you will have a most wonderful and valuable experience. I believe that what you are doing now, is very important for you and for the Triumph of love in the world. I am only to try not being strong enough to follow you. I look forward reading your book. Please don't forget send me a copy.

8-8-1974 PARK INIGO ALVAREL
DE TOLEDO
MADRID : CASTELLAVA

नोट – 36

श्री सिंह ने पेरिस के बारें मे अपने विचार वहाँ घूमने के बाद इस प्रकार व्यक्त किये–

"Paris is the home of the western civilization and the kingdom of fashion and artificial love and Pride."

श्री सिंह ने अपने कथन में एक अद्‌भुत बात लिखी है जो उन्हें फ्रांस भ्रमण के दौरान ज्ञात हुई। वे लिखते हैं कि सैण्टजोन का विचार था कि–

"जो कोई फ्रांस पर आक्रमण करता है वह परमात्मा पर आक्रमण करता है। उसने घोषणा की कि फ्रांस सदा सत्य के पथ पर रहा है। फ्रांस सदा परमात्मा के पक्ष में रहा है। फ्रांस का विरोध करना सत्य का और परमात्मा का विरोध करना है।"

विशेष –

सन् 1974 दिन इतवार को जन्माष्ट्मी का पर्व था। श्री ब्रजपाल सिंह उस दिन पेरिस में थे। वहाँ भी उन्होंने श्री कृष्ण को नमन किया और श्रद्धा व आदर से उस दिन के महत्व को याद किया।

उसी दिन पेरिस में उन्हें एक अमेरिकन परिवार के सदस्यगण मिले। श्री सिंह एवं अमेरिकन परिवार के सदस्यगंण बडी भावुकता से एक दूसरे से मिले क्योंकि वे सभी लोग ब्रजपाल सिंह से रोम मे मिल चुके थे। तथा पेरिस में इन सभी का श्री सिंह से दोबारा मिलना हुआ था। ऐसा प्यार व ऐसा अपनापन देखकर तो लगता ही नहीं हम एक दूसरे से अलग है कितने खुश थे वे सभी एक दूसरे को पुनः देखकर।

नोट – 37

पेरिस में श्री सिंह को अमेरिका (U.S.A.) के जीव विज्ञान के प्रो0 रिचर्ड बैरेट 12–8–1974 को मिले। बातचीत से पता चला कि ये प्रो0 बैरेट

"मानव विकास" के ऊपर इंग्लैण्ड में एक पुस्तक लिख रहे हैं। प्रो0 साहिब श्री सिंह से मिलकर बड़ें खुश हुए तथा अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए–

"On mankind, my kind of man, is a mankind."

12-8-1977 Richard Barett

U.S.A.

नोट– 38

अपनी यात्रा के दौरान श्री सिंह को सभी प्रकार के व्यवहार से गुजरना पड़ता था। उन्होंने लिखा है कि 14–8–1974 को वे पेरिस की "एफिल टावर" के निकट धूम रहे थे। थोड़ी देर बाद एक अजीबोगरीब हरकत करने वाला व्यक्ति उनसे आकर उलझने लगा। जब काफी देर तक वह नहीं माना तो पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी पडीं। उसके पश्चात् वे वहाँ का प्रसिद्ध चर्च भी देखने गये।

विशेष – A-

श्री सिंह ने अपनी यात्रा के मध्य भारतीय साहित्यकारों, लेखकों, कवियों व उच्चकोटि के दार्शनिकों का निरन्तर अध्ययन किया। उन्होंने चाणक्य नीति का वर्णन 18–8–1974 को इस प्रकार किया।

"आचार्य चाणक्य का एक सूत्र है। उसमें जनता के कोप को उन्होंने सबसे प्रचण्ड कोप कहा है। जैसे भूकम्प से पर्वत बिखर जाते है। वैसे ही प्रजा के क्रोध के सामने कोई राजा नही ठहर पाता।"

(लन्दन–18–8–1974)

B- चरित्र के बारे में उन्होंने कितना सुन्दर वर्णन किया है–

"राष्ट्र रूपी वृक्ष पर समृद्धि का स्वर्ण कितना भी बखेर दिया जाये, चरित्र रूपी जल के सिंचन के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। चरित्र

को रौंद कर कीर्ति का जो कारवाँ चलता है चाहे जितनी मशालें जलाईए, खाईयाँ नजर नहीं आयेगी''

C- उन्होंने आगे आशा (उम्मीद–Hope) के बारे में 'बल्लतोल' का लिखा एक सुन्दर उदाहरण पेश किया है। कि–

''आशा की नदी में जब तृष्णा के बादल अपना जल उड़ेल देते हैं तो नदी का उफान पहाडों को भी खण्ड–2 करने के लिये दौड़ पड़ता है। परिणाम यह होता है कि नदी स्वयं कई धाराओं में बँटकर समाप्त हो जाती है किन्तु आशा का नशा कमाल का नशा है। आखरी वक्त तक पाँव गाढ़े खडा रहता है।''

उन्होंने लिखा है कि–

" Karam is the eternal assertion of human freedom."

लन्दन– (LONDON)

लन्दन में अपनी यात्रा के दौरान उन्हें अपने देश के अनेक व्यक्ति मिले जो वहाँ अलग 2 व्यवसाय व नौकरी में थे। वहाँ उनकी मुलाकात नवीपुर, गुरूदासपुर (पंजाब) के श्री देवेन्द्र सिंह से हुई जो उनकी साईकिल यात्रा से बड़े प्रभावित हुए। श्री देवेन्द्र सिंह ने लिखा कि–

"Don't yield to difficulties. You will overeome these."

23-8-1974 **Devindra Singh**

London

लन्दन में ही उन्हें श्री योगराज सिंह वैश्य मिले जो उनकी यात्रा के उद्देश्य से अत्यन्त प्रभावित हुये तथा अपनी शुभकामनाएँ उन्हें दी–

प्रिय मित्र ब्रजपाल सिंह

"भगवान तुम्हारी यात्रा सफल करे और तुम्हारा नाम दुनियां में रोशन हो"

नोट– 39

श्री ब्रजपाल सिंह 24–8–1974 को लन्दन में ब्रिटिश म्यूजियम व नेशनल गैलरी देखने गये। लन्दन को उन्होनें एक बहुत सुन्दर शहर बताया तथा राजैनैतिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण राजधानी। वहाँ के लोग अपनी रानी का अत्यधिक सम्मान करते है तथा उसकी सुरक्षा हेतु भगवान से प्रार्थना करना अपना फर्ज समझते है।

विशेष –

श्री सिंह अपनी यात्रा के दौरान अति संयमी व धैर्यवान रहे। उन्होनें यात्रा में विनम्रता व शालीनता का निर्वाह किया किन्तु कभी 2 वे स्वयं भी अपने विषय में चिन्तित हो उठते थे। कई ऐसे अवसर भी आये जब उनकी कहासुनी दूसरे से हो गई, तकरार के रूप में नहीं, बल्कि बाद–विवाद के रूप में जो कि उन्होंने 26–8–1974 को स्वयं ही स्वीकार किया है कि–

''मैं कभी 2 अपने आपको जान बुझ कर वाद–विवाद में डाल देता हूँ ताकि परिणाम सही निकल आये जैसे मेरी आयु और विश्व यात्रा का प्रश्न है।''

उनकी लन्दन यात्रा के दौरान उन्हें श्री स्वर्णसिंह जी मिले। श्री बी0 पी0 सिंह ने उन्हें अपनी यात्रा के अनुभव व उद्‌देश्य बताये तो वह बहुत प्रसन्न हुए और अपने मित्र जगजीत सिंह प्रभु से श्री सिंह की मदद करने के लिये कहा–

श्री स्वर्णसिंह के शब्द –

"I met Mr. Brijpal Singh on Sunday the 25th August 1974 infront of Sikh Temple Shepherds Bush Handon. I was

very pleased to meet him and get to know each other and invited him to maidenhead.

I pray before satsaran submit to help him in every respect throughout his world tour and his future life.

विशेष – **A**

श्री सिंह आक्सफोर्ड (इंग्लैण्ड) में विलियम शैक्सपियर की जन्मभूमि का भ्रमण करने गये।

नोटिंधम- (NOTTINGHAM)

प्रैस – वह 3 सितम्बर 1974 का दिन था। श्री सिंह उस दिन नौटिंधम (Nottingham) में थे। थोडी ही देर मे B.B.C रेडियों की टीम उनका इंटरव्यू लेने पहुँच गई तथा उनकी विश्व यात्रा सम्बन्धी बातें रिकार्ड की गई।

5th September 1974 का दिन श्री ब्रजपाल सिंह के लिये यादगार बन गया, जन नोटिंधम (इंग्लैण्ड), की एक प्रसिद्व कम्पनी जिसका नाम 'RALEIGH' INDUSTRIES LIMITED था ने उन्हें अपनी ओर से एक साईकिल उपहार स्वरूप दी। उनकी पहली दो साईकिल लुटेरों ने लूट ली थी। ये घटना उनके साथ अफ्रीका में घटी। कम्पनी द्वारा लिखित दस्तावेज नीचे दिया गया है–

Raleigh Industries Limited

Nottingham
England NG7 2DD
telephone: Nottingham 77761 - Ext
telex: 37681 (Ralind Nottingham)
telegrams: Ralind Nottingham



TO ALL RALEIGH OVERSEAS COMPANIES

TO WHOM IT MAY CONCERN

date 5th September 1974 our ref your ref

This is to introduce Brijpal Singh who is on a cycling trip around the world. Raleigh Industries Head Office at Nottingham presented him with a bicycle after the collapse of his first two of unknown manufacture.

Having had considerable publicity on his departure from England, we now feel that it would be in the interests of the Company to follow his progress on the rest of his trip. We would therefore ask you if and when he calls upon you to first of all give him any assistance he may require, and secondly to inform us of his whereabouts so that we can plot his progress on the final stages of his journey.

He left India in May 1973, arrived in Nottingham on 5th September 1974 and expects to be back in India sometime early in 1978.

Once again, thank you for any assistance you may be able to give.

Kenneth Collins

K COLLINS - EXPORT DIRECTOR

नोट — 40

श्री सिंह ने इग्लैंण्ड के बारे में लिखा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उसकी स्थिति डॉवाडोल होने लगी थी। उस पर कर्ज भी था। अपनी

आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने के लिये उसे कच्चे माल व सस्ते मजदूरी की आवश्यकता हुई तथा भारत ने पुनः उसकी दोनों जरूरतों को पूरा किया।

B–

श्री सिंह ने 8–9–74 तक इतने देश धूमने के बाद ये निष्कर्ष निकाला कि–

"भारतीयों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे जहाँ भी जाते है। अपनी सभ्यता, संस्कृति और धर्म साथ 2 लेकर जाते हैं।

लीडस – (LEEDS)

श्री सिंह भ्रमण के दौरान लीड्स पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात श्री टी० एस० भोगल से हुई जिसने उनको अपनी शुभकामनाएँ अर्पित की।

"Mr. Brij Pal Singh arrived at Leeds on friday 6-9-1974. We did all we could to make his stay in leeds a pleasant one. He will depart from Leeds on 9-9-1974 towards the earth. I sincerely wish him on behalf of Leeds and in particular from my father for a very enjoyable tour of the world.

स्काटलैण्ड – (SCOTLAND)

A- श्री बी० पी० सिंह ने अपनी साईकिल का रूख अब स्काटलैण्ड की ओर कर दिया है। वहाँ की राजधानी इडिनवर्ग (Edenburg) का भ्रमण करते रहे। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से महसूस किया कि इंग्लैण्ड की अपेक्षा स्काटलैण्ड के लोग अधिक अच्छे हैं।

"Scotland is the land of kind man of mankind."

B – श्री सिंह ने तमिल की एक कहावत को इस प्रकार से व्यक्त किया कि –

"नागाओं के संसार में लंगोटी पहनने वाला मूर्ख होता है।"

श्री सिंह घूमते हुये 'Glasgow' पहुँच गये। 11–9–1974 का दिन था। वे वहाँ अपना सन्देश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि–

"महान चरित्र हमेशा कठिनाईयों में बनते हैं।'

विशेष – **A** –

श्री सिंह का विदेश भ्रमण के बाद भी अपने देश से प्यार निरन्तर बढता गया। विदेश बातचीत के दौरान उनका भारत के प्रति प्यार उमड़ता नजर आता था। उन्होंने लन्दन प्रवास के दौरान अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए –

"राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी भारत विदेशी भाषा संस्कृति के प्रभुत्व से मुक्त नहीं हुआ है। अंग्रेजी भाषा तथा पश्चिमी आचार विचार के प्रति अंधभक्ति से हमारे देश को भारी अहित हो रहा है। स्वंतन्त्र देश के निवासी तभी उन्नति कर सकते जब उनमें पूर्ण स्वाभिमान, आत्मविश्वास तथा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति पर गर्व हो। उनमें स्वतंत्रता की भावना होनी चाहिये।"

B – श्री सिंह ने सच्चाई को कभी नहीं छुपाया। उन्होनें इस बात पर कि बुरे व्यक्ति की आयु लम्बी क्यों होती है का कारण 'लाओत्जे' के इस उदाहरण से स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि–

"कड़वे को अपनी सैल में निश्चिन्त बैठना आता है। जब वह अपने खोल में घुस जाता है तो चीनियों में एक कहावत है कि यमराज भी उस तक नहीं पहुँच पाता क्योंकि जो अपने भीतर जितना डूबता जायेगा, वह उतना ही ज्यादा जीवित होता जायेगा।"

C– उन्होंने श्रीकृष्ण भगवान के अर्जुन को दिये गये उपदेश के बारे में कितनी महत्वपूर्ण बात लिखी है कि–

"यज्ञ के परिणामस्वरूप ही एक व्यक्ति (योगीजन) परमब्रहम परमात्मा को प्राप्त करता है। यज्ञ रहित पुरूष को यह मनुष्यलोक भी सुखदाई नहीं है फिर परलोक कैसे सुखदायक होगा।"

D - पता नहीं क्यों श्री ब्रजपाल सिंह को सांसारिक माया मोह से लगाव नहीं था। उनके कथन को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे सामान्य से हटकर थे तथा सांसारिक बन्धन से बहुत दूर। 25–9–1974 का उनका कथन पढकर किसी को भी ऐसा ही लग सकता है।–

"इस जमाने की हालत ऐसी नहीं है कि उस पर पीछे मुड़कर भी देखा जाये। शायद यही वजह है कि जो इस दुनिया से चला गया, उसने दोबारा लौटकर आने का इरादा नहीं किया।"

टिप्पणी –

लन्दन के एक मैन्युफैक्चरर **G.S. Neta** उनकी साईकिल यात्रा से बड़े प्रभावित हुए तथा अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार दी कि–

Dear Brij Pal Singh, –

You are doing a great job and experience for youself and your Country. May God help you to fulfil your wishes. All the best -

Press –

"श्री सिंह लिखते है कि 26–9–1974 को **Slough London** में **Mr. K.K. Sharma** के साथ एक प्रैस कान्फ्रैन्स में मेरा साक्षात्कार हुआ।"

अपने लन्दन भ्रमण के दौरान उन्होंने **'Lions club of Hounslow London'** को देखा। इसके बाद वे 'वैदिक मिशन' **Vedic Mission London'** आर्य समाज, हाऊंसलो भी गये तथा वहाँ की अच्छी बातों से प्रभावित हुए। उनकी लिखी ये पंक्ति "वैदिक मिशन" की कितनी प्रभावशाली है।

"May We regard one another with the eye of a friend."

Press – श्री सिंह लिखते **हैं** कि–

"आज दिनांक 30–9–1974 को हंसलो लन्दन में मुझे **प्रैस** कान्फ्रैन्स में आमंत्रित किया गया तथा विश्वयात्रा के सम्बन्ध में **मेरा** इन्टरव्यू लिया गया।"

नोट – 41

लन्दन में अपने भ्रमण के चलते श्री सिंह भारत के डिप्टी हाई कमिश्नर से मिले। कमिश्नर साहब ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी। उस समय वहाँ पर डिप्टी हाई कमिश्नर श्री नटवर सिह जी थे। उन्होंने लिखा है कि–

"With my very best Wishes".

Sh. Natwar Singh

Deputy High Commisioner for India

London

विशेष –

श्री सिंह की ज्ञान के प्रति उत्सुकता काबिले तारीफ थी। **वे हर** इंसान, दार्शनिक व श्रेष्ठ व्यक्तियों व उनकी पुस्तकों से ज्ञान अर्जित **करते** रहे। उन्हें जहाँ से भी कुछ सीखने को मिला, उन्होंने सीखा। वे **स्वाभिमान** के विषय में कन्फ्यूसियस के विचारों को इस प्रकार लिखते हैं कि–

"स्वाभिमान तुम्हारी सबसे बड़ी दौलत है किन्तु ध्यान रहे कि ईश्या की अग्नि में यह स्वर्ण जलकर राख न हो जाये।"

सिनेक्का ने भी कहा है कि –

"स्वाभिमान की रक्षा प्राणों की एक ढाल बनाकर करो क्योंकि इससे बड़ा खजाना बादशाह सुलेमान के पास भी नहीं है। मगर इस बात का ख्याल रखो कि महत्वाकांक्षी के हाथों में ये चाबियाँ न पड़ जायें, क्योंकि चोरों की इस मां से देवता भी नहीं बच पाये।"

C – **दोस्तोवस्की** के सुन्दर कथन को श्री सिंह ने इस प्रकार से लिखा है कि–

"जब 2 हम अपने ऊपर उठकर अपने ही साक्षी बनना चाहते हैं तो हमारा ज्ञान हमें दुनियां की चौखट से बाँध देता है। गजब के है वे लोग जो चौखट लाँघ कर आगे बढ़ जाते है मगर कितने लोग ऐसे हो सकते है।"

D – उन्होंने 'कवि अश्वधोष' के शब्दों का इस प्रकार से लिखा है कि–

"यदि आप अपने बल को नापना चाहते है कि यह बड़ा है या छोटा तो इन्द्रियों के साथ सत्य करो। यदि तुम उसमें जीत गये तो तुम्हारा बल सार्थक है। यदि तुम हार गये तो तुम्हारा बल व्यर्थ है।"

E - उन्होंने एलैक्जैण्डर ड्यूमा के शब्दों को इस प्रकार लिखा है कि–

"मैं दो आदमियों को भूखे शेर के आगे डाल देना चाहते हूँ– एक वह आदमी जो खुसामद से अपना मुख गंदा करता है और दूसरा वह जो उस बदबू को सूँध कर प्रसन्न होता है।"

श्री सिंह का इंन्टरव्यू लन्दन में "इण्डिया वीकली" ने लिया और अपनी शुभकामनाएँ दी।

"With all my regards and best wishes. Hope you complete your round the world Trip successful. Looking forward to hear from you in India. "

नोट – 42

बैल्जियम – (BELGIUM)

श्री सिंह का ज्ञान हुआ दर्शन उनकी लेखनी में झलकता है। वे लिखते हैं कि –

"बालू की बुनियाद पर हवेली बनाकर मनुष्य उसमें रहना चाहता है पर अन्त में उसी में दबकर रह जाता है। ज्ञानियों की हवेली ज्ञान पर्वत के शिखर पर सुदृढ बनी होती है। सत्य ही उसका शिखर है। सत्य ही बृह्मा है।"

श्री सिंह लिखते है कि –

"आज दिंनाक 14 अक्तूबर 1974 को बूर्सेलिस बैलत्रिपय के '**Be Soir**' समाचार पत्र ने मेरा इंण्टरव्यू लिया"

वैस्ट जर्मनी– (WEST GERMANY)

वचन – श्री सिंह ने 'तृष्णा' पर रामकृष्ण परमहंस का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। –

"तृष्णा रूपी भाँग जब तुम्हारे गले के नीचे उतरती है तो समझ लो कि औरो की तो बात अलग तुम अपने को ही खोजते फिरोगे। तृष्णा हँसती रहती है और हम उसके हुकुम से अपना सिर चट्टानों से फोड़ते रहते है। तृष्णा को यदि दया आती होती तो भगवान को बार–2 पृथ्वी पर आकर मानव लीला क्यो करनी पड़ती।"

बी0 पी0 सिंह

29–10–1974 फ्रेंकफर्ट(वैस्ट जर्मनी)

Note - A

श्री सिंह ने 3–11–1974 को नवजात शिशु के बारे में अपनी राय इस प्रकार व्यक्त की है–

"बच्चों का उज्जवल भविष्य माता पिता तथा गुरूजनों के हाथों में है। योग्य माता के प्यार भरे उपदेश ही बच्चों को वीर पुरूष बनाते हैं।

अन्तिम रूप से यही कहा जा सकता है कि "निर्भीक और शिक्षित " महिलायें ही राष्ट्र की आधारशिला है।

B— श्री सिंह ने फ्रेंकफार्ट (वैस्ट जर्मनी) में 4—11—1974 को भारत के नोजवानों से अपील की कि वे राष्ट्र उत्थान में अपना सहयोग प्रदान कर उसे उन्नति के शिखर तक ले जावें। उनका कथन इस प्रकार से है कि—

"नौजवानो भारत का भविष्य तुम्हारे आधीन है। चाहे इसको धधकती ज्वाला में फेंक दो और चाहे हिमालय पर्वत के शिखर पर ले जाकर खड़ा कर दो। भारत की कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान तुम्हारे हृदय और बुद्वि से बाहर हो।'

सत्य वचन :—

श्री सिह ने 8—11—1974 को भगवा रंग पर प्रकाश डालकर उस रंग का महत्व स्पष्ट किया है कि —

"भगवे रंग का तात्पर्य है आग का रंग। गेरूआ रंग साफ बताता है कि इन वस्त्रों को धारण करने वाले मानव ने अपने शरीर का होम कर दिया है। अपनी देह को सच्चाई की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया है। सारी लौकिक आवशकताएँ भस्म कर दी है, जला डाली है। समस्त सांसारिक वासनाएं, इच्छाऐं एवं कामनाऐं अग्नि को समर्पित कर दी है।"

प० बर्लिन — (W. BERLIN)

श्री बी० पी० सिंह ने 10—11—1974 को प० बर्लिन और पूर्वी बर्लिन के पूँजीवाद व साम्यवाद को इस प्रकार प्रकट किया है कि —

"अगर आप साम्यवाद और पूँजीवाद की वास्तविकता को जानना चाहते है तो वह आपको पुस्तकों में कभी नही मिलेगी। उसको आप स्वयं

पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के बीच में खीचीं दीवार पर खड़े होकर देख सकते है।"

नोट – 43

"**East Berlin** 'में श्री सिह की मुलाकात भारत के राजदूत से हुई। ये 11–11–1974 की बात है। उन्होंने श्री सिंह को अपनी शुभकामनाएँ दी–

"**With all good Wishes to Sh. B.P. Singh in his adventure round the world. May his spirit of discovery help him to understand brothers and sisters all around him. May he help them understand India better."**

ArDee
29–10–1974 **Ambassador of India**
BERLIN

श्री सिंह ने स्वामी रामतीर्थ के विचार इतिहासकारों के बारे में इस प्रकार व्यक्त किये–

"वह इतिहास लेखक अपनी बड़ी हानि करता है जो किसी धटना के कारणों का अध्ययन करते हुए, उसके आन्तरिक कारणों की ओर ध्यान नहीं देता।"

नोट – 44

13–11–1974 को दीपावली का दिन था। उस दिन श्री बी0 पी0 सिंह बर्लिन में थे। भले ही वो विदेश में थे किन्तु उनके ह्रदय में तो भारत की याद सदैव विराजमान रही। बर्लिन में भी भारतीयों ने दीपावली पर अपने पर्व के सम्मान में आयोजन किया। जलते हुये दीपकों (दीयों) को

देखकर श्री सिंह भावविह्वल हो उठे तथा वहीं से अपने देश के नवयुवकों को एक सन्देश दे डाला। उनके शब्दों में –

"वीर ह्रदय नवयुवको, 'दीपावली' के अनेक जलते हुये दीपकों को साक्षी करके कहो कि भारत का उज्जवल भविष्य हमारे ही हाथों में है और हम हार्दिक विश्वास के साथ कहते है कि अपने मस्तिष्क की तरंगों से उसकी समस्त समस्याओं को धो देंगे। यही हमारा नैतिक कर्तव्य है और यही हमारा राष्ट्रधर्म है।'

श्री सिंह ने 14–1–1974 को ईस्ट जर्मनी में लिखा है कि स्वामी रामतीर्थ समाजवाद के विषय में इस प्रकार कहते है कि –

"समाजवाद का मूल इंग्लैण्ड के एडवर्ड कारपेंटर ने अपने समाज का विचार हिन्दुओं से प्राप्त किया था।"

नोट – 45

श्री सिंह 20–11–1974 को हेमबर्ग पहुँचे। उनकी साईकिल यात्रा "एराउण्ड द वर्ल्ड" वहाँ पर भी उत्सुकता का विषय बनी रही।
हेमबर्ग में भी उन्होंने स्वामी विवेकानन्द का एक कथन पेश किया–

"जिसने यह समझ लिया कि वह कुछ नहीं कर सकता, निश्चित जानिये कि उसके पतन के द्वार खुल चुके हैं।'

West Germany में श्री सिंह को जर्मन दार्शानिक काण्ट का एक कथन पढने को मिला जिसने उन्हें अत्यन्त प्रभावित किया।
कान्ट का कथन इस प्रकार है–

"Only goodwill is good without qualification."

विशेष –

A- श्री सिंह अध्यात्मिक शक्ति में भी बड़ा विश्वास रखते थे। उन्हें जीवन एक विशेष शैली में जीना बहुत अच्छा लगता था। दूसरों के प्रति मदद की भावना उनके हृदय में सदैव रहती थी। पश्चिमी जर्मनी में बोलते हुये एक स्थान पर उन्होनें अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए –

"यह भी इस दुनिया का एक अनोखा नियम है। हम जो कुछ भी दें पाते है उससे अधिक हमारे पास अनायास ही चला आता है।"

B- पश्चिमी जर्मनी में अपनी साईकिल यात्रा के दौरान श्री सिंह ने 22–11–1974 को अपने हृदय की वेदना थोड़ी सी व्यक्त की है। अपनी यात्रा के कष्टों व परेशानी को उन्होंने दबाने की कोशिश की किन्तु जब वेदना बढ़ी तो कुछ छलक भी उठी–

"कल्पना करो महाभारत के युद्व में 'अन्तिम दिन' कितने भयानक ढंग से व्यतीत हुए होंगे। उस दिन कुरूक्षेत्र के मैदान में लोगों ने कितनी यातनाएं सही होगीं, परन्तु अपनी यात्रा का तो हर दिन ही भयानक गुजर रहा है।'

नोट –46

आस्टरोड– (OSTERODE)

श्री सिंह ने आस्टरोड "प0 जर्मनी में 23–11–1974 को दार्शनिक अंदाज में लिखा है कि –

"जब इस शरीर की कोई कीमत ही नहीं तो क्यों न इसका अधिक से अधिक प्रयोग किया जाये।'

वे आगे लिखते हैं कि –

"हे मनु महाराज, तुमने ठीक ही कहा है कि यह जीवन एक यात्रा है और ये शरीर उसका साधन"

वैस्ट जर्मनी में उन्हें अपनी साईकिल यात्रा के दौरान एक लड़की मिली जिसका नाम एलक "**(Elke)**" था। उसने उन्हें एक बहन का आशीर्वाद उनकी यात्रा की मंगलकामना के साथ दिया।



ser Bild zeigt Brij Pal Singh mit seinen Osteroder Freunden Elke Grebowicz und lph Hellwig.

"All the best wishes on your travel."

Your Sister

Elke

नोट – 47

श्री बी0 पी0 सिंह ने ऐल्क **(Elke)** की शुभकामनाओं का उत्तर उसे आने वाले क्रिसमस पर ढेरों खुशियों की सौगात के साथ दिया तथा प्रभु से उसके लिये एक योग्य एवं सुन्दर जीवन साथी दिलाने की भी प्रार्थना एक भाई के रूप में की।

'इच्छा' के सम्बन्ध में 'आस्टरोड' (पं0 जर्मनी) में श्री सिंह ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये–

"जब तुम मुझे छोड़ देते हो और खो देते हो केवल तभी तुम मुझे अपने पास पाते हो"

नोट – 48

A- राजनीति के बारे में प0 जर्मनी में श्री सिंह ने कनफ्यूसियस के विचारों को इस प्रकार लिखा है कि –

"तुम आग और पानी को मुट्ठी में एक साथ बन्द कर सकते हो, इन्द्रधनुष से कपड़े रंग सकते हो और चाँदनी में चावल पका सकते हो, किन्तु राजनीति के नखरों को गिन नहीं सकते। राजा के स्वभाव की थाह नहीं लगा सकते। देवता कहीं हारे है तो यहीं।"

B - इसी सन्दर्भ में राजा भर्तहरि के राजनैतिक अनुभव को श्री सिंह ने इस प्रकार लिखा–

" राजनीति के ठाट बड़े निराले हैं। कही सच की दुहाई है तो कहीं झूठ का बोलबाला। कहीं शब्द बाणों का प्रहार है तो कहीं कानों में अमृत की झड़ी, कहीं अत्याचार की पराकाष्ठा है, तो कहीं दयाकृपा की बरसात, कहीं धन की लालसा तो कही दान की जयजयकार, कहीं आमदनी तो कहीं खर्च का हिसाब नहीं। बहुरूपिये की तरह भेष बदलती रहती है। इसका आदि और अन्त कुछ नहीं। इसका चित सदैव चंचल है।"

राजा भर्तहरि

C - श्री सिंह ने पं0 जर्मनी में अपनी यात्रा के दौरान पंतजलि के शब्दों को इस प्रकार सब के सामने रखा –

''संघर्ष केवल हमारे अज्ञान के ही कारण है अन्यथा न तो इसकी आवश्यकता है और न ये मानव विकास के कोई अंश ही हैं। यह हम लोगों की आधीरता हैं जो इनका सृजन करती है। हममें इतना धैर्य नहीं कि अपना मार्ग धीरज से तैयार करें।

विशेष –

श्री बी0 पी0 सिहं ने पं0 जर्मनी में मनुष्य के संदेह की आदत पर प्रकाश डाला। वे कहते हैं कि –

''प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ संदेह जन्म से ही होते हैं। उनको हम पुस्तकों से दूर नहीं कर सकते या अध्यापकों के उपदेशों से। उनको दूर करने का सिर्फ एक उपाय है और वह है प्रकृति से सीधा टकराना अर्थात् प्रकृति को गुरूमानकर उससे ही सीखने का प्रयास करना।''

नोट – 49

A- श्री सिंह इस बात में विश्वास करते रहे कि जुड़ना और अलग होना, दोनों प्रकृति के नियम है। उन्होनें इस सन्दर्भ में 'राजा भर्तहरि' का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। –

''प्रिय मित्र। कभी ऐसा समय था कि तुम हम थे और हम तुम थे। दोनों में कोई भेदभाव नहीं था। पर यह क्या हो गया कि तुम 2 हो गये और हम 2 रह गये।''

B- श्री सिंह लिखते है कि–

''मुझे हंसी आती है। उन लोगों पर जो प्रातः काल प्रतिज्ञा करते है कि हम अपने जीवन में कुछ विशेष करेंगे किन्तु संध्या! होने से पूर्व ही उसे भूल जाते है। अब आप ही सोचिये कि ऐसे लोगों से विकास की क्या उम्मीद की जा सकती है।''

C- एक बात तो स्पष्ट है कि श्री बी० पी० सिंह कर्म में अतिविश्वास रखते थे। उन्होनें लिखा भी है कि –

"हमें अपनी समस्त शक्ति को महान लक्ष्य पर केन्द्रित कर देनी चाहिए क्योंकि सर्वोच्च परिणाम पर पहुँचने का यही एकमात्र तरीका है।"

नोट 50 –

श्री बी० पी० सिंह जी ने प० जर्मनी में 31–12–1974 को कहा कि मैंने जितने देश देखे और उन्हें समझा, उससे जो बात सामने आई वह इस प्रकार से है–

"यूरोप में समाजवादी देश ऊपर से अधिक धनवान नहीं दिखाई देते लेकिन फिर भी मुझे वहाँ पर कोई भीख माँगता नहीं दिखाई पड़ा। पूँजीवाद राष्ट्रों की भाँति यूरोप के साम्यवादी राष्ट्र ऊपर से स्वतन्त्र दिखाई नहीं देते लेकिन फिर भी आन्तरिक रूप से वे प्रसन्न है।"

भाग –3

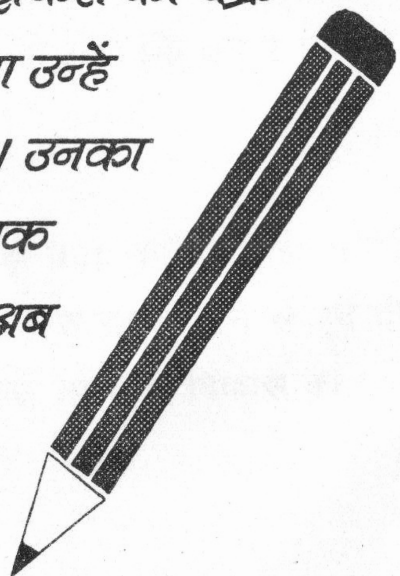
तृतीय डायरी

प० जर्मनी से सैण्ट्रल अमेरिका

W. Germany To Central America

1-1-1975 से 31-12-1975 तक

श्री बी0पी0 सिंह जी वर्ष 1974 का समय पार कर वर्ष 1975 की दहलीज पर कदम रख चुके थे। समय के चक्र के साथ उनकी साईकिल का चक्र भी दौड़ रहा था तथा दिखा रहा था उन्हें कुदरत की बनाई इस दुनिया को। उनका ज्ञान सांसारिक ज्ञान से आध्यात्मिक ज्ञान की ओर बढ़ता जा रहा था। अब आप स्वयं ही देख लें।






एक राष्ट्र प्रेमी, प्रगतिशील व कर्मठ यात्री के रूप में

नोट –1

A- श्री सिंह स्वामी विवेकानन्द से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने स्वामी जी द्वारा कहा हुआ कथन इस प्रकार लिखा है कि –

"You can not believe in God until you believe in yourself."

B- श्री सिंह का मानवीय सुन्दरता के बारे में विचार इस प्रकार था–

"हम भारतीय, मानव सुन्दरता को चरित्र में देखते हैं न कि रूप रंग में।"

C - ज्ञानी की परिभाषा, यूँ तो अलग–2 है। किन्तु श्री सिंह का विचार भारतीय दर्शन के अनुसार इस प्रकार रहा–

"हम भारतीय दर्शन के अनुसार उस व्यक्ति को परमज्ञानी कहते हैं जिसने अपनी समस्त कामनाओं का भस्म कर दिया हो।"

D- उन्होंने भगवान के बारे मे भी दृढ़ दृष्टान्त को अपनाया तथा ढकोसलो पर विश्वास न करके, अपन हृदय की बात सुनने पर ही जोर दिया जैसे कि–

"यदि तुम ईश्वर को अपने हृदय में नहीं देख सकते हो तो उसे किसी भी स्थान पर नहीं पा सकते हो।"

E- उन्होंने युवा पीढ़ी के लिये एक सलाह दी कि –

"हम अपने भविष्य को तभी बना सकते है, यदि हम अपने कर्तव्यों का निर्वाह उत्साहजनक स्थिति में लगन व परिश्रम के साथ करें।"

विशेष – **प0 जर्मनी** (W. GERMANY)

1 जनवरी 1975 को श्री सिंह पं0 जर्मनी में थे। वहाँ पर उन्होंने नववर्ष पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये–

" We can make our fortune if we have courage & strong determination, only through good deeds. This is my message to humanity."

नोट – 2

A- उन्होंने वहाँ बोलते हुये कहा कि–

"समस्त शक्तियों को एकत्र करके महान लक्ष्य पर केन्द्रित करने से सकारात्मक परिणाम निकल आते हैं।"

B - श्री सिंह का अनुभव उनकी यात्रा के दौरान परिपक्व होने लगा था। उनकी बातें जो वे किसी भी देश के नागरिक से करते थे, सटीक व एवं व्यावहारिक होती थी। उन्होंने अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है कि –

"प्रत्यक्ष अनुभव कभी भी जुदा नहीं हो सकते, जब भी उन्हें उचित वातावरण मिलेगा, तभी वे जगमगा उठेंगे।'

विशेष–

28 मार्च 1938 को में श्री सिंह ने हिटलर के कथन को इस प्रकार व्यक्त किया–

Hitler syas, "The blessings of the Lord is with Germany and not with her enemies."

नोट – 3

ऐसा भी नहीं था कि श्री **बी0 पी0 सिंह को** यात्रा के दौरान सब कुछ आसानी से उपलब्ध होता रहा। **उन्होंने अपनी साईकिल** से कठिन से

कठिन मंजिल को चुनौती दी तथा विपरीत स्थितियों में भी आगे बढ़ते रहे। पं0 जर्मनी में उन्होंने अपनी कठिनाईयों के बारे में लिखा है कि –

"आज मैने सौ मील की लम्बाई को अपने पैरों से तय किया है। यात्रा अत्यन्त कठिन रही। पर्वतों के शिखर, सामने की तेज बर्फीली हवाऐं ऊपर सें तीव्र बरसात और भूख तथा प्यास अर्थात सैकडों कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।"

नर्नबर्ग – (NURNBURG)

अपनी अगले दिन की यात्रा के बारे में श्री सिंह इस प्रकार से लिखते है।–

"आज की यात्रा कल से भी कई गुना अधिक कठिन रही है। आज मैने नर्नबर्ग से लेकर रैगन्सबर्ग तक की यात्रा की जो लगभग 110 किमी० थी।"

श्री सिंह आगे लिखते हैं कि –

"आज मैनें 116 किमी0 की यात्रा करके जर्मनी के एक प्रसिद्व चर्च में विश्राम किया। उस समय वहाँ के फादर सैण्टगोर्ज थे।"

D- आस्ट्रिया- (AUSTRIA)

श्री बी0 पी0 सिंह जी प0 जर्मनी से साईकिल यात्रा जारी रखते हुये आस्ट्रिया पहुँच गये। वहाँ उनकी मुलाकात वीरेन्द्र कुमार प्रिन्जा से हुई। श्री सिंह ने लिखा है कि –

"आज सम्पूर्ण दिन आस्ट्रीया की राजधानी 'वियाना' का भ्रमण किया तथा भ्रमण सहयोगी श्री विरेन्द्र कुमार प्रिन्जा रहे।"

उन्होंने एक स्थान पर **Wien Austria** में बोलते हुये कहा –

"Inner perfection and outer conduct are two sides of one life."

नोट –4

हंगरी – (HUNGRY)

समय चलता रहता है। श्री सिंह की साईकिल भी चलती रही निरन्तर एक देश से दूसरे देश तक वे दौड़ रहे थे। समय पर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने हेतु 5 वर्ष में सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण। ऐसा कहानियों में ही सुनने को मिलता है। श्री सिंह उसे वास्तविकता में बदलने का प्रयास कर रहे थे। उन्होनें लिखा है कि –

"आज मैंने दोपहार बाद मिस्टर प्रिन्जा और बजाज से विदा लेकर 'वेन' से 'हंगरी' देश के लिये प्रस्थान किया तथा रात्रि में हंगरी की सीमा पार कर एक विश्वविद्यालय में छात्रों के साथ विश्राम किया।"

नोट –5

श्री सिंह अपनी साईकिल यात्रा के दौरान वुडापेस्ट (BUDAPEST) पहुँचे तथा वहाँ पर भारत के राजदूत C.B. Muthamma (Miss) से 20 नवम्बर 1975 को मुलाकात कर अपनी साईकिल यात्रा के उददे्श्य के बारें मे बताया। मुथम्मा जी ने श्री सिंह को अपनी शुभकामनाऐं इस प्रकार से दी–

"I wish Mr. B.P. Singh all sucesss in his future."

Budapest C.B. Muthamma (Miss)

20–1–1975 Ambassador of India

यूगोस्लाविया – (EUGOSLAVIA)

A - श्री सिंह अपनी साईकिल यात्रा के दौरान जैसा सोचते थे अथवा देखते थे, उसे अपनी डायरी में नोट कर दिया करते थे। इसी सन्दर्भ में उन्होंने अपनी बातों के माध्यम से शिक्षा की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वे लिखते हैं कि –

"शिक्षा मानव की अन्तः प्रकृति को जगाने का एक प्रयास है। अन्तः प्रकृति के जाग जाने पर या चरित्र निर्माण हो जाने पर अन्य कार्य अनायास ही पूर्ण हो जाते हैं।'

B - ये बात पूर्ण सत्य है कि घूमने से व्यवहारिक ज्ञान बढ़ता है। श्री सिंह भी घूमते हुये जो अनुभव प्राप्त करते थे, उसे अपनी डायरी में लिखकर स्थायित्व प्रदान करते थे। उन्होंने घूमने वालों के विषय में इस प्रकार से लिखा हैं कि –

"भ्रमण करने वाला राजा पूजने योग्य है। घूमने वाला ब्राह्मण पूजा जाता है। भ्रमण करने वाला योगी दूषित है परन्तु घूमने से नारी नष्ट हो जाती है।'

नोट –6

A- उस दिन घूमते हुये उनकी मुलाकात क्रानिया स्लावकों (KRNEIA SLAVKO) से हुई तथा उसी के निमंत्रण पर श्री सिंह रात्रि विश्राम हेतु उनके निवास पर पहुँचे तथा विभिन्न विषयों पर बातचीत हुई।

बैलग्रेड– (BELGRADE)

B- श्री बी0 पी0 सिंह जब बैलग्रेड पहुँचे तो उनकी मुलाकात वहाँ रहने वाले श्री तेजसिंह तँवर से हुई। श्री तँवर भारत में लालडिग्गी–अलवर (राजस्थान) के रहने वाले हैं। तँवर जी उनकी यात्रा व उनके अनुभव से

अत्यन्त प्रभावित हुए तथा देश का गौरव बढ़ाने हेतु उन्हें साधुवाद दिया। श्री तँवर ने उनका उत्साहवर्धन इस प्रकार किया।—

"ध्वजा देश की हम लिये ही फिरेंगे, उसी के लिए जियेंगे, मरेंगे"

24—1—1975 तेजसिंह तँवर

बैलग्रेड राजदूतावास

विशेष —

यूगोस्लाविया में ही श्री सिंह ने धर्म के विषय में अपने विचार इस प्रकार से प्रस्तुत किये—

"धर्म में वह शक्ति है जो मनुष्य की आत्मा को जागृत करके, परमात्मा में विलीन कर देती है। ये हमें पुस्तकों से नहीं बल्कि हृदय को जलाने स अर्थात उसके मंथन से प्राप्त होती है।"

ग्रीक— (GREEK)

आत्मबोध :

श्री सिंह यूगोस्लाविया से चलकर ग्रीक पहुँच गये। रास्ते में अनेक उतार चढ़ाव आये। उन्होनें सभी कुछ सहन किया। कभी 2 उनका अन्तर्रमन शायद कुछ अटपटा सा महसूस करने लगता था। जैसा कि हम उनके शब्दों में महसूस करते हैं—

"मुझे दुख नहीं होगा, अगर अविराम संघर्ष करने के बावजूद भी, मैं अपनी मंजिल के अन्त तक न पहुँचा!"

नोट — 7

जो भी व्यक्ति कुछ लिखकर छोड़ जाता है, उसका लिखा हुआ, उस समय की परिस्थितियों व रहन सहन पर प्रकाश डालता है। श्री सिंह

जहाँ 2 अपनी साईकिल पर पहुँचे, उन्हें वहाँ की स्थिति जानने का मौका मिलता रहा। इतने देश घूमने पर उनके विचार इस प्रकार रहे–

"आज मैंने 200 किमी० की यात्रा तय की है। इस घोर जाड़े और अजनबी संसार में, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति द्रव्य के पीछे अन्धाधुन भाग रहा है।"

B- श्री सिहं ग्रीक में पहुँचकर एक जगह से दूसरी जगह निरन्तर चलते रहे। साईकिल ही उनका घर–संसार था और विश्व भ्रमंण उनकी मन्जिल। इस मंन्जिल को पाने के लिये श्री सिंह लगातार आगे बढ़ते जा रहे थे। उन्हीं के शब्दों को आप पढ़िये–

"आज 210 किमी० की यात्रा 15 घण्टे में पूरी करके ही विश्राम किया।"

C- श्री सिंह ने आगे लिखा है कि –

"आज मैनें 240 किमी० की यात्रा तय करके यूनान की राजधानी ऐथेन्स में प्रवेश किया।"

विशेष –

यात्रा के दौरान श्री सिंह बीच 2 में अपने विचार व हृदय के उद्गार प्रकट करते रहते थे। ये बात सच है कि घूमने से ज्ञान बढ़ता है। श्री सिंह की सोच भी दिन प्रतिदिन परिपक्व होती जा रही थी। ग्रीक पहुँचने पर उन्होंने लिखा है कि –

"जब मानव के हृदय में प्रसन्नता, आँखों मे चमक, भुजाओं में शक्ति और मस्तिष्क में सुन्दर विचार हों तो मन्जिल स्वयं ही करीब आ जाती है।"

नोट – 8

A- श्री सिंह किसी भी नये देश में जाकर वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को देखने जरूर जाते थे तथा उनके बारे में दूसरों को भी बताया करते थे ताकि दूसरे लोग वहाँ की संस्कृति को समझ सकें। वे लिखते हैं कि –

"आज मैनें यूनान की प्राचीन इमारतों की यात्रा की। इन इमारतों को लोग सिकन्दर महान के प्राचीन काल के महल बताते है।"

B– श्री सिंह इस क्रम में आगे बताते है कि ऐथेन्स में पादरियों का जलूस किस तरफ इशारा करता है –

"ऐथेन्स के पादरी लोग जलूस निकालकर जनता से मांग करते हैं कि हमें भी विवाह करने की आज्ञा दी जाये।"

C – श्री सिंह लिखते है कि यहाँ पर **Old house** है। जहाँ पर बूढ़े व्यक्ति रहते हैं। ये 365 दिन में सिर्फ एक दिन के लिये जीते हैं। जब इनका जन्मदिन आता है। उस दिन इनके बच्चे इन लोगो से मिलने आते है तथा कुछ घण्टे इनके साथ बिताते है तथा कहते है कि आपने अपना जीवन जी लिया अब हमें जीने दो। यह है सभ्यता की सबसे अधिक भयानकता। एक समाचार पत्र में जून 1975 में पढ़ा था कि एक वृद्ध महिला अपने कमरें में 6 महीने बाद मृत पाई गई।

विशेष –

ऐथेंस में भ्रमण के दौरान श्री सिंह की अलग–2 विचारधारा वाले लोगों से बातचीत भी हुई तथा धर्म के विषय मे उनसे कुछ जानने व उन्हें कुछ बताने का क्रम भी चलता रहता था। श्री सिंह ने लिखा है कि –

"योगी परम तत्व को आत्मा में देखते है। मूर्तियों की कल्पना इस लिये की गई है कि अज्ञानी उनकी सहायता से ध्यान कर सके।"

उन्होंने "भागवत" का कथन स्पष्ट किया कि–

"द्विजों का देवता अग्नि है, मनीषियों का देवता हृदय है। अज्ञानियों का देवता मूर्ति तथा ज्ञानियों के लिये ईश्वर सर्वत्र है।"

नोट – **9**

मिश्र – (EGYPT)

A- श्री सिंह यूनान का भ्रमण साईकिल से करने के बाद अपनी नई मन्जिल की ओर बढ़ गये ओर जा पहुँचे मिश्र **(EGYPT)** वे लिखते हैं कि–

"आज सायं के समय, मैंने यूनान से मिश्र के लिये प्रस्थान किया। सारा दिन जहाज द्वारा यात्रा की। जहाज की सर्विस बहुत अच्छे ढंग की रही। खाना, सोना, नहाना, सिनेमा, संगीत और गाना, सभी कुछ अपनी जगह अनोखे है। वर्ल्डवार की फिल्म दिखलाई गई है कि किस प्रकार हिटलर को पराजित किया गया।"

B– श्री सिंह की यह यात्रा अच्छी रही, उन्होंने लिखा है कि –

"आज सुबह मिस्र के भव्य नगर अलैक्जैंड्रा में जहाज द्वारा पहुँचा तथा फिर वहाँ से दोपहर बाद चलकर मुबारिक मौहम्मद के यहाँ रात्रि में विश्राम किया।"

काहिरा– (KAHIRA)

C– मिस्र भ्रमण के बाद श्री सिंह अपनी मन्जिल की ओर बढ़ चले गये। रात्रि में उन्होंने हुसन सूदअमर जो 'अलबहिरा' मिस्र में रहते थे, के यहाँ रात्रि विश्राम किया। वे लिखते हैं कि –

"आज सुबह मैंने काहिरा के लिये प्रस्थान किया तथा काहिरा में भारतीय दूतावास पहुँचा।"

श्री सिंह ने अरब देश के नागरिकों में भारतवासियों के लिये अत्यन्त आदर की भावना पाई। वे लिखते हैं कि–

"अरबों को भारतीयों से अगाध प्रेम है। वहाँ के नौजवान मुझसे बार 2 यही प्रश्न करते थे कि भारत ने इतनी अच्छी फिल्में बनानी कैसे सीखी है जिसमें बैजयन्तिमाला जैसी हीरोइन तथा राजकुमार जैसे हीरो हो तो हम फिल्में देख 2 कर पागल ही बन जाते हैं। उन्होनें 'संगम' तथा 'पाकीजा' जैसी कई फिल्मों के नाम लिये।"

नोट –10

A- श्री सिंह मिस्र में घूमते हुये उस स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ जाने की इच्छा विश्व का लगभग हर नागरिक ही रखता होगा और वह है **"मिश्र** के पिरामिड"। वे लिखते हैं कि –

"आज मैंने मिश्र के विश्व विख्यात पिरामिडों की यात्रा की जो प्राचीन सभ्यता के स्वयं प्रमाण है। फिरौज द्वारा जिनका 4000 वर्ष पूर्व निर्माण हुआ था। तथा जिनका नाम – Kofo, Kafra, Mankra है।

श्री बी0 पी0 सिंह जी डा0 एस राधाकृष्ण के वक्तव्य से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने लिखा है कि –

"हम जो बनना चाहते हैं और जो है उसके बीच विनाशकारी असंतुलन है। यह विरोध हमारी अशांति के कारण है। हम बात तो समझदार व्यक्तियों की तरह करते है परन्तु व्यवहार पागलों की तरह से।"

उनका वर्णन करते थे। उन्होंने मिस्र के बारे में अपने विचार इस प्रकार लिखे कि–

"Eggypt is a land of religion and and old civilizatation and head of the Arab unity. It is an agricultural country. The river Nile is the base of Egyption economy.

प्रेस –

D- श्री सिंह की **"साईकिल यात्रा"** का वर्णन मिश्र के रेडियो पर आया। उन्होंने लिखा है कि–

"मिश्र के रेडियो ने आज मेरी यात्रा का पूरा वर्णन रिकार्ड किया जो कि 'अंग्रेजी और अरब' में है। उस समय मेरे साथ डा० खलिल भी थे। जो कि 'Information service of India in Cario-Egypt में ही कार्य करते है। करीब 15 मिनट तक मेरी रेडियो वार्ता सार्वजनिक प्रोग्राम से ब्राडकास्ट की गई।"

टिप्पणी –

A- Cario में श्री सिंह की मुलाकात न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली के निवासी श्री 'रमण चावला' से हुई। उन्होंने श्री सिंह को अपनी शुभकामनाएं इस प्रकार दीं–

"It was an honour to meet a courageous and patriot Indian like you. We wish you all the best and success in your work mission."

B- मिस्र में श्री सिंह की मुलाकात श्री चमनलाल जी से हुई। चमनलाल जी ने उन्हें अपनी बात कुछ इस अन्दाज में कही –

"If we want to retrain our freedom, we will have to produce the man of character. More pride in the past will not help. Have feet in the Past, heart in the present and eyes on the future."

विशेष – श्री सिंह जो कुछ भी देखते थे, यदि वह श्रेष्ठ होता था, तो उससे प्रभावित होकर उसे अपनी डायरी के पन्नों में लिख देते थे।

उन्होंने काहिरा के बारे में इस प्रकार लिखा है कि–

''काहिरा का अल–अजहर'' अतिप्राचीन विश्वविद्यालय है जो आज भी विद्यमान है। काहिरा का यह विश्वविद्यालय 1200 वर्ष पुराना तथा आज भी इस्लाम धर्म की शिक्षा दे रहा है।''

मैं नील नदी के किनारे काहिरा नगर के केन्द्र में एक Youth Hostel मे रहा करता था जिसके दूसरे किनारे पर शैरेटन होटल था और यहाँ से होकर सीधी सड़क पिरामिडों की ओर चली जाती थी।

मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की तस्वीर आज वहाँ के घर 2 में लगी हुई है।''

नोट – 11

A- मिस्र में श्री सिंह की मुलाकात 'इल्याएहरम्बर्ग' से हुई जो भारत से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने अपने कथन में लिखा है कि–

"India is a temple of humanity where you must walk in with bare and sincere heart."

सूडन– (SUDAN)

B- श्री सिंह मिश्र से पानी के जहाज द्वारा सूडान (SUDAN) 4 बजे शाम को पहुँचे तथा वहाँ से ''आदी हल्फा''(Aadi Halfa). के लिये प्रस्थान किया।

नोट – 12

A- श्री बी0 पी0 सिंह अपनी यात्रा के विषय में लिखते हैं कि –

"आज हमारा जहाज सुबह के समय आदी–हाल्फा **(Aadi Halfa)** पहुँचा और फिर 4 किमी रेगिस्तान की यात्रा समाप्त करके रेलवे स्टेशन पहुँच गया और वहाँ से मैंने रेल द्वारा यात्रा की क्योंकि रेगिस्तान की वजह से कोई सड़क वहाँ नहीं थी।"

B- श्री सिंह वहाँ की यात्रा के बारे में आगे लिखते हैं कि –

"आज सम्पूर्ण दिन मैने सूडान की रेल द्वारा यात्रा की। रास्ते में 1100 मील तक कोई पेड़ पौधा–हरियाली, पक्षी और पानी आदि दिखाई नहीं दिया।"

श्री सिंह लिखते हैं कि–

"नील नदी अफ्रीकी सभ्यता का घर कहलाती है। अधिकांश लोग नदी के किनारे रहा करते थे, जहाँ झाडियां और मरूस्थल जैसा स्थान भी था।"

टिप्पणी –

कुछ लोग कहते है कि ये दुनियाँ बहुत बडी है किन्तु कुछ कर्मठ लोगों के लिये तो ये छोटी सी है। ऐसा ही कुछ हुआ श्री बी0 पी0 सिंह जी के साथ। जब वे स्विट्जरलैण्ड में थे तब उन्हें श्री सिराज जी मिले थे और जब वे खरटाम (सूडान) में थे तो सिराज भाई दोबारा वहाँ मिले। दोनों एक दूसरे से मिलकर कितने खुश हुये होंगे, ये तो वही जानते हैं। सिराज भाई लिखते हैं कि –

"This world is an island because Brij Pal Singh and I met again in Khartoum unexpectedly. I found him in some energetic mood. I wish him ever success. God bless him.

नोट – 13

A- श्री सिंह की अपनी साईकिल यात्रा के दौरान मुलाकातों का क्रम तो चलता ही रहता था। सूडनं में वे भारत के राजदूत से मिले और अपने विचार उनके बारे में इस प्रकार से रखे–

"भारत के राजदूत की श्री सिंह से भेंट हुई। वे बड़े महान प्रकृति के लगे। उनमें भारतीयता थी, वे बड़े ही विचारशील थे तथा धर्म में आस्था रखते थे।"

B- किसी भी बाहरी व्यक्ति से उसके तथा उसके देश के विषय में जानकारी करने की जिज्ञासा सभी को होती है। श्री बी० पी० सिंह के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्होंने लिखा है कि –

"सूडान की राजधानी खरटौम के युवा आज वहाँ खड़े है जहाँ से एक रास्ता भारत की ओर तथा दूसरा यूरोप की ओर जाता है। वे सभी से दोनों में से एक श्रेष्ठ रास्ता पूछते है जब मैं 'खरटाम' के युवा आवास में विश्राम कर रहा था तो अनेक छात्र व छात्राएँ मुझसे ये प्रश्न पूछते है कि आप कुछ भारत तथा पाश्चात्य के विषय में बताएँ।"

नोट – 14

A- 'खरटाम' के युथ हास्टिल में छात्र–छात्राओं के साथ रहते हुये उन्होंने बहुत सी बातों पर प्रकाश डाला, जिनमे से एक इस प्रकार है–

"अगर हम अपने लक्ष्य पर पहुँचना चाहते हैं या हम अपनी मुक्ति चाहते हैं तों हमें कर्तव्यपालन द्वारा पहले चरित्र निर्माण करना होगा। यह प्रबल इच्छा शक्ति ही हमें अनेक कठिनाईयों मे से निकालकर मन्जिल के अन्त तक पहुँचा देगी।"

B- श्री बी0 पी0 सिंह के साथ "खरटम युथ हास्टिल" में कनाडा का रहने वाला एक युगल भी रूका हुआ था। वे एक सप्ताह तक श्री सिंह के साथ रहे तथा उनकी संस्कृति को जानने का प्रयास करते रहे। वे उनके उददे्श्य से बड़े प्रभावित थे।

C- श्री सिंह का ज्ञान दार्शनिक होता जा रहा था। धर्म के बारे में उन्होंने सूडन में लिखा है कि–

"Until you sacrifice yourself for the Liberation of Mankind, religion will not come to you."

मदनी– (MADNI)

D- श्री सिंह ने जितना वे घूमे और इस दुनियाँ को समझा, उसी के आधार पर 3 मार्च 1975 को लिखा है कि –

"जीवन की समाप्ति पर निश्चित रूप से सभी को भगवान में विलीन हो जाना है। चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक। चाहे प्राचीन युग के श्रीकृष्ण हो या नवीन युग के रामकृष्ण परमहंस, महान वही है जिन्होंने प्रारम्भ में ही भगवान की सत्ता को जानकर स्वयं को उनके समर्पित कर दिया है।"

नोट –15

श्री सिंह एक स्थान से दूसरे स्थान तक निरन्तर आगे बढ़ते रहे। वे एक दिन में अत्यधिक साईकिल चलाते थे। काफी कठिनाईयाँ भी कभी 2 उनके रास्ते में आती थी जैसा कि उन्होंने लिखा है–

"आज सुबह 2 मदनी से गदारिक के लिये प्रस्थान किया। रास्ते में सड़क कच्ची थी तथा चाईना के आधीन मदनी से गदारिक तक के

लिये सड़क का निर्माण भी चल रहा है। रास्ते में न काई गाँव है और न ही कहीं पानी आदि। रास्ता लम्बा है तथा यात्रा कष्टदायक।''

सूडान में जापान के एक प्रोफेसर एच0 नाकामारा से उनकी मुलाकात हुई। वे श्री सिंह से अत्यधिक प्रभावित हुए। भारत के प्रति उन जापानी प्रोफेसर साहिब की बड़ी श्रद्धा थी। प्रोफेसर साहिब लिखते है कि –

"India is culturally mother of Japan. For centuries, it has in her own characteristics way, been excercising her influence on the thought and culture of Japan.

B- सूडान में ही श्री सिंह को लार्ड मैकाअले जो इंग्लैण्ड के रहने वाले थे, से मुलाकात हुई। मैकाअले साहिब मानते थे कि भारतीय सभ्यता विश्व की एक प्राचीन सभ्यता है।

उन्होंने लिखा है कि –

"Many centuries before Christ when the people of England were still wearing raw skins on their painted bodies, even in the remote antiquity, Indians had attained a high degree of civilization."

नोट – 16

A- श्री सिंह एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये एक लम्बी दूरी तय किया करते थे। उन्हीं के शब्दों में –

''आज सूडान सीमा से चलकर करीब 210 मील दूर विश्राम किया।''

श्री सिंह स्वामी विवेकानन्द की बातों व लेखों से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होनें स्वामी विवेकानन्द का कथन इस प्रकार लिखा है कि –

"लोग मनुष्यों को नेता या गुरू नहीं बनाते है, जो गुरू या नेता होते है, वे उस अधिकार को साथ लेकर ही जन्म लेते है।"

इथोपिया – (ETHOPIA)

श्री सिंह को अपनी यात्रा के दौरान अनेक व्यक्ति मिले जो उनसे बहुत प्रभावित हुये। विदेशियों के मन में भारत के लिये अत्यन्त आदर व सम्मान हैं वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित है। श्री सिंह को इथोपिया में एक अरब नागरिक मिला जिसने भारत को इस प्रकार सराहा–

"It is an asserted that Paradise in India, be not surprised, because paradise itself is not comparable to it."

नोट – 17

A- घर से दूर जहाँ अपना कोई न हो ऐसे में मन यदि उदास हो जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, तब जीने का एक ही सहारा होता है और वह है माया, मोह से हटकर आध्यात्मिकता की शरण लेना। शायद श्री सिंह के हृदय में भी कुछ ऐसा ही हुआ हो।

उन्होंने लिखा है कि –

"जब मन अपने स्वभाविक आवास में वापिस आ जाता है तब न कोई पथ रहता है और न कोई पथिक।'

B- श्री बी0 पी0 सिंह अपनी यात्रा में जो अत्यधिक अच्छी बात सीखते थे अथवा महसूस करते थे तो उसे तुरन्त अपनी डायरी के पन्नों में लिख लेते थे। मित्रता पर उन्होनें कितना अच्छा लिखा है कि –

"As old wood is best to burn, old horse to ride, old books to read and old wine to drink, so are old friends are always most trusty to use."

C- इथोपिया में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने जीव और जीवात्मा पर भी प्रकाश डाला जो कि इस प्रकार है –

''जीवात्मा के लिये यह कहा गया है कि वह हृदय की गुहा में रहती है, बहुत ही सूक्ष्म है और सिवाय आकार के और सभी बातों में मनुष्य के प्रत्यक्ष रूप से मिलती जुलती है।''

D- 'ज्ञान तो सागर' से भी विशाल है। श्री सिंह एम0 ए0 अर्थशास्त्र के छात्र रहे। इसके बावजूद भी उन्होंने गीता, उपनिषद् व स्वामी विवेकानन्द के शब्दों पर अपनी आस्था प्रकट की। उन्होंने उपनिषद् का कितना सुन्दर उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया है–

''सच्ची शिक्षा (ब्रह्मज्ञान) पिता को अपने ज्येष्ठ पुत्र या विश्वस्त शिष्य को ही सिखानी चाहिए, अन्य किसी को नहीं, चाहें वह उसके बदले में उसे सागरों से घिरी और रत्नों से भरी समस्त पृथ्वी ही क्यों न दे रहा है।''

गौन्डर– (GONDER)

E- श्री बी0 पी0 सिंह एडिस अबाबा का अपना अनुभव लिखते हैं कि–

''14 मार्च 1975 शुक्रवार का एक दिन था। मैं गोन्डर (इथोपिया) में भारतीय अध्यापक श्री बिजेन्द्र सिंह के घर पर रूका हुआ था। शाम के वक्त भारतीय राजदूत के लिये एक पार्टी का आयोजन किया गया था। सभी अध्यापकों की ओर से मुझे भी आने के लिये कहा गया। मैं श्री बिजेन्द्र सिंह के साथ पहुँचा। पार्टी वहाँ के एक प्रसिद्ध होटल में थी तथा शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन वहाँ उपलब्ध थे।''

प्रेसनोट –

श्री सिंह ने 15–3–1975 को लिखा है कि –

"आज एडिस अबाबा (इथोपिया) के टी.वी पर मेरा इंटरव्यू लिया गया।"

दुर्घटना – डेब्रीमारकस :–

"एक सच्चा योगी निर्भीक होता है। उसे कोई नहीं डरा सकता।"

ये बात श्री बी0 पी0 सिंह ने सच कर दिखाई। वे लिखते हैं कि –

"आज 18–3–1975 को सुबह मैं प्रोफेसर के0 पी0 अय्यर (दक्षिण भारतीय) जो इथोपिया में रहे थे, के घर से प्रस्थान किया। सम्पूर्ण दिन यात्रा करने के बाद सूर्यास्त के समय 6:30 **P.M** पर रास्ते में लुटेरों ने मेरे साथ बिना कुछ कहे सुने पत्थरों से प्रहार कर दिया। लड़ाई दोनो तरफ से जमकर हुई और करीब 15 मिनट तक चली। चोटें भी दोनों तरफ से काफी आयी। अन्त में एक पत्थर बहुत जोर से आकर मेरे सिर में लगा और मैं क्षण भर में खून से लथपथ हो गया और अन्धकार छा गया तथा कुछ समय के लिये मुझे दिखाई देना बन्द हो गया, मगर इसके बावजूद भी मैं वीरता के साथ लड़ता रहा और अन्त में मेरा कुछ सामान लेकर लुटेरे भागने में सफल हो गये। मैं घटना स्थल से खून से लथपथ पास के एक छोटे से गाँव में पहुँचा और पुलिस को रिपोर्ट लिखवाई। अगले दिन 19 मार्च 1975 को बस द्वारा 'DEBRE-MARCOS' पहुँचा। अस्पताल में जाकर एक दक्षिण भारतीय डा0 द्वारा प्राथमिक चिकित्सा करवाई। डा0 साहिब ने मेरे सिर के बाल काटकर टाँके लगाये। अस्पताल के उपरान्त मैं एक भारतीय अध्यापक के यहाँ पहुँचा, जिसका नाम एस0 के0 बेरी था। मैनें वहाँ दो दिन तक विश्राम किया।"

श्री एस0 के बेरी पटियाला (भारत) के थे। उनको भी श्री सिंह की चोट का बड़ा दुख हुआ। उन्होंने भी उनको अपनी शुभकामनाएँ दीं –

"May God help you in completing your aim. Our best wishes are always with you.

नोट – 18

श्री सिंह ने ईश्वर की सत्ता पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं–

"हम देखते हैं कि ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने के लिये उस तर्क का सहारा लिया गया है जो बुद्धि पर आश्रित होकर मुख्यतः भावना का विषय है।"

कुछ दिनों बाद श्री सिंह की चोट ठीक हो गई तथा सिर के टाँके कटवाने की बात सामने आई। उन्होनें लिखा है कि–

"आज सुबह श्री वर्मा जी के साथ प्रिसिंज हास्पीटल –एडिस अबाबा' पहुँचा। वहाँ पर सिर के टाँक कटवाये और इन्जैक्शन लगवाया। बाद में 'एक्स रे' करवाया। 'एक्स रे की रिपोर्ट के अनुसार सिर में हड्डी के टूटने का सन्देह बताया है जो कि करीब दो महीने में धीरे–2 ठीक हो जायेगी।"

नोट – 19

A - स्वामी विवेकानन्द के कथन को लिखकर श्री सिंह ने समस्त पाठकों को भी ज्ञान का प्रसाद भेंट किया है। उन्होंने लिखा है कि –

"दुख का मुकुट पहनकर ही मनुष्य के समक्ष सुख आकर उपस्थित होता है।'

B - श्री सिंह का ये कथन छन्दोग्य–30 अपने आप में सोचने को मजबूर कर देता हैं जो उन्होंने (Addis Ababa) (इथोपिया) में लिखा है–

"विविध रसों के संग्रह से जब मधु तैयार हो जाता है तो यह भेद नहीं किया जा सकता कि कौन सा रस किस पेड़ से आया है। इसी प्रकार

जब आत्मा सत्य में मिल जाती हैं तो यह भेद नहीं किया जा सकता कि वे कौन-2 से शरीर से आई है।'

C - एडिस अबाबा

श्री बी० पी० सिंह को तो अपनी मन्जिल पानी थी, इसलिये वे Shri S.K. Beri के यहाँ से रवाना हो गये। उन्होंने लिखा है कि–

"आज सुबह 22-3-1975 को श्री एस० के० बेरी, भारतीय अध्यापक के यहाँ से प्रस्थान करके बस द्वारा दोपहार बाद में चौधरी धर्मवीर सिंह के यहाँ पहुँचा। चौ० साहिब बड़ौत के पास बसौली गाँव के हैं और यहाँ पर पिछले नो वर्ष से गणित पढ़ा रहे हैं।'

D - एडिस अबाबा (इथोपिया) में भ्रमण करते हुये श्री सिंह 1 अप्रैल 1975 को एक भारतीय स्कूल में पहुँचे। वहाँ उपस्थित बच्चे उनसे बहुत प्रभावित हुये। श्री सिंह ने उन बच्चों को विश्वभ्रमण से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की। उन्होंने लिखा है कि–

"आज मैंने एक भारतीय स्कूल में विश्व यात्रा के विषय में भाषण दिया।'

टिप्पणी –

इंडियन नेशनल स्कूल –एडिस अबाबा (इथोपिया) के हैड मास्टर जी टी० एम० व्यास, उनके उद्देश्य से अत्यन्त प्रभावित हुए तथा अपनी शुभकामनाएँ दी–

I wish you good luck and happy journey throughout your future journey 'Around the world'.

विशेष –

श्री बी० पी० सिंह ने दूसरी बार अपनी यात्रा की स्थितियों को

देखते हुए शायद यह महसूस किया कि जो कदम उन्होनें उठाया है वह कठिनाई व जोखिम से भरा हुआ है। उन्होने इन परेशानियों से हिम्मत नहीं हारी और उन्हें चुनौती दे डाली। उन्होंनें लिखा है कि –

"अगर इस प्रयत्न में हम मर भी जायें तो भी बुरा नहीं"

नोट – 20

विशेष –

भारतीय ग्रन्थों ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी छाप छोड़ी है। श्री सिंह इस बारे में लिखते है कि–

"कहते हैं कि शोपेनहॉवर की मेज पर उपनिषदों की एक लैटिन प्रति रहती थी और वे सोने से पहले उसमें से ही अपनी प्रार्थना किया करते थे।'

नोट – 21

श्री सिंह भारतीयों से मुलाकात करने का प्रयास उस स्थान पर जाकर अवश्य करते थे, जहाँ पर वह अपनी यात्रा के दौरान पहुँचते थे। इसी क्रम में उनकी मुलाकात रोहतक के चौधरी उदयसिंह से हुई।

उन्होंने लिखा है कि –

"आज मुझे रोहतक के चौधरी उदयसिंह से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री उदय सिंह पिछले कई वर्षो से इथोपिया में अध्यापन कार्य कर रहे है। उनमें पूर्ण भारतीयता विद्यमान है।"

श्री उदय सिंह जी नें उन्हें अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार दीं–

Dear brother,

One day you will achieve greatness. May God help you!

"10 अप्रैल 1975 को श्री बी0 पी0 सिंह की साईकिल यात्रा के बारें में समाचार पत्र "इथोपिया हैरल्ड" ने "ग्लोब ट्राटर क्रासिंग इथापिया आन वाईसिकिल" के नाम से समाचार प्रकाशित किया।"

नोट – 22

श्री सिंह ने भागवत पुराण का एक लेख प्रस्तुत किया है कि–

"जिसका अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण है, जो आत्मा में आनन्द पाता है और जो ज्ञान प्राप्ति के लिये उत्सुक है, उसके लिये घर कारागार नहीं हैं। "जो ईश्वर की उपासना करता है, जो सत्य और ज्ञान में निष्ठा रखता है, धार्मिक कृत्य करता है, दान देता है, वह गृहस्थ होते हुये भी मुक्ति प्राप्त करता है।"

नोट – 23

श्री सिंह की आदिश अबाबा की यात्रा के दौरान श्री अशोक कुमार कथूरिया से मुलाकात हुई। उन्होंने लिखा है कि–

"आज दोपहर का खाना मैने श्री अशोक कुमार कथूरिया के घर खाया। मिस्टर कथूरिया डी0 ए0 वी0 कालेज देहारदून के छात्र संघ अध्यक्ष रहे है।"

B- इसी क्रम में श्री सिंह की मुलाकात एक रूसी सज्जन जिसका नाम V. SHATILOU था तथा वे U.S.S. R.Embassy in Addis Ababa मे कार्य करते है। 2 घण्टे तक उनकी बातचीत होती रही।

C- श्री सिंह की मुलाकात इथोपिया में श्री राजकुमार नेगी से हुई। श्री राजकुमार जी एक अध्यापक हैं तथा श्री बी0 पी0 सिंह ने रात्रि विश्राम उन्हीं के घर पर किया।

नोट – 24

A- श्री सिंह को इथोपिया में HEYAW NEW ASSEFA (Ambassador for India) के KOKA FARM पर उनसे मुलाकात की तथा 2 घण्टे वहाँ विश्राम किया और इथोपिया की वर्तमान दशा पर बातचीत की। उन्होनें श्री सिंह को अपनी शुभकामनाएँ भी दी।

B- रास्ते में हर जगह सब कुछ ठीक नहीं होता, कभी–2 परेशानियां भी आ जाती है। श्री सिंह लिखते हैं कि–

"आज सुबह आदिश अबाबा से चौधरी धर्मवीर सिंह के घर से 'नैराबी' के लिये प्रस्थान किया। जब रास्ते मे चल रहा था तो साईकिल रोककर पासपोर्ट देखने लगा परन्तु पासपोर्ट नहीं मिला। साईकिल वापस मोड़ ली तथा चौधरी धर्मवीर सिंह को पासपोर्ट खोने की सूचना दी और साथ ही 300 **U.S.** डालर के **T.C.** भी गायब हो गये। तब चौधरी साहिब के साथ जाकर पुलिस विभाग में उसकी रिपोर्ट दर्ज करायी तथा इथोपिया के बैक में 300 **U.S.** डालर **T.C.**की रिपोर्ट लिखवाई।'

उसके बाद अगले दिन भारतीय दूतावास से नया पासपोर्ट लिया जिसका नं0 – **J. 99** था"



श्री डी० बी० सिंह व श्री बी० पी० सिंह (इथोपिया)

नोट – 25

A - श्री बी0 पी0 सिंह लिखते हैं कि–

"आज मैंने 140 K.M यात्रा तय करके जंगल में विश्राम किया। आधी रात के बाद एक भयानक स्वप्न देखा जिसे सोचकर कभी 2 अब भी आत्मा की गहराई में उतर जाता हूँ।"

B- श्री सिंह शहर, गाँव और जंगल से होते हुये अपनी यात्रा पर बढ़ते जाते थे, जहाँ जैसा मौहाल होता था, वैसा ही आचरण वो करते थे। एक के बाद दूसरी यात्रा ही उनके जीवन का भाग थी

उन्होंने लिखा है कि–

"आज मैने 215 किमी0 की यात्रा तय करके इथोपिया के एक छोटे से गाँव में रात व्यतीत की।"

विशेष–

क्या मनुष्य सिर्फ दुख उठाने के लिए ही पैदा हुआ है ? इसका जवाब हर व्यक्ति के अनुसार अलग 2 हो सकता है किन्तु एक बात तो सच है कि जो कुछ नया करना चाहते हैं वे दुनियाँ में दूसरे लोगों से कुछ भिन्न कार्य करते हैं। उनके विचित्र कार्य ही दूसरों को दंग कर देते हैं। अब आप श्री सिंह की हालत उन्हीं के शब्दों जानिए–

"एक दिन मैं चला जा रहा था। रास्ते मे भयानक जंगल और कच्चे रास्तों को पार करता हूँ। उस दिन 170 किमी0 की यात्रा करके रात्रि में भूख से पीड़ित होकर निद्रा देवी की गोद में अचेत होकर सो गया।"

श्री बी0 पी0 सिंह इतने दुख सहन क्यों कर रहे थे ? क्या सिर्फ अपने लिये ? नही ! उनका उद्देश्य विश्व भ्रमण व उसकी आर्थिक स्थिति

और विश्वबन्धु की भावना विश्वस्तर पर जागृत करना था ताकि विश्व स्तर पर भारत माता का नाम 'विश्वबन्धुत्व के लिये जाना जा सके।

C - भूखा सोकर भी, अपने परिवार व मित्रों से दूर, ब्रजपाल सिंह हिम्मत नहीं हार रहे थे क्योंकि स्वामी विवेकानन्द के उपदेश उनके प्रेरणा श्रोत बन रहे थे। उन्होंने लिखा है कि –

"आज सुबह 'इथोपिया' के बार्डर से केन्या में प्रवेश किया तथा बार्डर पर साईकिल की 130 स्ट्रलिंग ड्यूटी देकर तथा मोहर लगवाकर 'केन्या' में प्रवेश किया तथा पूरा दिन चलकर 160 मील की यात्रा तय की। श्री सिंह रात्रि विश्राम करके अगले दिन पुनः चल दिये तथा 130 मील की यात्रा साईकिल से पूर्ण की।"

उन्होंने नैरोबी तथा केन्या में आर्य समाज के 5 स्कूल बताये हैं। तीन हायर सेकेन्डरी स्कूल, एक प्राईमरी स्कूल एवं एक नर्सरी स्कूल। केन्या में 5 शाखाएं है।

टिप्पणी –

A- केन्या में 'आर्य समाज सभा' के प्रतिनिधि श्री अछरादास ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी –

"I wish Mr. Brijpal Singh success in his venture and future walk of life. May Almighty God bless him."

B- नैरोबी (केन्या) में श्री सिंह की मुलाकात J.L.F. Dias से 4–5–1975 में हुई। उन्होंने श्री सिंह को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान की–

Dear Mr. Brijpal,

It was a great pleasure to meet you in Kenya in my office having travelled on the way from England on a 'RALEIGH" bicycle. I wish you great success and best of you in Completing

your rest of the journey 'Around the World' and Pray God that you may reach to your home in India safely. Ever my love to your family.

C- श्री बी0 पी0 सिंह भारतीय दूतावास में भी मिलने पहुँचे। वहाँ पर उनकी मुलाकात एयर चीफ मार्शल श्री अर्जन सिंह जी (हाई कमिश्नर–केन्या) से हुई। उन्होंने बी0 पी0 सिंह को अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार दी–

"My best wishes to Shri Brijpal Singh on his trip on a cycle around the world. I wish him success in achieving his aim of bringing peace to humanity."

D- श्री सिंह को शुभकामनाएँ देने वालों में 7–5–1975 को एक नाम और राम्मिलित हुआ जो नैरोबी की रहने वाली मिस कौजी जैक्सन का था। उन्होंने लिखा है कि –

"With best Wishes"

नोट – 26

A- श्री सिंह ने डा0 राधाकृष्णन व एक बौद्व की बातचीत, राजनीति व दर्शन के बारे में इस प्रकार व्यक्त की –

"एक बार एक बौद्व ने डा0 राधाकृष्ण्न से प्रश्न किया कि आदर्शवादी दर्शनशास्त्र और राजनीति, एक ही म्यान में कैसे रह सकती है ? डा0 राधाकृष्णन् ने उत्तर दिया – आप बौद्व है तथा भगवान बौद्व ने कहा है कि राजकाज को अग्नि समझो। शीत लगे तो हाथ सेक लो, भूख लगे तो भोजन पका लो किन्तु उसे गले मत लगाओ, मेरा तो हाल ये हैं कि जितना दूर भागता हूँ उतना ही यह मेरा पीछा करती है। खैरियत यही है कि मैं भागने में इससे सवाया पड़ता हूँ।"

B- श्री सिंह ने अच्छी बातें सभी स्थानों से नोट की हैं। (एशिया की ज्योति – LIGHT OF ASIA), एडविन आरनोल्ड द्वारा लिखित पुस्तक में गौतम बुद्ध ने अपने प्रवचन में कहा है कि –

''तुम स्वंय अपने आप से ही पीड़ित हो तुम्हें दूसरा कोई विवश नहीं करता। ऐसा तुमसे कोई नहीं कहता कि तुम जीवित रहो, अथवा न रहो, चक्र में घूमते रहो। दुख की स्थिति को, आँसुओं की गर्मी को और शून्य की नाभि को गले से लगाये उन्हें चूमते रहो।''

नैरोबी- (NEROBI)

श्री सिंह ने नैरोबी में ही वेदान्त के उपदेश का कितना सुन्दर वर्णन किया है कि –

"We have brains, but no hands. We have the doctrine of Vedant, but we have not the power to reduce it into practice."

श्री सिंह ने केन्या के बारे में अपने विचार प्रकट किये है। वे लिखते हैं कि –

''केन्या पूर्वी अफ्रीका का सबसे प्रगतिशील देश माना जाता है जिसकी राजधानी नैरोबी का जीवन इतना तीव्र है जितना की पाश्चात्य देशों का। जहाँ आधुनिकता का विकास होता है। वहाँ थोड़े बहुत अपराध तो पनप ही जाते है। श्री सिंह जब केन्या के प्रसिद्व बन्दरगाह 'मुमबासा' में थे तब उन्होंने सुना था कि यहाँ बैंक डकैती का ग्राफ ऊँचा है।''

तंजानियाँ- (TANJANIA)

नोट – 27

A- श्री सिंह केन्या से तंजानिया की ओर अपनी यात्रा पर बढ़ चले। उन्होंने लिखा है कि–

"आज मैंने तंजानिया के घने और भयानक रास्तों से होकर 180 किमी0 की यात्रा समाप्त की है।

हमारे ग्रन्थों में ब्राह्मण की परिभाषा इस प्रकार भी दी है। श्री सिंह लिखते हैं कि–

"यज्ञ करने वाला ही ब्राह्मण है तथा चरित्र ही प्रधान यज्ञ है।"

दुर्धटना –

"श्री बी0 पी0 सिंह जी तंजानिया की राजधानी 'दार–एस–सलाम' की एक मस्जिद के बाहर सो रहे थें। 29–5–1975 की बात है। सुबह जब उनकी नींद खुली तो सारा सामान और पैसे चोरी हुए पाये गये। दुख नहीं क्योंकि चोरी खुदा के घर से हुई थी और खुदा के बन्दों ने ही की थी। रिपोर्ट पुलिस 'दार–एस–सलाम' में दर्ज करायी गयी। मुल्जिम तो पकड़ा गया मगर सामान नहीं मिला मगर कोई बात नहीं बाद में इसका पुरस्कार भी ऊपर वाला ही देगा।"

श्री सिंह की साईकिल यात्रा से 'दार–एस–सलाम' में रहने वाले के0 रवल अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने श्री सिंह को 3–5–1975 को इस प्रकार से बधाई दी–

"संघर्ष ही जीवन है। आत्मविश्वास ही ईश्वर विश्वास है। यही सफलता का रहस्य है। परमपिता परमात्मा आपके जीवन के उद्देश्य को सफल करे।

नोट – 28 –

उसी दिन सांयकाल के समय श्री बी0 पी0 सिंह का 5.30 P.M. पर आर्य समाज में प्रवचन हुआ।

दार–एस–सलाम (तंजानिया) में श्री सिंह की मुलाकात श्री एम0 एस0 राठी से हुई। उन्होंने उन्हें छोटे भाई जैसा प्यार दिया और दिल से आशीर्वाद। वे लिखते हैं कि –

"My dear brother,

I am delightful to see you one of my younger brothers in you to undertake the world tour only on cycle. My dear, always have faith in God and remember that "Labour is the self Price" for every thing which is valuable. Pay this price and achieve the greatness." I wish you the best of luck."

नोट – 29

A- श्री बी0 पी0 सिंह जी की मुलाकात वहीं पर श्री सागर शर्मा जी से हुई। वे श्री शर्मा जी के घर गये और उनकी अच्छी आदतों से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने लिखा हैं कि –

''शर्मा परिवार के यहाँ रूक कर मैने भोजन किया। बहुत अच्छा परिवार था और मुझे जाम्बिया में अपने किसी रिश्तेदार का पता भी दिया।''

B - 'दार – एस –सलाम' में श्री सिंह 'आर्य समाज' में आमंत्रित किये गये तथा उन्होंने वहाँ 'कर्मयोग'' तथा अपनी यात्रा के विषय पर 15 मिनट भाषण दिया। उसके बाद 15 मिनट तक सुनने वालों के प्रश्नों का उत्तर दिया।

C - श्री सिंह जब 'दार–एस–सलाम' में रूके हुये थे, उसी समय वहाँ भारत के उपराष्ट्रपति का आगमन हुआ। श्री सिंह ने उस घटना का वर्णन इस प्रकार लिखा है कि –

"आज दार–एस–सलाम में भारत के उपराष्ट्रपति का गोल्डन जुबली हाल में स्वागत हुआ। बाद में जलपान हुआ। इस शुभ अवसर पर मुझे भी आर्य समाज के महामंत्री श्री रावल जी के साथ जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने भी उपराष्ट्रपति जी के दर्शन किए। वे प्रसन्नचित मुद्रा में थे फिर सायंकाल हाईकमिश्नर साहब के घर भी उपराष्ट्रपति और तंजानिया के उपराष्ट्रपति का भोजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। मुझे वहाँ पर भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ।"

D - श्री सिंह की मुलाकात 'दार–एस–सलाम में भारत के ही श्री डी0 एस0 चौधरी से हुई। श्री चौधरी उनके उद्‌देश्य व साहस से बड़े प्रभावित हुये।

E - श्री सिंह का धर्म की उपयोगिता के ऊपर आज सायं 7:45 पर 'स्वामी नारायण मन्दिर' में भाषण हुआ। उस समय श्री राठी जी भी उनके साथ थे।

नोट – 30

A- श्री सिंह अपने दिल में 'दार–एस–सलाम' के लोगों का प्यार व आशीर्वाद लेकर आगे बढ़ते गये। उन्होंने लिखा है कि –

"आज सुबह 'दार–एस–सलाम' से प्रस्थान करके करीब 200 किमी की यात्रा समाप्त की। यात्रा करके सायंकाल एक जंगल के निकट छोटे गाँव के पास पहुँचा तथा वहीं पर रात्रि में सो गया।"

B- एक के बाद दूसरा दिन बीतता गया तथा श्री सिंह भी निरन्तर आगे बढ़ते गये। उस दिन उन्होनें 150 किमी0 की यात्रा समाप्त की तथा इरोंगा में सांय विश्राम किया। अन्जान रास्ता, दोनों ओर घने जंगल, तथा बस्ती का कहीं कोई पता नहीं। ऐसी यात्रा पूजा के समान ही फलदायक होती है।

जाम्बिया- (ZAMBIA)

तंजानिया से जाम्बिया जाते हुए रास्तें में अनेकों कठिनाईयों का सामना करना पडा। श्री सिंह लिखते हैं कि –

"पिछले कई रोज से मैं वहाँ से होकर गुजरता हूँ कि जहाँ न कोई पथ था और न ही कोई पथिक अर्थात पथ बनाने वाला भी स्वंय ही था। उस जंगल में जंगली जानवर भरे हुये थे। कभी पैरों के निशान तो कभी प्रत्यक्ष दिखते थे जानवर। हाथियों के झुण्ड के झुण्ड थे। सांयकाल के समय, मैं जीवन की समस्त आशाऐं त्याग कर स्वंय को भगवान को समर्पित कर निद्रा देवी की गोद में अचेत होकर सो जाता था।"

नोट – 31

श्री बी0 पी0 सिंह जी अपनी मन्जिल की ओर बढ़ रहे थे और वो भी बिल्कुल अकेले। आप सोचिये यदि ऐसी हालत में तबियत खराब हो जाए तो कौन देखभाल करेगा।

जाम्बिया पहुँचते –2 श्री सिंह की हालत खराब होती चली गई। उन्होंने इस बारे में लिखा है कि –

"आज पिछले कई रोज से चलते-2 और सर्दी आदि के कारण बुखार इतना तीव्र हो गया है कि एक कदम भी चलना मुश्किल हो गया है। ऊपर से प्यास अधिक लगती है और फिर तुरन्त पानी पीते ही उल्टी लग जाती है। हालत काफी नाजुक हो गई है।"

लुसाका – (LUSAKA)

हमारे बुजुर्ग कहा करते हैं कि घर से निकल कर घर लौटने तक का सफर कष्ट तथा मुश्किलों से भरा हुआ होता है। सुख तो यात्रा में छाया के समान आता है। श्री सिंह की यात्रा का वर्णन कितना मार्मिक व

अश्रुपूर्ण है, इसे आप भी महसूस कर सकते है। श्री सिंह के ही शब्दों में देखिए–

"बुखार आज और भी तीव्र हो गया है। ऐसा लगता है जैसे प्रांण अभी निकलने वाले है। सर्दी पड़ रही है तथा एक कदम उठाते ही आँखों के सामनें अंधेरा छा जाता है। कई रोज हो गये, खाना खाये हुए। कमजोरी अधिक आ गई है। कोई पास नहीं है, आज पानी पिलाने तक को भी। भगवान महान है, उसने रक्षा की और सरदार महेन्द्रसिंह जी आ गये। वे मुझे अपनी कार में बैठाकर अस्पताल ले गये। डाक्टरों ने मलेरिया बताया और दवाई दे दी।"

नोट – 32

A- अपना दुख हमें बहुत ज्यादा लगता है किन्तु जब दूसरों को अपनों से भी ज्यादा दुखी देखते हैं तो अपना दुख कम लगने लगता है और जीने का सहारा भी मिल जाता है। श्री सिंह के साथ "लुसाका" में कुछ ऐसा ही हुआ। लिखते हैं कि –

'दार–एस–सलाम' में समस्त कपड़े और पैसे चोरी हो गये थे, आज उनकी वजह से बहुत कठिनाई उठानी पड़ी। यह सच है कि ब्रजपाल तूने कपड़े की कमी से कठिनाई उठाई और अनेक रातें सर्दी में व्यतीत कीं और आगे भी करेगा। मगर कम से कम मित्र, गरीबों की ओर तो देख जिनके पास कोई भी कपड़ा नहीं है कम से कम कपड़े खोने के बहाने आज तुझे ये अनुभव तो हो गया। भूलेगा तो नहीं ! नहीं भूलुँगा। जीवन के अन्तिम दिन तक याद रखूँगा।"

B- श्री बी० पी० सिंह डा० राधाकृष्णन के इस कथन में कितना विश्वास करते थे कि इतिहास का अध्ययन मानव के लिये कितना आवश्यक है। डा० राधाकृष्णन ने कहा कि –

"मानव के लिये उसके अपने इतिहास से अधिक पवित्र और कुछ नहीं है। कम से कम अतीत के स्मारकों की हैसियत से ही हमें उन पर पूरा ध्यान देना चाहिए।"

C- श्री सिंह दुविधाजनक स्थिति को ठीक नहीं मानते हैं। ये विकास के मार्ग में बाधक हैं। इसका लम्बे समय तक चलता रहना नैतिक पतन का कारण बन सकता है। अतः इस स्थिति से किसी भी व्यक्ति को शीघ्र ही बाहर आ जाना चाहिए।

श्री सिंह लुसाका में भारतीय दूतावास में गये तथा वहाँ हाई कमिश्नर से मिले। कमिश्नर साहिब ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दीं –

"I wish Mr. B.P. Singh, the best of luck in his adventurous trip."

नोट – 33

A- श्री सिंह लुसाका का अपना अनुभव लिखते हैं कि –

"19 जून 1975 का दिन था। जाम्बिया की राजधानी लुसाका की बात है। मुझे भारतीय हाई कमिश्नर श्री के0 श्रीनिवासन ने आमंत्रित किया क्योंकि मैं 18–6–1975 को उनसे मिला था, तब उन्होंने मुझे 19 जून को पार्टी में आने का न्योता दे दिया। मुझे तुरन्त ही निमंत्रण कार्ड दे दिया गया। कार्ड पर छपा था डिप्टी मिनिस्टर श्री विपिनपाल दास के आने की खुशी में यह आयोजन किया जा रहा है। मैं उसमें सम्मिलित हुआ।"

B- श्री बी0 पी0 सिंह ने अपने भ्रमण के दौरान ये पाया कि विश्व में नारी प्रगतिशील विचारधारा वाली होती जा रही है। वे लिखते हैं कि–

"नारी की महानता' का जो अवलोकन मैंने किया है, उसके परिणामस्वरूप भारतीय नारी आज भी संसार में सबसे महान है और सृष्टि के अन्तिम दिन तक रहेगी क्योंकि वह आज भी अपनी मर्यादा में सीमित है।'

लुसाका में श्री सिंह की मुलाकात श्री नरोत्तम परमार से हुई। उसने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी –

"May Shri Ram Krishana bless you with all the success of your ambition in life."

श्री सिंह के आने का समाचार तुरन्त ही समाचार पत्रों को मिल जाता था। वे उनसे सम्पर्क करते थे। उन्होंने लिखा हैं कि –

"आज 22–6–1975 को Times of Zambia **ने मेरी विश्वयात्रा का वर्णन चित्र सहित दिया तथा** T.V. of Zambia **ने** Sports Programme **में मेरी विश्वयात्रा की फिल्म दिखलाई।"**

भारतीय रोमा से श्री सिंह की भेंट हुई। 'सैंट मारीज दे लामेर'। गाँव में 23 और 24 मई को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला त्यौहार। इस त्यौहार में रोमा लोग परिवार सहित काली माँ के दर्शन करने जाते है।

इस काली माँ की मूर्ति का नया नाम "सैंट प्यारा" है। इसको 24 मई को भूमध्यसागर में विसर्जित कर दिया जाता है। रोमाओं के अनुसार 'रोमा' "राम" का ही बिगड़ा हुआ नाम है। खोजकर्ता डा0 जान कोशानोवर के अनुसार, ये उत्तरी भारत के राजपूत है जो पृथ्वीराज चौहान के समय पश्चिमी यूरोप में चले गये थे।

जाम्बिया में 'कापर' (Copper) यहाँ की 85 % आय का मुख्य साधन है तथा इस राष्ट्र में मोटर दुर्घटना जनसंख्या के अनुसार विश्व में सबसे ज्यादा होती है।

नोट – 34

A- श्री बी0 पी0 सिंह जी लुसाका में अपने प्रवास के दौरान वहाँ की प्रसिद्ध चीजों को देखना नहीं भूलते थे। उन्होंने स्वयं ही लिखा है कि –

"आज मैने मिनिस्टर साहिब के साथ 'Victoria Falls' **देखा है जिसकी खोज 1325 में एक यूरोपियन द्वारा की गई थी। कहा जाता है कि यह संसार का सबसे विशाल और अनोखा झरना है।'**

B - उसी दिन सांयकाल श्री सिंह **Victoria Falls** से लौट आये तो उन्हें भारत के दारा सिंह जी की कुश्ती देखने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। उन्होंने उसका भी आनन्द लिया जैसा कि वे लिखते हैं–

''आज शाम मैंने विश्व विजयी दारा सिंह की कुश्ती एक अमेरिकी चैम्पियन के साथ देखी। दारा सिंह ने उसको बहुत बुरी तरह से मारा और फिर विश्व चैम्पियन बन गये।''

श्री सिंह भले ही विदेश यात्रा पर हों किन्तु उनका हिन्दी और अपने देश के प्रति चिन्ता का भाव सदैव विद्यमान रहा। 'लुसाका' में ही उन्होनें अपनी डायरी के पन्नों में इस चिन्ता को इस प्रकार व्यक्त किया –

"चीनी तथा अंग्रेजी के बाद विश्व में हिन्दी भाषा वाले लोगों की संख्या तीसरे नम्बर पर है। भारत के अतिरिक्त मारीशॅस, फीजी, जिमदाद, सुरिनाम आदि ऐसे अनेक देश है जहाँ हिन्दि भाषा बोलने वालों का बाहुल्य है। विश्व में इतनी बडी सख्या होने के बावजूद हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल पाया जो कि मिलना चाहिए था।'

लुसाका में श्री सिंह की मुलाकात श्री आर0 एस0 एस0 वर्मा जी से हुई तथा श्री वर्मा ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार हिन्दी में दी।

"आपकी यात्रा मंगलमय हो। आप विश्वयात्रा के अपने दृढ़ निश्चय में सफल हो। सहस्त्रों शुभकामनाओं सहित।"

नोट – 35

A- श्री सिंह 'लुसाका' में लिखते है कि एक व्यक्ति को स्वयं ही आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए। दूसरों की बातों पर अधिक ध्यान देने से कार्य मे बाधा पहुँचती है। –

"दुनिया क्या कहेगी, ऐसा सोचना ही कमजोरी है। तुम्हें खुद जो अच्छा जान पड़ता है वही करो। जीवन का यही रहस्य है।'

B- श्री सिंह ने अब 'लुसाका' से आगे बढ़नें की योजना बनाई। वे कहते है कि –

"आज शाम को एयर फ्रांस द्वारा जाम्बिया की राजधानी लुसाका से 8:30 पर प्रोफेसर रामस्वरूप वर्मा से अन्तिम नमस्कार करके प्रस्थान किया।"

कामरून– (CAMROON)

श्री सिंह कामरून की एक घटना के बारे में बताते हैं कि–

"कामरून में एक वहीं के व्यक्ति ने जब मुझसे पूछा कि तुम्हारा धर्म क्या है ? मैंने कहा – "हिन्दू तो वह नौजवान बोला, "तो आप जादूगर हैं। मुझे उसके बौद्धिक स्तर पर बड़ा तरस आया। वह एक एयर ऐजेण्ट था।"

श्री बी० पी० सिंह जी निरन्तर आगे बढ़ते जा रहे थे, अब उनका पड़ाव 'लागौस' में था। उन्होंने कम उम्र में अधिक सीखा।

वे लिखते हैं कि–

"लागौस नाइजीरिया आज दोपहर में लागौस के हवाई अड्डे की अनेक औपचारिकताएँ पूरी करके मैं बाहर निकला तो राह चलते दो अपरिचित भारतीय व्यक्तियों से मेरी मुलाकात हो गई। उन्होंने श्रीवास्तव जी, भारतीय संस्कृति के महामंत्री का पता दिया। 2:30 P.M. पर मैं उनके दफ्तर में उनसे मिला और अब उन्हीं के घर पर विश्राम कर रहा हूँ। मुझे बेहद प्रसन्नता है कि उनमें भारतीयता विद्यमान है तथा अगले दिन सुबह नाश्ता करके में भारतीय हाई कमीशन गया।"

लागौस में ही उनकी भेंट अर्जेन्टीना के राजदूत श्री 'डगलस डी0 आलेनो' से हुई तथा उन्होंने भारत की तारीफ की तथा गन्ने की तकनीकी को सराहा।

श्री सिंह की मुलाकात लागौस में श्री बी० एल० द्विवेदी से हुई। श्री द्विवेदी भारतीय नेवी में अधिकारी थे। उन्होंने श्री सिंह को लागौस में आने पर बधाई दी। श्री द्विवेदी बहुआरा (बिगाही) जनपद बलिया (उ0 प्र0) के रहने वाले थे तथा भारतीय हाई कमीशन– लागौस (नाइजीरिया) में कार्यरत थे।

श्री सिंह लागौस में कई कार्यक्रम में भाग लेने पहुँचे। एक कार्यक्रम जो कि जौलाई में हुआ, श्री सिंह को उचित नहीं लगा क्योंकि उस आयोजन में भारतीय सांस्कृतिक संघ के मंत्री श्रीवास्तव जी के साथ उन्हें भी जाने का मौका मिला तथा वहाँ पर गाँधी जी की ताँबे की मूर्ति लगी थी और आयोजन में उसके निकट शराब पी जा रही थी। श्री सिंह ने इसे भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल माना और उसे छोड़ दिया।

नोट – 36

A- श्री बी0 पी0 सिंह ने नाइजीरिया को जी भर के देखा तथा जो देखा, उसका वर्णन इस प्रकार से है। श्री सिंह के शब्दों में –

"जब मैं 'नाइजीरिया' की राजधानी लागौस पहुँचा तो वहाँ का यातायात बहुत भीड़भाड़ वाला मिला। ये बात 11–4–1975 की है। मैं एस० सी० श्रीवास्तव भारतीय सांस्कृतिक संघ के महामन्त्री के घर पर रूका हुआ था। मुझसे मिलने डा0 विनोद कुमार आये। उनकी उत्सुकता इस लिये भी थी क्योंकि मैं 'मेरठ विश्वविद्यालय' का छात्र, विश्व साईकिल यात्रा पर निकला हुआ था तथा डा0 विनोद कुमार भी 'मेरठ' 'मोहनपुरी' के रहने वाले थे तथा उनके पिताजी चौ0 चरण सिंह के साथी रहे हैं। हम लोग बात करते रहे। जब डा0 साहिब चलने लगे तो उन्होंने श्रीवास्तव जी से कहा कि आप कल 12–7–1975 को जब मेरी बेटी के जन्मदिन पर घर आयें तो श्री सिंह को भी साथ ले आयें। अगले दिन हम कार से डा0 विनोद जी के घर चल दिये। रास्ते में यातायात इस कदर था कि गाडी़ 1 घण्टे में 1 या 2 किमी0 ही चल पाई होगी। शाम को 5 से अधिक ही बज गये। नाईजीरिया में जब से तेल निकला है, गाड़ी बहुत बढी़ है। अब ये कहावत है कि 'ये लोग पेड़ पर बैठे थे, और नीचे आकर गिरे तो कार में आकर पड़े।' इसका अर्थ यह है कि यहाँ तेल सस्ता होने के कारण गाड़िया अधिक हैं तथा यातायात प्रबन्ध भी ठोस नहीं है।

अफ्रीका– (AFRICA) -

श्री सिंह 'घाना' (अफ्रीका) पहुँच गये। वहाँ हवाई अड्डे् पर उनकी मुलाकात एक पत्रकार कन्या से हुई। उस लड़की ने उनसे कहा कि आप हमें सुझाव दें कि हम यात्रियों को आकर्षित करने के लिये क्या करें तो श्री सिंह ने उत्तर दिया कि–

"आप एक ऐसा आश्चर्य बनायें जो आश्चर्यों का आश्चर्य हो।"

नोट – 37

श्री सिंह की साईकिल कुछ देर रूकती तो कुछ देर बाद पुनः चलने लगती थी। एक के बाद दूसरा शहर ही नहीं बल्कि देश आता चला

जाता था। देश दर देश उनके अनुभव डायरी के पन्नों मे आते जाते थे।

ब्राजील–(BRAZIL)

इसी क्रम में श्री सिंह 2 अगस्त 1975 को **Rio-de-Janurio-Brazil** ब्राजील जा पहुँचे तथा जो कुछ वहाँ देखा, उसे इस प्रकार लिखा–

''भारत के खुजराहों के मन्दिरों की तुलना रियो–डी–जनूरियों की महान बस्ती 'कोपेकबना' (Copacabana) सदर बाजार और कौपेकबना के बीच से किसी हद तक की जा सकती है तथा जो कुछ मैंने यूरोप में देखा उसने कहीं अधिक रियो में (Rio) पाया है।''

A- 3 अगस्त 1975 को श्री सिहं की मुलाकात 'रियो–डी0–जनूरियो' में एक व्यक्ति से हुई जिसने उन्हें बहुत प्रभावित किया –

''आज मेरी भेंट राधा–कृष्ण के परम भक्त से हुई। उसने मुझे अपने गले में एक सोने की जंजीर दिखाई जिसमें 'राधा–कृष्ण' का नाम खुदा हुआ था।''

B - श्री सिंह कभी –2 किसी भी बात पर भावुक हो उठते थे तब उनकी बातों में एक विशेष गहराई और अर्थ होता था। जैसा कि उन्होंने लिखा है कि–

''भारत की भूमि में कुछ ऐसे तत्व विद्यमान है जहाँ गरीबी के बावजूद भी लोग प्रसन्न रहते है। वो याद करते है कि जब एक लड़की उनके कपडों पर प्रेस कर रही थी तो उसने पूछा, ''क्या पहले भी इसी जगह तुम्हारे कपडों पर किसी ने प्रेस की ? नहीं, और आगे भी आशा नहीं।'' श्री सिंह ने जवाब दिया।''

यदि ब्राजील का जिक्र आयेगा तो भला 'पेले', 'फुटबाल का बादशाह', का जिक्र न आये, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। श्री सिंह ने भी लिखा है कि –

"ब्राजील के युवकों की पहली पसन्द फुटबाल खेलना है। किसी भी कार्य अथवा भोजन तक को वे दूसरे नम्बर पर रखते हैं।"

रिओ (Rio) में श्री सिंह की मुलाकत श्री ए0 के0 मुखर्जी से हुई। श्री मुखर्जी ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दीं तथा उनकी साईकिल से 5 वर्ष मे सम्पूर्ण विश्व यात्रा पर विशेष रूचि भी दिखाई –

"A.K. Mukharjee and Anne liose wish you all success in your landable enterprise."

नोट – 38

श्री सिंह ब्राजील की नव निर्माणाधीन राजधानी 'BARSILA' का एकदम यर्थात चित्रण अपने शब्दों में इस प्रकार करते हैं–

"विशाल इमारतें, वैज्ञानिक रूप से बनी हुई चौड़ी सड़कें, उन पर दौड़ती हुई कारें, नगर के एक और बनावटी झील और उसमें तैरते हुये आधुनिक सभ्यता के बालक, दूसरी तरफ शहर के बीच में जगह–2 पर बने हुये चर्च और उसमें Christ (प्रभू ईसामसीह) की तस्वीर खींचते यात्री तथा नील गगन की छाया में उड़ते हुये वायुयान भारत के चण्डीगढ़ की याद दिलाते हैं, जो बीसवीं शताब्दी का अनोखा नगर है। गरीबों के लिये वहाँ कुछ भी नहीं है। वे एक रात रूकने की कल्पना तक भी नहीं कर सकते हैं।"

A- श्री बी0 पी0 सिंह की मुलाकात ब्राजील में भारत के राजदूत श्री सिंह (नाम स्पष्ट नहीं है।) से 15–8–1975 को हुई। श्री राजदूत महोदय

(भारत) उनकी साहसिक यात्रा से बहुत प्रसन्न हुए तथा उन्हें अपने शब्दों में बधाई दी –

"My wife and I spent an exciting hour listening to Brij Pal Singh adventure on the cycle through Korea and Africa. I advised him to write a book on his adventure. He should highlight the most strong experience. I hope he will send me his book one day.

I wish him all good luck. "

B- इसी क्रम में श्री नरेन्द्र कुमार जी ने अपनी शुभकामनाएँ 15–8–1975 को श्री बी० पी० सिंह जी को अपनी भाषा में इस प्रकार दी है –

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सच्ची लगन व साहस से क्या कुछ नही किया जा सकता। यह आपने कर दिखाया है। उम्मीद है आपका जीवन व संकल्प अन्य नवयुवकों व भाइयों के लिये एक उदाहरण साबित होगा। विश्वास है भारत में पुनः मिलन होगा। पुस्तक की प्रतिलिपि आप भेजें, जो मेरे लिये यह अनमोल रत्न होगी। हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।"

नोट – 39

रास्ते–दर–रास्ते श्री बी० पी० सिंह को कोई न कोई जरूर मिलता रहा जो उन्हें यात्रा के दौरान उत्साहित करता रहा। इसी क्रम में उनकी मुलाकात श्री जितेन्द्रबीर से 15–8–1975 को हुई, जब वे ब्राजीलिया से साओ पाऊलो (SAO-PAULO) की तरफ जा रहे थे।

"We here had the great prevalege of meeting shri Brij Pal Singh. He stayed with us for a few days. We liked his Company very much and wished that he could stay with us for a few days

more. We wish him every success in his mission. We pray almighty God to help him in fulfilling his mission."

A- श्री सिंह के अनुभव यात्रा के दौरान दिन प्रतिदिन बढ़ते गये। ब्राजीलिया से श्री सिंह साओ पाऊलों की ओर प्रस्थान कर रहे थे।

उन्होंने लिखा है कि –

"ब्राजीलिया से साओपाऊलो के बीच लगभग 1000 मील की दूरी थी। रास्ते में कोई भी अंग्रेजी बोलने वाला नहीं मिला किन्तु एक बात बड़ी अजीब देखने को मिली कि **पूरी यात्रा में एक या दो जगह को छोड़कर कहीं भी किसी ने भोजन का कोई भी पैसा मुझसे नहीं लिया।**

हजारों मील तक भी शहर नजर नहीं आये, सिर्फ एक विशाल अन्तर के बाद पैट्रोल पम्प आते थे लेकिन अफ्रीका की तुलना में अधिक आसान है यात्रा करना क्योंकि लुटेरों और जंगली जानवरों का कोई डर नहीं। राह में जितने भी लोग मिले, बहुत अच्छे थे। **कई बार तो मुझसे मिलने और स्वागत करने हेतु सड़क रूक जाती थी।'**

B - श्री सिंह आगे लिखते हैं कि –

"अतिथि सत्कार' में संसार हिन्दुस्तान से बहुत पीछे है। हमारे देश में बिना परिचय के लोग एक दूसरे को आसन देते हैं तथा श्रद्धाभाव उनकी बोलचाल में प्रकट होता है। मैं इतने गाँव, कस्बों और नगरों से गुजरा हूँ और ये हकीकत मैंने महसूस की है।"

C - अपना दुःख अपना आपा ही जान सकता है। दूसरा तो केवल महसूस ही कर सकता है। श्री सिंह की यात्रा में आने वाली कठिनाइयों को हम सब तो केवल महसूस ही कर सकते है किन्तु जब वास्तविकता का पता चलता है तो मन दुख और आश्चर्य से भर उठता है। श्री सिंह के शब्दों में ही देखिए –

"भारत से बाहर जाड़े की रात में भी कितने ही दरवाजे खटखटाने पड़ते है तब कहीं जाकर सोने के लिये स्थान प्राप्त होता है और कई बार बाहर भी सोना पड़ जाता है।'

साओ पाऊलो – (SAU-PAULO)

नोट– 40

श्री सिंह इस प्रकार कष्ट उठाते हुये "साओ पाऊलो" पहुँच ही गये। उन्होंने लिखा –

"एक हजार मील की यात्रा के उपरान्त आज ब्राजीलिया से 'साओ पाऊला' पहुँचा हूँ। दस दिन के उपरान्त 100 मील प्रतिदिन का औसत रहा।"

टिप्पणी –'तारा' नामक एक कन्या भारत भ्रमण पर ब्राजील से आई। उसने यहाँ हिन्दू धर्म ग्रहण किया और योगानन्द जी की शिष्या बन गई। वही शिष्या श्री बी0 पी0 सिंह को ब्रजील में मिली तथा उसने श्री सिंह को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित कीं।

नोट – 41

श्री सिंह आगे बढ़ते रहे। पुराने देश और लोगों को देखने की याद मन में लिए तथा नये देश व लोगों को देखने की जिज्ञासा उन्हें आगे खींच कर ले जा रही थी। उन्होंने लिखा है कि –

अरूगुआ–(URUGUA)

"आज शाम को ठीक 8 P. M. पर ब्राजील से अरूगुआ की सीमा में प्रवेश किया और रात्रि में पुलिस स्टेशन में विश्राम किया। यह रात श्री सिंह को आजादी के दीवानों की याद दिला गई।"

नोट–42

A - श्री सिंह ने लिखा है कि –

"अरूगुआ का समस्त आर्थिक ढ़ॉचा पशुपालन पर आधारित है। कहते है कि 90% आय का साधन "मास" तथा "ऊन" से है। अब सरकार कृषि पर भी ध्यान दे रही है। रास्ते में बड़े –2 फार्म आये जिनमें पशु चर रहे थे। सवार घोड़ों पर जानवरों को घेर रहे थे।"

B - श्री सिंह यात्रा की भयानता व कठिनाई का वर्णन इस प्रकार से करते हैं कि –

"कितनी भयानक है आज की यात्रा। रास्ते का कोई पता नहीं। न जाने आज की रात कहा होऊंगा। कच्चा रास्ता, सामने की हवा, उड़ती हुई घूल और खाने का सामान पास नही। बस्ती भी कोई नजर नहीं आती। डर मत, तुम्हारा विनाश नहीं होगा। शंकराचार्य की पंक्तियों का ध्यान आ गया और उन्हें स्मरण करके चलता रहा।'

C – उससे अगले दिन श्री सिंह को अनेकानेक कष्टों का सामना करना पडा। वे लिखते है कि –

"आज भयानता और अधिक बढ़ गयी। वर्षा के कारण जाड़ा बढ़ गया। शायद शाम होने पर कोई रास्ता निकल आये। विषम परिस्थितियों, असहाय कष्ट और निराशाजनक भावों के भयानक प्रहारों के बावजूद भी आगे बढ़ना मानव का धर्म है।"

श्री बी0 पी0 सिंह कष्टों से आगे बढ़ते रहे तथा इस प्रकार उन्होंने क दूरी तय कर ली। उन्होंने लिखा है कि –

"आज 3500 (तीन हजार पाँच सौ मील) की यात्रा समाप्त की है। जो 16 अगस्त को ब्राजीलिया से प्रारम्भ की थी। इस यात्रा के उतार

चढ़ाव, दुख और सुख, गर्मी और सर्दी तथा भूख औ र· प्यास कभी नहीं भूले जा सकते।''

टिप्पणी – ''मान्टीवीडियो (अरूगुआ) में भारतीय दूतावास के एक अधिकारी ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ यह कहते हुए दी कि **उनकी पुस्तक आने वाली पीढ़ी के लिये एक मार्गदर्शक बनेगी।'**

नोट – 43

A - श्री सिंह अपने क्रम में आगे बढ़ते जा रहे थे। उन्होने एक स्थान पर लिखा है कि –

''आज शाम को ठीक 8 बजे रात्रि को मैंने मौन्टीवीडियो से 'बूमास' जाने के लिसे अर्जेन्टीना सिप द्वारा प्रस्थान किया। टिकट 25 U.S. डालर का था।''

B - श्री सिंह अपनी यात्रा के दौरान जब भी थोड़ा वक्त मिलता था तो अध्यात्मवाद की विचारधारा पर चिन्तन करने लगते थे। उन्होंने लिखा है। कि –

''आत्मा की गहराई में न कोई तर्क है, न कोई घुटन है, न ही कोई रंगभेद है, न कोई भौगोलिक सीमा है, और न कोई अपना पराया है। वहाँ तो परमात्मा है जिसको मानवीय भाषा मे व्यक्त नहीं किया जा सकता है।''

नोट – 44

चिली (Chile) - ''श्री सिंह अर्जेन्टीना में चिली (Chile) की सीमा की ओर बढ़ रहे थे। उसकी सीमा में प्रवेश करके उन्होंने इन्डौस पर्वतों को देखा जो बर्फ से ढके हुए थे। उन्हें स्वामी विवेकानन्द की बात याद आई कि पर्वत उसी व्यक्ति को उपदेश देते है जिसका हृदय कमल खिल

गया हो। सत्य को व्यवहार में लाना अत्यन्त कठिन है। **हमें मालूम है धर्म क्या है किन्तु हम उसके करीब नहीं जाते हैं तथा यह भी पता है कि अधर्म क्या है किन्तु उससे दूर नहीं रह सकते हैं।'**

विशेष – यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से मुलाकात होती है। श्री बी० पी० सिंह की मुलाकात Sintiago (सिन्टिगो) में एक अमेरिकन एयर लाईन्स की हौस्टेस से हुई। उसने श्री सिंह का मार्गदर्शन किया तथा उन्हें भारत के प्रति अपने प्यार को भी बताया। वह गंगा जी में स्नान करने हेतु भारत आना चाहती थी। वह यहाँ की संस्कृति से प्रभावित थी। श्री सिंह ने उसे अपने गाँव का पता दिया ताकि वह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को भी देख सके।

विशेष – सैन्टियागो –

श्री सिहं आगे बढ़ते रहे तथा सैन्टियागो, चिली जा पहुँचे। उन्होंने वहाँ की स्थिति का वर्णन इस प्रकार से किया है कि –

"यहाँ के लोग लखनऊ के नवाबों से तुलना करने के लायक हैं तथा आराम की जिंदगी बसर करते हैं। यहाँ की 90% आय Copper (कापर) द्वारा होती है। अगर कापर बिक गया या उनकी कीमत बढ़ गई तो यहाँ खूब खुशियां मनाई जाती हैं। कृषि यहाँ पर विकसित नहीं है। हजारों मील लम्बे रेगिस्तान और साथ में 'इन्डीज पहाड़' हैं। पानी का कोई साधन नहीं है। कई –2 सौ मील तक गाँव नहीं है, न कोई पक्षी तथा जानवर और न ही हरियाली नजर आती है।"

नोट – 45

श्री सिंह चिली मे भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्ती के यहाँ गये तथा उनसें 'चिली' के बारें में बातचीत की। श्री चक्रवर्ती साहिब ने शाम के

भोजन को आयोजन किया था। एक सज्जन ने कहा कि पूरे यूरोप के नवाब इकटठे होकर 'चिली' में बस गये है। एक जमाना था जब बाजार में बहुत थोड़ा सामान था, अब तो कुछ –2 दिखाई भी देने लगा है।

B - निरन्तर चलते रहना ही श्री सिंह का उद्देश्य बन गया था। वे अपनी यात्रा में आगे बढ़ते रहे। उन्होंने लिखा है कि –

"आज सुबह एक पैट्रोल पम्प से चलकर 110 मील की यात्रा तय की और शाम को एक वीराने जंगल में सो गया, थोड़ा बहुत जो पास था, वही खा लिया। उससे अगले दिन 180 किमी0 की यात्रा पूरी कर एक रेस्टोरेंट में खाना खाया तथा उसके निकट ही सो गया। सुबह उठकर पुनः चल दिया तथा 150 किमी0 की यात्रा की और एक छोटे से गाँव में खाना खाकर रात्रि विश्राम किया।"

C - इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री सिंह लिखते हैं कि –

"आज 120 मील रेगिस्तान मे चला तथा रेगिस्तान में ही सो गया, खाना जो पास था। वहीं खा लिया। सुबह पुनः 100 मील साईकिल चलाई तथा बुरी तरह से थककर रेगिस्तान में ही सो गया।"

श्री बी0 पी0 सिंह को रास्तें में बहुत कठिनाईयो का सामना करना पडा। चिली के रेगिस्तान में उनके कष्टों से आप भी परिचित हों – उन्होंने लिखा है कि –

"इस विशाल रेगिस्तान में चलते –2 मैं थक गया। न पास में खाना रहा और न पानी। रेगिस्तान का कोई अन्त नहीं। 240 किमी0 चल चुका हूँ। अब कोई शक्ति नहीं बची। साईकिल टूट चुकी है। समय भयानक है। कोई आशा नहीं है अब सिवाय मौत के। सोचते –2 लेट गया रेत के ढेर पर। तमाम रात समाप्त हो गई जीवन के विषय में सोचते हुए

और फिर सूर्योदय की लाली छा जाती है। सारा वातावरण शान्त है। एक ओर इन्डीज पर्वत खड़ा है और दूसरी ओर थोडी दूरी पर प्रशान्त महासागर है। तभी आता हुआ एक ट्रक दिखाई देता है। मैंने हाथ दिया, वह महान व्यक्ति रूक गया और मुझे बैठा कर चल दिया, लेकिन कुछ बात नहीं कर सका क्योंकि भाषा अपरिचित थी।'

नोट – 46

पेरू– (PERU)

श्री सिंह ने कुछ दिन स्वास्थ लाभ करके आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने लिखा है कि –

"आज शाम को मैने चिली से पेरू की सीमा में प्रवेश किया और रात्रि 'टैक्ना सिटी' में व्यतीत की।"

नोट – 47

श्री सिंह ने जहाँ जैसा देखा, वैसा लिखा। पेरू के बारे मे श्री सिंह लिखते हैं कि –

"पेरू, पर्वतों तथा रेगिस्तान का एक राष्ट्र है जिसकी आर्थिक स्थिति **Mines** तथा **Fishery** पर आधारित है। यहाँ के लोग गरीब हैं। वे भारत से बहुत प्रेम करते है तथा भारतीय फिल्मों के प्रशंसक हैं। भारतीय दूतावास के एक अधिकारी ने बताया कि यहाँ भूकम्प अधिक आते हैं। ये लोग धार्मिक हैं तथा चर्च जाते है व पुस्तकों में दिलचस्पी रखते हैं।"

B- श्री सिंह इतनी दुनियाँ घूमने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विश्वस्तर पर भारत के समान धार्मिक व अध्यात्मिक राष्ट्र कोई दूसरा नहीं है। विश्व में भारत की बराबरी कोई भी देश नहीं कर सकता।

व्यक्ति अपने कर्म व ज्ञान से सम्मान पाता है। जब चरित्र उसमें मिल जाता है तो वह साधु कहलाता है। ऐसे ही कर्मपुरूष थे श्री ब्रजपाल सिंह जी। उन्हीं के शब्दों में उन्हें जानने का प्रयास कीजिए –

''24 अक्तूबर 1975 की एक सुरम्य संध्याकाल में, मैं पेरू की राजधानी–लीमा के 'योग सैण्टर' पर ''कर्मयोग'' पर व्याख्या देने गया था। उसी समय योग केन्द्र पर एक पाश्चात्य, सुन्दर युवती आई जो जीवन के भौतिक पक्ष से परेशान थी। उसने हिन्दू धर्म धारण कर रखा था तथा भगवतगीता की एक प्रति ले रखी थी। मेरे भाषण समाप्त करने के पश्चात् वह मेरे पास आई और कहने लगी, तुम मेरा कोई हिन्दू नाम रखो। मैंने उसका नाम ''चारूलता'' रख दिया। उसे उपनिषद् की एक पुस्तक भी पढ़ने को दी।'

बाद में ''चारूलता'' के नाम से ही उसने श्री सिंह को उनकी यात्रा के दौरान अनेक पत्र लिखे जो उनका मनोबल बढ़ाने व उनको प्रोत्साहित करने में कामयाब रहे। चारू ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार दी।

"Always, always happiness in your heart."

नोट – 48

A - ''श्री सिंह पेरू के बारे में लिखते हैं कि यहाँ पर बम फटते रहते है तथा सभ्यता भी रूकी हुई है। पैसे के प्रति लोंगो में ज्यादा अनुराग नहीं। मैने वहाँ के सूर्य और चन्द्र मन्दिर देखे तथा उसी दिन सायंकाल रेडियो लीमा पर मेरी वार्ता प्रसारित हुई।''

''अगले दिन मैने चारूलता तथा अगस्तो के साथ एक चर्च और अजायबघर भी देखा जिसमें मुर्दों के सर भी रखे हुए थे जो कि 500 वर्ष

पुराने बताए जाते हैं। मैने एक दूसरा चर्च भी देखा जो 16वी शताब्दी का बना हुआ था।''

B - श्री सिंह ने किस प्रकार से दिन गुजारा यह भी हमें उनके कथन से स्पष्ट होता है। उन्होंने लिखा है कि –

''आज संध्या उपरान्त में 'लीमा' से दूर 'चारूलता' के घर पर फुटबाल का खेल देखने गया जो पूरे 'अमेरिका दीप' का फाईनल था, उस खेल में पेरू विजयी हुआ, कोलम्बिया के साथ ''

''अगले दिन रात्रि को लीमा के योग केन्द्र पर भव्य पार्टी का आयोजन किया गया। मैं उसमें भाग लेने के लिये आमंत्रित था।''

C – ''समय को न रूकना था और न ही वह रूका। कुछ दिन ब्रजपाल सिंह 'पेरू' में रूककर वहाँ का समाचार जानते रहे और फिर वक्त आ गया, उनके आगे बढ़ने का। जैसा कि उनके शब्दों से पता चलता है –

''आज दोपहर का भोजन चारूलता तथा अगस्तो के साथ खाकर मैनें 'पेरू' की राजधानी लीमा से ठीक 2.45 **P.M.** पर इक्वेडर **(Ecqudor)** के लिये प्रस्थान किया।''

इक्वेडर– (IQUADOR)

श्री बी0 पी0 सिंह की साईकिल आगे बढ़ती रही तथा उन्होनें 'इक्वेडर' की सीमा में प्रवेश किया। उन्होंने लिखा है कि –

''इक्वेडर एक छोटा सा राज्य है जिसकी सीमाएं ब्राजील, पेरू, कोलम्बिया तथा पैसीफिक सागर से बंधी हुई है तथा इसकी आबादी लगभग 5 मिलियन है। यह कृषि प्रधान देश है।''

नोट – 48

क्विटा- (QUITA)

"श्री सिंह उस समय क्विटा में थे। वहाँ पर तथा जहाँ –2 भी वे गये उन्होंने 'धर्म व राजनैतिक' समस्याएँ हर देश में पाईं। समस्याएँ होना नया नहीं, व्यक्ति की श्रेष्ठता उन्हें श्रद्धा, ज्ञान और धंयपूर्वक सुलझाने में है।

कोलम्बिया –(COLUMBIA)

श्री सिंह ने आगे लिखा है कि –

"आज 'इक्वेडर' से 'कोलम्बिया' की सीमा में प्रवेश किया और रात्रि में वहाँ के प्रसिद्व नगर Calli "कैली" में एक बस स्टैण्ड पर पुलिस के साथ हिरासत में विश्राम किया।"

टिप्पणी –

A- श्री सिंह की साईकिल यात्रा कोलम्बिया में आ पहुँची। वहाँ उन्होंने भारत के राजदूत श्री मदनजीत सिंह से 17–11–1975 को 'बोगोटा' में मुलाकात की। उन्होंने श्री सिंह को बधाई इस प्रकार से दी –

"It always gives me pleasure to meet people like Brijpal who go round the world in a spirit of adventure and understanding of the different people in or out- the countries. This is the best way to create an atmosphere of peace and understanding among vertuous.

B - श्री सिंह को शुभकामनाएँ देने वालो में श्री वी० के० मनकोटिया भी रहे। उन्होंने 22–11–1975 को अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये –

"It has been a pleasure to meet Mr. Brij pal. We are amazed at his strong will power and Courage. Wish him a very happy journey and hope that he would achieve much name for himself and for his country in future."

नोट – 49

A— श्री सिंह ने लिखा है कि कोलम्बिया को दक्षिण अमेरिका का 'यूनान' कहा जाता है तथा उसे 'बर्फ का देश' के नाम से भी पुकारा जाता है। वहाँ उन्होनें 'स्वामी सत्यानन्द आश्रम' को भी देखा तथा उससे प्रभावित हुए।

B – श्री सिंह के ह्रदय की वेदना उस समय झलक उठी जब वे 'बगोटा' से 'पनामा' के लिए 'हवाई यात्रा' के माध्यम से चले। उन्होंने लिखा है कि –

"आज युद्व नैतिक आधार पर होगा। इससे बढ़कर अनैतिक और क्या हो सकता है कि पहले तो वीजा दिया और अब वे ही कह रहे है कि आपको 'बगोटा' जाना होगा।"

कौस्टारिका (COSTARICA)

C- श्री सिंह पुनः अपनी यात्रा के बारे में लिखते हैं कि–

"आज 7 A.M. पर कोलम्बिया की राजधानी बगोटा से SAM AIRLINE द्वारा कौस्टारिका की राजधानी सन्जोस पहुँचा। उसी समय वहाँ एक युवक मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ फिर कहने लगा कि यदि आप उचित समझें तो मेरे साथ विश्राम कर सकते है। मेरे पास खाने का सभी प्रबन्ध है। वह एक अमेरिकन था तथा उसने अपना पता भी मुझे दिया।"

श्री सिंह ने (कास्टारिका) के बारे में लिखा है कि –

"कोलम्बस ने कास्टारिका की खोज 1502 में की। सैण्ट्रल अमेरिका का यह एक धनी देश है। वहाँ के लोगों का जीवन स्तर पर भी अच्छा है।"

टिप्पणी – **सैनजोस–** (SANJOSE)

'सैनजोस' में श्री सिंह एक परिवार से मिले जो उनसे मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। जिम बरनई लिखते हैं कि –

"We are very pleased to have you in our home anytime for as long as you stay. We enjoy your visit very much."

नोट 50–

निकारागुआ– (NICARAGUA)

A— अगले दिन उस परिवार से विदा लेकर श्री सिंह निकारागुआ (सैण्ट्रल अमेरिका) के लिये चल दिए। उन्होंने लिखा हैं कि –

"निकारागुआ एक गरीब व पिछड़ा देश है तथा स्पेन वाले वहाँ 1502 में पहुँचे। स्पेन से ये देश 1821 में स्वतन्त्र हुआ। 1972 में वहाँ एक भयानक भूकम्प आया आर लगभग 10000 व्यक्ति उसमें समाप्त हो गये। ये हादसा वहाँ की राजधानी 'मनागुआ' में हुआ। सम्पूर्ण सैण्ट्रल अमेरिका लगभग एक अर्द्धविकसित राष्ट्र के समान है तथा यू0 एस0 ए0 की देखरेख में कार्य कर रहा है।

होन्डोरस– (HONDORAS)

B- श्री सिंह निकारागुआ से होन्डोरस (सेन्ट्रल अमेरिका) पहुँचे। होन्डोरस को "चांदी" तथा "कृषि का देश" कह कर पुकारा। 'होन्डोरस' 'स्पेन' से 1821 में स्वतंत्र हुआ।

C- आगे बढ़ने का क्रम जारी रहा तथा श्री सिंह 'होन्डोरस' से 'एल–साल्वीडर' पहुँच गये। उन्होनें 'एल–साल्वीडर' को "आभूषण का देश" कहा

गुटामला- (GUTAMALA)

D- श्री सिंह वहाँ से आगे बढ़ते हुए पहुँचे। 'गुटामला' '(Gutamala) ड्रामेटिक सुन्दरता' की भूमि है। स्पेनिश से पूर्व 'गुटामला 'माया इन्डियन' का घर और देश था। 1523 में स्पेनिश वालों ने जबरदस्ती इस पर कब्जा कर लिया। 1821 में स्पेनिश से मुक्त हो गया तथा मैक्शिकों (Maxico) का हिस्सा बन गया और 1839 में पूर्ण रूपेंण आजाद हो गया।

श्री सिंह एक देश से दूसरे देश तक जाते रहे। उन्हें सभी प्रकार के लोग मिलते थें। सभी उनसे 'भारत' व अन्य देशों के बारे में प्रश्न पूछते थे। उनके मन में जिज्ञासा होती थी। वे जानना चाहते थे कि भारत के लोग शाकाहारी क्यों है। वहाँ धर्म और योग का क्या महत्व है। 'ऊँ' शब्द का क्या अर्थ है। अमेरिका कें एक वैज्ञानिक ने पूछा कि आत्मा कहाँ है लीमा की लड़की चारू ने पूछा कि भारतीय और पाश्चात्य नारी में क्या अन्तर है तथा सबसे ज्यादा पूछा जाने वाला प्रश्न था कि संसार में सबसे महान राष्ट्र कौन सा है।

नोट 51 –

A- ये बात सच है कि यात्रा, शिक्षा और अनुभव दोनों प्रदान करती है।" ये बात श्री सिंह पर ठीक उतरती है क्योकि उनका अनुभव यात्रा के साथ –2 बढ़ता जा रहा था। उन्होंने लिखा है कि –

"इस संसार में हर चीज का एक महत्व है, एक अर्थ है। बुरे और भले दोनों ही प्रेरणा के श्रोत हैं। यदि ये संसार इतना ही बुरा है तो भगवान को इसकी रचना करने की आवश्यकता ही क्या थी। जो भी भिन्नता दिखाई देती है, वह सिर्फ हमारी दृष्टि में है।"

B - श्री सिंह ने गुरूनानक के उपदेश को कितने सुन्दर ढंग से पेश किया है। आप भी देखिए –

"अन्धा वह नहीं जिसके आँखे नहीं है वरन् अन्धा वह है जो प्रभु के बताऐ मार्ग से भटक गया है।"

C - श्री सिंह ने 'गाँधी जी' के एक संस्मरण को जो उनकी 'दक्षिण अफ्रीका' की यात्रा के बारे में उनकी सोच को प्रकट करता है। इस प्रकार से कहा है –

"मैं दक्षिण अफ्रीका गया तो था अपनी आजीविका कमाने किन्तु मैंने अपने को ईश्वर की खोज और आत्मदर्शन के लिये प्रयत्न करता हुआ पाया। मुझे अनुभव हुआ कि एक आत्मसम्मानी व्यक्ति (भारतीय) को दक्षिण अफ्रीका में नहीं रहना चाहिए और मेरा मस्तिष्क इसी प्रश्न को हल करने में लगता गया कि वहाँ की दशा को कैसे सुधारा जाए।"

D- श्री0 बी0 पी0 सिंह ने कितने सुन्दर शब्दों में 'एक सफल व्यक्ति' की पहचान व्यक्त की है –

"इस संसार में उन व्यक्तियों के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है, जो अपनी धुन के पक्के है, जिनके शरीर का निर्माण फौलाद के टुकडों से हुआ है और अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जिनका मानसिक संतुलन भंग नहीं होता है।"

श्री सिंह के शब्दों में कभी –2 इतनी अधिक मार्मिकता होती थी कि उसकी वेदना उनके होठों तक आ जाती थी। वे राजनीति के बारे में इस प्रकार से लिखते हैं कि–

"मेरे हृदय में ऐसी सरकार के लिये न तो कोई श्रद्धा रह सकती है और न भक्ति जो अनैतिकता को कायम रखने के लिये गलती पर गलती करती जाए। मेरी दृष्टि में बुराई के साथ असहयोग करना ठीक वैसा ही धर्म है जैसा कि अच्छाई के साथ सहयोग करना।"

नोट – 52

दिसम्बर समाप्ति की ओर था। अन्तिम तारीख 31–12–1975 आ चुकी थी। श्री सिंह का हृदय कुछ इस प्रकार कह रहा था –

"जो कुछ भी इस डायरी के पन्नो पर लिखूँगा, वह अन्तिम नहीं होगा, अन्तिम लिखने के लिए तो मुझे गहन बौद्दिक एवं नैतिक अनुभव से काम लेना होगा।"

भाग –4

चतुर्थ डायरी

मैक्सिको सिटी (अमेरिका) से मनीला

Mexico City (America) to Manila

1-1-1976 से 3-12-1976 तक

श्री बी0पी0 सिंह जी ने अपनी साईकिल पर भ्रमण करते हुये बर्ष 1975 को भी पीछे छोड़ दिया। उन्हें तो देश का गौरव बढ़ाते हुये अपनी मंजिल को पाना था। श्री बी0पी0 सिंह ने कितने कष्ट उठाकर वर्ष 1975 की यात्रा पूर्ण की, ये तो आप पढ़ ही चुके हैं। अब उनके कार्य व यात्रा 1976 में कैसे रहे, आप स्वयं ही पढ़ लें।






एक सच्चे यात्री व सन्तस्वरूप अवस्था में

नोट – 1

मैक्सिको सिटी- (MEXICO CITY)

A— वक्त चलता गया। श्री बी0 पी0 सिंह अपनी साईकिल पर उसे पकड़ने का प्रयास करते रहे। श्री सिंह भाग रहे थे, कभी वक्त के साथ तो कभी वक्त से कुछ पीछे। उनका समय के साथ चलने का पूरा प्रयास था तथा इसी प्रयास को पूर्ण करते –2 दो वर्ष से अधिक का समय हो चुका था और फिर आ गया वर्ष 1976। 1 जनवरी 1976 के दिन श्री सिंह मैक्सिको सिटी में थे। उन्होंने लिखा है कि –

"आज का पूरा दिन मैक्सिको सिटी के एक ग्रान्ड पार्क में व्यतीत किया। प्रकृति की सम्पूर्ण वास्तविकता पर गम्भीर रूप से चिन्तन किया। आखिर ये कहाँ से जन्मी है, और कहाँ इसका अन्त है।"

B – श्री सिंह धर्म को और संस्कृति को मानव जीवन मे अति आवश्यक मानते थे। धर्म के बिना मनुष्य की क्या हालत है। ये उन्हीं के शब्दों में देखिए –

"बिना धर्म और संस्कृति (सभ्यता) के मनुष्य जंगली पशु के समान हो जाता है।"

श्री बी0 पी0 सिंह ने अपनी यात्रा एक जुनून और उत्साह में शुरू की थी जो अन्त तक उनके साथ रहा, किन्तु इस सच्चाई को भी श्री सिंह ने स्वीकार किया कि बिना मार्ग दर्शन के कठिनाई तो आती है। उनके शब्दों में स्थिति स्पष्ट है –

"बिना किसी निर्देशन के यात्रा करना संसार में कोई बच्चों का खेल नहीं है।"

नोट – 2

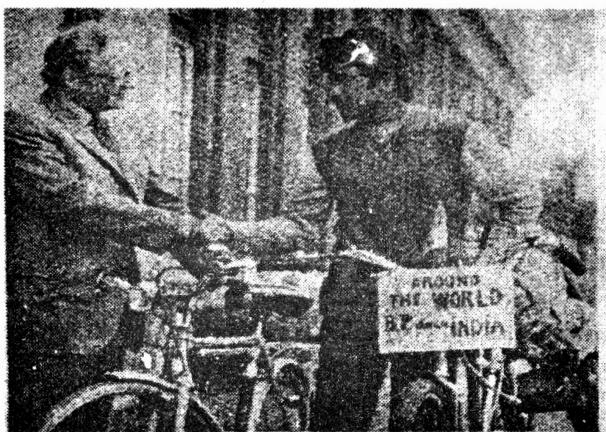
A— श्री सिंह बताते है कि मैक्सिको में 'बुल फाईटिंग' सबसे प्रसिद्व खेल है। उनका यह भी मानना है कि एक व्यक्ति अपना लक्ष्य तभी प्राप्त कर सकता है जब वह पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो।

यू० एस० ए०– (U.S.A)

B - 5 जनवरी 1976 की सुबह अपने आप में एक विशिष्ट स्थान लिए हुए थी, क्योंकि –

"आज सुबह मैंने (श्री सिंह) मैक्सिको से यू0 एस0 ए0 की सीमा में प्रवेश किया है।" 6–1–1976 को वे अपने एक अमेरिकन मित्र से मिले।

C – 7 जनवरी 1976 को दोपहर बाद श्री बी0पी0 सिंह को एक नई 'रेलिग' (Raleigh) साईकिल ब्राऊँसविला (यूं0 एस0 ए0) Brownsville–(U.S.A) में उपहार स्वरूप दी गई।



Brijpal Singh collects his new bicycle from Ken Collins, Export Director. His new "Snipe" has ten gears — which is ten more than his two previous cycles have had.


Next stop after Nottingham — Scotland, before going to the Iron Curtain countries.

होस्टन– (HOSTAN)

D – 8 जनवरी 1976 को श्री सिंह ने "हौस्टन" के लिए प्रस्थान किया तथा 90 मील साईकिल चलाने के उपरान्त एक गाँव मे विश्राम किया तथा अगले दिन सांयकाल 'महाराजा निवास' पहुँचे।

नोट – 3

श्री सिंह लिखते हैं कि प्रत्येक देश के नागरिक उनकी यात्रा को उत्सुकता पूर्ण ढ़ंग से लेते थे तथा दूसरे देशों के बारे में जानने को उत्सुक रहते थे। वे बताते हैं कि –

"आज सुबह 'होस्टन' के समाचार पत्र ने मेरी साईकिल यात्रा के विषय में खबर छापी। उसके बाद मैंने भारतीय हिन्दू धर्म मंदिर एवं सिख गुरूद्वारे का भ्रमण किया।"

सायंकाल का भोजन डा0 एस0 पाठक के घर खाया। भोजनोपरान्त जब अपनी यात्रा की कहानी सुनानी प्रारम्भ की तो उनकी पत्नी भावुक होकर रो उठी। बाद में डा0 साहिब ने "हास्टन मैडिकल इन्सटीट्यूट" दिखाया।

'होस्टन' (टैक्सास) में श्री सिंह की मुलाकात 13 जनवरी 1976 को श्री एस0 बालासुब्रहमनयम से हुई। उन्होंने श्री सिंह को इस प्रकार बधाई दी–

Brijpal,

You are a very fascinating and interesting person. Prabha, Sri Kant and I am very happy that "you visited us in 'Houston'. We wish you all the success during the remainder of your bicycle trip.

नोट – 4

श्री सिंह लिखते हैं कि 'हॉस्टन' में उनको मुजफ्फरनगर (उ0 प्र0) के एक गाँव 'फीमपुर' निवासी युवा डा0 जगतसिंह मिले। श्री सिंह ने उनके व उनकी अमेरिकन महिला मित्र के साथ भोजन का आनन्द लिया।

ब्रेन्हम – (BRENHEM)

श्री सिंह ने 14 जनवरी 1976 को 'होस्टन' से चलकर ब्रेन्हम में रात्रि विश्राम किया। उनके रात्रि विश्राम का प्रबन्ध 'लायन्स क्लब' ने किया।

अगले दिन श्री बी0 पी सिंह पुनः अपनी साईकिल से चल दिए। रास्ते में पत्रकारों ने उन्हें घेर लिया। उसी समय एक स्कूल अध्यापिका ने उन्हें देखा तो अपनी कार रोक ली तथा उनके पास आकर कहा, "क्या आप मेरे साथ मेरे स्कूल चल सकते हैं ? वहाँ पर बच्चे आपको देखकर बहुत खुश होंगे। आप उन्हें अपने अनुभव व आने का उद्देश्य बताएं।" मैं उनके साथ स्कूल में गया। जब मैं बच्चों को सम्बोधित कर रहा था, तब वे बहुत खुश थीं।

वहीं पर श्री सिंह की मुलाकात सी0 दिनकर राव से हुई। श्री दिनकर जी ने उन्हे अपने व अपने परिवार की ओर से अपनी "साईकिल यात्रा" के उददेश्य में सफल होंने हेतु शुभकामनाएँ अर्पित की।

आस्टन– (AUSTAN)

'आस्टन' ने अपने भ्रमण के दौरान श्री सिंह को दो लड़कियाँ (रजनी बी० पटेल तथा उषा आर० पटेल) मिलीं जो भारतीय थीं। उन्होंने श्री सिंह को अपनी शुभकामनाएँ दी।

"We deeply admire your understanding of great Courage and adventure. Our good wishes and Prayer will always be towards the fulfilment of your goal."

17 जनवरी 1976 को श्री सिंह ने 'जौन्सन सिटी' के एक होटल मे विश्राम किया जिसका खर्च वहाँ के एक चर्च ने दिया। यह नगर यू0 एस0 ए0 के प्रेसीडैण्ट के नाम पर बसाया गया है।

नोट – 5

हॉलीवुड – (HOLLYWOOD)

श्री सिंह की साईकिल चलते –2 चलचित्र के लिये विश्वप्रसिद्व स्थान "हालीवुड" जा पहुँची। वहाँ वे एक 'सिख टेम्पिल" में रूके तथा विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई तथा "यूनिवर्सल स्टूडियो" भी देखा।

लॉसएन्जिल्स – (LOSANGELS)

24 जनवरी 1976 का दिन था। श्री बी0 पी0 सिंह को लांस एन्जिल्स के एक चर्च में व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने धर्म, दर्शन तथा यात्रा के अनुभवों पर प्रकाश डाला।

लॉसएन्जिल्स' में श्री सिंह की मुलाकात "विलियम एच0 डी0 होरनाडे" से हुई जो गाँधी, नेहरू एवं डा0 राधाकृष्णन से मिल चुके थे। डा0 साहिब ने बताया कि भारत को समझना 'वैस्ट वालों के लिये आसान नहीं है। भारत एक महान राष्ट्र है और बेहद शक्तिशाली है।

'लॉसएन्जिल्स' में श्री सिंह का मनोबल 'श्री मनसुखलाल राजा' ने इन शब्दों के साथ बढ़ाया –

"भाई ब्रजपाल सिंह, भगवान आपका ज्ञान और अनुभव बढ़ाये। मुझे आपको साहसिक यात्रा करते देखकर अत्यन्त गर्व महसूस हो रहा है।"

नोट – 6

कैलीफोर्निया– (CALIFORNIA)

श्री सिंह चलते 2 'कैलीफोर्निया' (यू0 एस0 ए0) जा पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात 'लार्ड विकर स्मिथ' जो 'न्यू हैम्पशायर' लॉस एन्जिल्स

कैलीफोर्निया में रहते थे, से हुई। श्री स्मिथ उनसे बात करके बहुत प्रभावित हुए तथा उनसे व्याख्यान करने के लिये कहा यह पूछते हुए कि आप बोलने के लिये कितने पैसे लेंगे। श्री सिंह ने हँसते हुए उत्तर दिया कि बोलने की कोई फीस नहीं, मुफ्त बोलेंगे। यह सुनकर वह बहुत प्रभावित हुए।

नोट – 7

A- ये बात 28 जनवरी 1976 की है। श्री सिंह ने आज हॉलीवुड में 'विवेकानन्द आश्रम' का भ्रमण किया। वहाँ उन्हें स्वामी चेतानन्द जी मिले, उन्होंने बताया कि स्वामी विवेकानन्द एक दिन यहाँ 'कृष्ण' और 'खाईस्त' की भाँति स्थान ले लेंगे। इस सन्यासी का सम्पूर्ण संसार में ही असर है।

B - श्री सिंह 29 जनवरी 1976 के डिजनीलैण्ड का अनोखा वैज्ञानिक संसार देखा। ये परीलोक जैसा तो है साथ ही साथ धन बनाने का भी स्थान है तथा बच्चों के खेलने का अच्छा स्थान है।

श्री सिंह ने पश्चिमीकरण के प्रभाव को देखकर जो अनुभव किया, वह इस प्रकार है –

"शराब पीने से, अत्यधिक **T.V.** देखने से, अधिक काम करने से तथा होटलों में देर रात तक नाचने व खाने से किसी भी व्यक्ति की चिन्तन शक्ति घट जाती है।"

नोट – 8

A- श्री सिंह अपना अनुभव हमेशा लिखते रहे। उन्होंने लिखा है कि–

"एक बार वे 6 जून की रात को अमेरिका में एक व्यक्ति से रास्ता पूछ रहे थे, उसने उन्हें अपनी कार में बैठा लिया तथा अपना 'इजराइल' में कुछ समय रहने का अनुभव श्री सिंह को सुनाया कि उसे ईसाई होने

के कारण वहाँ के लोगों ने पीटा तथा वहाँ से भगा दिया। वह बढ़ई का काम करता था। उस व्यक्ति ने कहा कि किसी भी देश की संस्कृति वहाँ के लोगों की सभ्यता पर निर्भर है कि वे दूसरों से कैसा सलूक करते है।"

सनजोस- (SANJOSE)

श्री सिंह की मुलाकात "सन्जोस" (अमेरिका) में एक कम्बोज परिवार से हुई। श्री राकेश व विनोद काम्बोज 'सन्जोस' में रह रहे थे। उनका परिवार श्री सिंह की हिम्मत देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ।

प्रेस –

श्री सिंह के आने की सूचना पत्रकारों को जल्द ही मिल जाती थी। ऐसा ही सन्जोस' में हुआ। उन्होंनें लिखा है कि–

आज 'सनजोस' (कैलीफोर्निया) टी0 वी0 पर मुझसे दो प्रश्न पूछे गये–

एक आपकी यात्रा का उद्देश्य क्या है ? तथा दूसरा – कि आप अमेरिका के बारे में क्या सोचते हैं ?

नोट – 9

श्री सिंह 18 फरवरी 1976 को अपने एक अमेरिकन मित्र, जो उन्हें अफ्रीका में मिला था, के साथ एक 'डेरी फार्म' पर गये।

वहाँ श्री सिंह ने डेरी वाले से उसका खर्च तथा आमदनी पूछी तो उनका मित्र बोला कि यहाँ पर ऐसी बात नहीं पूछी जाती, यही यहाँ का रिवाज है।

कैलीफोर्निया- (CALIFORNIA)

19 फरवरी 1976 का दिन था। श्री सिंह को आगे बढ़ना था। तभी श्री राकेश काम्बोज कार लेकर आ गये। उन्हीं की कार द्वारा श्री सिंह "सनजोस से डारलैण्ड" (कैलीफोर्निया) पहुँचे तथा वहाँ बाबा मुक्तानन्द के आश्रम में उनसे मुलाकात की।

उससे अगले दिन श्री सिंह अपने एक अमेरिकी मित्र के साथ कैलीफोर्निया के विशाल वृक्ष देखने गये जो 5000 वर्ष पुराने हैं। वृक्ष बहुत आश्चर्यजनक हैं।

प्रेस –

श्री सिंह के बारे में 21–2–1976 को 'सन फ्रॉसिसको' Chronicle News Paper ने विस्तार से लिखा तथा उनकी यात्रा का उद्देश्य व अन्य बातों की जानकारी ली।


BRIJ PAL SINGH
'Nothing is impossible'

नोट –10

श्री सिंह ने अमेरिका में 5 मार्च 1976 को लिखा है कि विश्व के दूसरे देशों की तुलना में यहाँ पर अशान्ति कुछ ज्यादा है। 'काले तथा गोरे' के मध्य भेदभाव बना हुआ। सुरक्षा का आभाव है।

शिकागो– (CHICAGO)

10 मार्च 1976 की तारीख आ गई। श्री सिंह शिकागो में भारतीय दूतावास के अधिकारी श्री ए0 सी0 बागची, VICE CONSUL OF INDIA, मिले। श्री बागची उनकी साईकिल यात्रा से बड़े प्रभावित हुए और अपना आशीर्वाद उन्हें इस प्रकार दिया –

"Shri Brij Pal Singh has experienced an adventure inconceivable and most thrilling. I really don't know how he did it. Perheps his complete faith in God and Swami Vivekanand has taken him through hazards and the world revealed to him as one and man everywhere as one family. God bless him."

नोट – 11

11 मार्च को श्री सिंह स्वामी विवेकानन्द जी के मंदिर का भ्रमण करने निकले जो शिकागो के हेडी पार्क में बना हुआ है।

उससे अगले दिन श्री सिंह 'शिकागो' के 'आर्ट इन्सटीट्यूट' में गये। उन्होंने लिखा है कि --

"यह उन्नीसवीं शताब्दी में विश्व धर्म के लिए बनाया गया था। बाद में 'आर्ट इन्सटीट्यूट' में बदल दिया गया। यह वही हाल है जो 1893 में स्वामी विवेकानन्द जी 'विश्व धर्म सम्मेलन' में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए भारत से आये थे और समस्त मानवता को ज्ञान और प्रेम तथा एकता का संदेश दिया था।"

नोट –12

A- श्री सिंह शिकागो में एक पुरातन संग्रहालय देखने पहुँचे। उसमें एक विशाल जानवर (डायनासौर) की हड्डियों का ढाँचा रखा हुआ था जिसकी लम्बाई 72 फीट और वजन 30 टन था व लिखा हुआ था – 140 मिलियन वर्ष पुराना।

B – 17 मार्च 1976 का दिन था। श्री सिंह 8 बजे रात्रि में शिकागो में भारतीय छात्रों को व्याख्यान देने पहुँचे जिसके अध्यक्ष अनिल अम्बेगाँवकर

थे। अधिकतर छात्र **Ph.D** आदि कर रहे थे। उन्हें अपना विद्यार्थी जीवन याद आ गया। रात्रि का भोजन छात्रों के साथ खाया।

शिकागो में श्री सिंह को श्री डी0 सिंह तोमर व श्री श्याम लाल गुप्ता मिले। श्री सिंह ने श्री गुप्ता जी के यहाँ सायंकाल का भोजन किया। तथा 'हरे कृष्णा टेम्पिल' देखा। श्री डी0 सिंह जी बुलन्दशहर जनपद के अरनिया (मौजपुर) गाँव के रहने वाले थे। श्री डी0 सिंह जी ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ अर्पित की।

श्री सिंह कभी –2 दार्शनिकों जैसी बात करने लगते थे। उनकी बातें उच्चस्तरीय हुआ करती थीं। उनकी बातें लिखने और सोचने का ढंग देखिए –

''संसार का यह कार्य नहीं कि हमें पहचाने, बल्कि यह हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि हम संसार को जाने कि वह क्या है ?। अपने आप को जाने कि हम क्या हैं ? तथा भगवान को जाने कि वह क्या है ?''

व्हाइट हाऊस– (WHITE HOUSE)

अमेरिका में घूमते हुए श्री सिंह ''व्हाईट हाऊस'' जा पहुँचे। उन्होंने लिखा है कि –

''आज सुबह व्हाईट हाऊस में लिंकन व वाशिंगटन के यादगार चित्र देखे तथा फोटो खींचे तथा व्हाइट हाऊस के सामने हरे कृष्णा ग्रुप वालों से भेंट हुई तथा भारतीय दूतावास में समाचार आदि की व्यवस्था की गई।''

नोट – 13

वाशिंगटन- (WASHINGTON)

श्री सिंह वाशिंगटन में थे। वही पर उनकी मुलाकात 'सूरज कुमार ज्ञानी' से हुई। श्री ज्ञानी उस समय कैथोलिक विश्वविद्यालय में भारतीय छात्रसंघ के अध्यक्ष थे। उनकी आदत व व्यवहार बहुत अच्छा था।

किन्तु दूसरी ओर वहीं पर उनको 'डा0 दर्याब सिंह खत्री' मिले जो पूरी तरह से पाश्चात्य शैली में डूबे हुए थे।

''श्री0 बी0 पी0 सिंह 'वाशिंगटन' में रहते हुए भी राष्ट्रहित की बात ही करते रहे। ''भारत'' के प्रति उनका प्रेम व आदर उच्चस्तर तक बना रहा। उन्होंने बार –2 लिखा है कि किसी भी देश की संस्कृति भारतीय संस्कृति की तुलना में कहीं नहीं ठहरती है। भारतीय आदर्श और सिद्धान्त दिल' और दिमाग' को शान्ति प्रदान करते है।'

नोट – 14

श्री सिंह सभी को अपना बनाकर तथा साथ लेकर चलने में विश्वास रखते थे। उन्होंने पहले पड़ोस, फिर गाँव, उसके बाद तहसील, जनपद, मण्डल, राज्य और अन्त में सम्पूर्ण देश व विश्व को अपनाने की अपील की है।

उन्होंने गोथे के कथन को स्पष्ट किया है कि –

''जो एक भाषा जानता है। वह वस्तुतः कोई भाषा नहीं जानता।''

धर्म के विषय में उन्होनें डा0 राधाकृष्णन की बात को लिखा है कि–

''हम स्वयं अपने धर्म को तब तक नहीं जान सकते, जब तक कि उसकी अन्य किसी एक या अनेक धर्मों से तुलना न कर सकें।''

श्री सिंह लिखते हैं कि–

''4 अप्रैल 1976 को वाशिंगटन में 12.30 P.M. पर ''भारत वाणी प्रोग्राम'' पर 15 मिनट को मेरा कार्यक्रम रखा गया।''

न्यूयार्क- (NEW YORK)

श्री सिंह 14 अप्रैल 1976 को 'न्यूयार्क' पहुँचे तथा भारतीय दूतावास के अधिकारियों से मिले। श्री ए० जी० असरानी ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ इस प्रकार से दी–

"I admire shri Brij Pal Singh`s Courage and spirit of adventure. I wish him all the best."

नोट – 15

"श्री सिंह को न्यूयार्क में 'चारूलता' की सहेली 'मरीता' (Marita) मिली जिससे बात करके अपनेपन का स्नेह मिला। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था।"

श्री सिंह को न्यूयार्क में 'मुम्बई के वासी श्री 'एन० के० चौकसी' से भेंट हुई। वे श्री सिंह की 'विश्वसाईकिल यात्रा' से अत्यन्त प्रभावित हुए और कहा –

"After meeting and knowing Brijpal. I really feel proud of being as hindu and an Indian."

श्री सिंह 20 अप्रैल 1976 को यू० एन० ओ० की इमारत देखने श्री अमर सिंह रावत के साथ गये।"

नोट – 16

A- श्री सिंह ने 27 अप्रैल 1976 को अपनी यात्रा के दौरान अपने विचार इस प्रकार से प्रकट किए–

"संसार में इन्सान की कीमत उसके कार्यो के आधार पर होती है। बुद्धिमान संसार को नादान समझकर आगे बढ़ते जाते है और मूर्ख अपनी ही मूर्खता में सड़कर जीवन गवाँ देते हैं।"

B - श्री सिंह ने 30 अप्रैल की 'बोस्टन' के 'राम कृष्ण मिशन' के स्वामी जी द्वारा M.I.T में वेदान्त की कक्षा में "गीता" के ऊपर व्याख्यान सुना।

कनाडा– (CANADA)

श्री सिंह 5 मई 1976 को 'कनाडा' पहुँच गये। वे 'नगारा फाल्स बोर्डर' से होते हुए पहुँचे। "नगारा फाल्स" बार्डर की चौडाई भी अधिक है तथा पानी भी अधिक है लेकिन 'विक्टोरिया फाल्स' की विशेषता यह है कि वहाँ पानी अधिक ऊँचाई से पड़ता है और बादल भी अधिक बनते हैं

सीमा रेखा पर उनका वार्तालाप समाचार पत्र वालों से हुआ। 'कनाडा' में श्री सिंह को राहत महसूस हुई तथा सम्पूर्ण तनाव भी दूर हो गया। उन्होंने रात्रि में डा0 सुरेश उपाध्याय जी के यहाँ पर विश्राम किया। वहीं उनकी मुलाकात एक अन्य भारतीय डा0 पटेल से हुई जो विशुद्ध भारतीय नजर आये।

श्री सिंह ने लिखा है कि –

"हरे कृष्णा के भक्त संसार के हर कोने में तथा हर शहर के प्रत्येक चौराहे पर खड़े मिले है।"

नोट – 17

A- श्री सिंह को टोरंटो पहुँचने पर श्री सुरेन्द्र शाही से मुलाकात हुई। उन्होंने लिखा है कि–

'भारतीय सुरेन्द्र जो 'कीनिया' में पैदा हुए तथा वहीं पर रेस्टोरैंट का कार्य प्रारम्भ किया। बाद में 'कनाडा' के प्रसिद्व नगर 'टोरंटो' में 'मुगल' नामक भारतीय भोजनालय का प्रारम्भ किया। वे 'आर्य समाज' के अध्यक्ष भी है। श्री शाही ने मुझे अपनी शुभकामनाएँ दीं।"

B - "यदि पैसा है तो **वक्त नहीं**" ये बात बिल्कुल सच है। श्री सिंह एक व्यक्ति की बात लिखते हैं कि जो उन्हें 'टोरंटो' में एक सिख मंदिर' में मिला।

"वह अत्यन्त तनाव **पूर्ण स्थिति में था। कहने लगा कि भगवान को इस पाश्चात्य** जाति **को पैदा करने की क्या जरूरत थी। यहाँ पर व्यक्ति बेहद तंग है। बात करने को वक्त ही नहीं मिलता है।**"

बैलीविली- (BELLE VILLE)

"श्री सिंह जब **'बैलीविली'** पहुँचे तो वे मि0 सूद के घर पर पहुँचे। वहाँ पर उस समय बुद्विजीवियों का संगम था जिसमें सरदार, हिन्दू, **मुसलमान**, गुजराती एवं पंजाबी व अन्य उपस्थित थे। पो0 आहूजा उस **भारती**य संघ के अध्यक्ष थे।

श्री सिंह किग्स्टन में 'सौकी हार्स रेस'' श्री राम' के साथ देखने **गये**। उन्हें वहाँ का वातावरण पागलों जैसा लगा। वहाँ सभी लोग शराबी और जुआरी थे।

ओटावा- (OTAWA)

श्री बी0 पी0 सिंह धर्म और दर्शन के बारे में लिखते हैं कि–

"**धर्म और दर्शन का एकमात्र उद्‌देश्य है सर्वभौमिक** सत्य की **खोज करना। किसी भी विषय को इतनी गहराई के साथ देखना कि कोई भी पर्त अवशेष न रह जाए।**"

"मैं पिछले कई दिनों से अपने एक पुराने मित्र जितेन्द्र कुमार और उसके बच्चों के साथ रूका हुआ हूँ।"

नोट – 18

श्री जितेन्द्र कुमार ने 3–6–1976 को अपने संदेश में श्री सिंह को इस प्रकार से प्रोत्साहित किया–

प्रिय ब्रजपाल सिंह,

हम सब आपको साईकिल पर सम्पूर्ण संसार का भ्रमण करते देख, अत्यन्त आश्चर्यचकित है। यदि भारत में आप जैसे दूसरे नौजवान भी ऐसा ही साहस दिखाते तो भारत का मस्तिष्क आज की अपेक्षा और भी ऊँचा हो जाता। हमें आप पर गर्व है तथा आपको शुभकामनाएँ देते है।

जीवन की परिभाषा हर व्यक्ति के दिमाग में अलग –2 है। कुछ धन कमाना तथा उससे सांसारिक सुख भोगना जीवन का लक्ष्य समझते है किन्तु श्री बी0 पी0 सिंह इससे कुछ अलग सोचते थे। उन्होंने लिखा है कि–

"क्या मनुष्य इस संसार में सुख भोगने ही आया है ? उसके जीवन का लक्ष्य क्या है ? धन कमाना, खाना, पहनना, सुख प्राप्त करना तथा वृद्धावस्था में कमजोर होकर कराहते रहना और एक दिन इस दुनियाँ से बिना पहचान बनाऐ चले जाना। यदि ये है तो ये 'मनुष्यता" नहीं हो सकती है जिसने हमको बनाया, उसका स्मरण करना तथा उसकी 'बनाई रचना' की सेवा करके जाना ही जन जीवन की सफलता का रहस्य है।"

नोट – 19

श्री सिंह 20 जून 1976 को 'मान्ट्रीयल' में थे। उनसे ये पूछा गया कि क्या विश्व में किसी ने पहले भी इस तरह से (श्री सिह के उद्देश्य) की तरह, साईकिल पर कोई यात्रा की ? "शायद ऐसा न भी हुआ हो।" श्री सिंह का जवाब था।

"साहस" कोई साधारण शब्द नहीं। जब कभी ब्रजपाल सिंह ने थोड़ी सी भी मायूसी महसूस की तो उनको सहारा दिया, उनके "उच्च मनोबल"ने। वह संसार भ्रमण पर निकले थे किसी सामान्य कार्य पर नही। उन्हीं के शब्दों में 24–6–1976 को देखिए उनके दृढ़ विचारों की एक झलक –

"ब्रजपाल, पृथ्वी के अन्तिम छोर तक जाना, विशाल रेगिस्तान व जंगलों से होकर गुजरना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। यदि हम अपने जीवन की यात्रा को विश्व की प्रगति में निहित न कर सके तो कोई लाभ नहीं। संसार के बुद्धिमान लोग क्या सोचेंगे। दुनियां के चक्कर लगाते –2 सारा जीवन गवां दिया। शरीर को ध्वस्त कर दिया। सगे सम्बन्धियों, मित्रों व घर वालों से दूर रहा। आखिर क्या पाया।"

कुछ तो लोग तेरे बारे में सोचते होंगे कि बेचारे की तकदीर में ही ऐसा लिखा है कि सारी दुनियाँ का चक्कर लगा और तकलीफें झेल।

कुछ सोचते होगें कि कहीं ये नौजवान दिमाग से तो विकृत नहीं है, क्या तूफान उठाये फिर रहा है।

कुछ ऐसा भी सोचते होंगे कि घर पर रहकर कोई काम करता तो कितना अच्छा रहता और जाने क्या –2 करता।

ब्रजपाल इस संसार में कोई भी तेरे बारे मे कुछ भी सोचे, यह जानने की कोशिश करना ही मूर्खता एवं समय की बर्बादी है। जो तुझे अच्छा लगता है, गम्भीर रूप से चिन्तन करता हुआ, आगे बढ़ता जा। यही जीवन का रहस्य है।"

एक लम्बे अरसे के बाद अपना कोई प्रिय मित्र मिल जाये तो खुशी की कोई सीमा नहीं रहती। श्री राजवीर सिंह, बड़ौत (नई मण्डी) –बागपत

वाले श्री बी0 पी0 सिंह के साथ 'छात्र जीवन' में पढ़ा करते थे। बाद में उच्च अध्ययन हेतु अलग –2 हो गये और फिर 7 साल बाद श्री राजवीर सिंह को श्री बी0 पी0 सिंह **'मौण्ट्रीयल एयर पोर्ट'** पर 8–7–1976 को मिले तब श्री राजवीर सिंह को कैसा लगा होगा। उन्हीं के शब्दों में देखिए–

''श्री जब 'मौण्ट्रीयल एयरपोर्ट' पर पहुँचे और ब्रजपाल सिंह को देखा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। वह मुझे 7 साल बाद मिला था। आज 8–7–1976 तक वह 5 महाद्वीप और 71 देश घूम चुका है, सुनकर ऐसा लगा कि क्या आदमी ऐसा कर सकता है ? उसकी हिम्मत देखकर ही मुझे डर लगने लगता है।

मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह उसकी हिम्मत को बनाए रखे और जो उसने सोच रखा है वह पूरा हो। पता नहीं अब उससे कब मुलाकात होगी, कोई नहीं जानता।''

नोट – 20

श्री बी0 पी0 सिंह ने 'महाभारत' की इस पंक्ति को अपने जीवन में उतारा –

''मनुष्यता से बढ़कर दुनियाँ में कोई चीज नहीं।''

"There is nothing higher than humanity in this world".

नोट – 21

"Habit is the second nature."

ये बात बिल्कुल सच है। श्री बी0 पी0 सिंह ने इसका एक सुन्दर उदाहरण 'कनाडा' में रहते हुए दिया।

''चीन का एक व्यक्ति लम्बे समय तक जेल में रहा और वृद्वावस्था में उसे छोड़ दिया गया। वह बाहर आया तो प्रकाश से भरे इस संसार को देख चकाचोंध हो गया। उसने अधिकारियों से कहा कि उसे

पुनः जेल भेज दिया जाये क्योंकि उसको अंधेरा रास आने लगा था। उसने उन परिस्थितियों से समझौता कर उनमें ही जीना सीख लिया था।''

श्री सिंह 'औटावा' के **T.V.** पर अपना प्रोग्राम देने श्री जे0 कुमार व श्री राजवीर सिंह के साथ पहुँचे तथा अपनी ''साईकिल यात्रा विश्व भ्रमण'' के बारे मे जानकारी दी।

नोट – 22

A - श्री सिंह को ''टोरंटो'' में श्री सुरेन्द्रपाल सिंह मिले जिन्होंने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी। श्री एस0 पी0 सिंह, ग्राम – उजैड़ा (मोदीनगर – मेरठ) के रहने वाले है।

B - कनाडा में श्री सिंह को श्री योगेन्द्र सिंह, श्री बहारा सिंह व श्री रविन्द्र सिंह मिले। वे उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा इस प्रकार से कहा –

''चौधरियों का नाम ऊँचा कर रहे हो। भगवान तुम्हारी पूरी मदद करे। चौधरी, बस हिम्मत को बनाए रखो। हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।''

A - ये कहना सच है कि दूरियाँ 'तन' की होती है, मन की नहीं। 'ओटावा' में श्री सिंह को जो भारतीय मिले, उन्होंने बताया कि –

''कोई दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन भारत सपने में दिखाई न देता हो।''

B - श्री सिंह इंसान की श्रेष्ठता के बारे में लिखते हैं कि–

''जब एक श्रेष्ठ, विद्वान और आदर्श व्यक्ति पूजा करता है तो वह भगवान से कहता है ''हे परमात्मा, मेरी समस्त कामनाओं को भस्म कर दे।''

नोट – 23

श्री सिंह ने बाल्देयर के शब्दों को इस भौतिक संसार के बारे में कितना सच लिखा है कि–

"हम संसार को ठीक उतना ही मूर्ख और निकृष्ट छोड़ जायेंगे जितना कि यह तब था, जब हम इसमें आये थे।"

श्री सिंह ने वह रात्रि एक छोटे नगर में 'ओलम्पिक ज्योति वाले ग्रुप' के साथ बिताई तथा अगले दिन दोपहर बाद' 'मोण्ट्रीयल' में "ओलम्पिक 1976" देखने पहुँचे। वहाँ 'श्री विनोद कपूर' मिले जिनके साथ 'ओलम्पिक गाँव' देखा।



(ओलम्पिक मैदान में श्री बी० पी० सिंह)

अगले दिन पहला हॉकी मैच देखा जो अर्जेन्टिना व भारत के बीच हुआ। भारत ने उसे 5–0 से हरा दिया।"

नोट – 24

श्री सिंह ओलम्पिक दौड़ देखने गये जिसमें भारत के 'श्री राम' भी दौड़ रहे थे। उस ओलम्पिक में जब कुश्ती प्रतियोगिता हुई तो उसमें भारत से कोई नहीं था।

'मौन्ट्रियल' उत्तरी अमेरिका का एक अच्छा नगर है। यहाँ के व्यक्ति बड़े प्रेमभाव से मिलते हैं क्योंकि यहाँ पर फ्रेंच लोग अधिक हैं।"
श्री सिंह लिखते हैं कि

"कोई भी व्यक्ति दूसरे के कारण दुखी नहीं है। वह अपने अल्प ज्ञान, अदूरदर्शिता तथा मन व दिमाग पर नियंत्रण न होंने के कारण दुखी है।"

नोट – 25

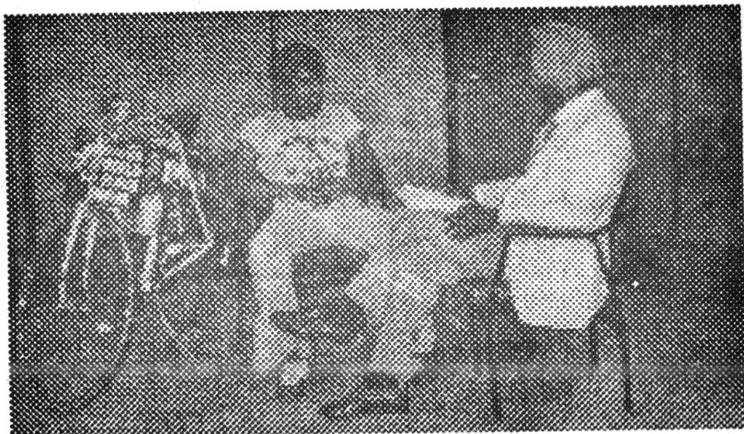
श्री सिंह अपना बिन्नी पैग (कनाडा) का एक अनुभव जो 18 अगस्त को हुआ, इस प्रकार से बताते हैं कि–"मैं 18 अगस्त की रात श्री राजेन्द्र सिंह धूत व उनके भाई श्री अमरीक सिंह व उनके मित्र के साथ बैठा था। उनके मित्र खाना खाने के लिये होटल ले गये। जीवन में इतना भोंडा नाच पहली बार देखा। जाने का पछतावा हुआ।"



(राजेन्द्र सिंह धूत व अमरीक सिंह के साथ श्री बी० पी० सिंह)

श्री सिंह अपने भ्रमण के दौरान 'कनाडा' का "ओल्ड होम" देखने गये तथा उसका वर्णन इस प्रकार से किया –

"60 वर्ष के बाद वृद्ध 'सीनियर सिटीजन होम' में रहते हैं। इनके बच्चे 18 वर्ष के होने पर इनसे अलग रहने लगते है। वहाँ उन्हें अच्छा खाना व आराम से रहने को मिलता है किन्तु आत्मीयता का अभाव खटकता है।"



(बिन्नी पैग-कनाडा में टी०वी० कार्यक्रम के दौरान श्री बी० पी० सिंह)

श्री बी० पी० सिंह अपने कर्त्तव्य के प्रति कितने दृढ़ थे, ये बात उनके शब्दों से ही पता चलती है।

"क्या मैं इससे पहले रूक सकता हूँ ? कि जब तक इस पृथ्वी को पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक एक –2 इन्च न रोंद डालूँ। क्या मैं आसानी से सो सकता हूँ, जब तक कि सम्पूर्ण मानवता की एक –2 जाति और उसकी संस्कृति एवं धर्मो की गहराई को न जान लूँ।"

नोट – 26

A - श्री सिंह धर्म के प्रति अपना दृष्टिकोण इस प्रकार प्रकट करते हैं–

" भगवान में विश्वास करना या धर्म के अनुसार आचरण करना, सबसे कठिन कार्य है। धार्मिक पुस्तकों में जो कुछ भी लिखा है, उन सब को दोहरा देना आसान है।

महान वो है और वही ज्ञानवीर है, जो समस्त संसार को अपना देश और सम्पूर्ण मानव जाति को अपना भाई समझता है।''

B - 'कामलूप' (कनाडा) मे भ्रमण के दौरान श्री सिंह की मुलाकात श्री अजब सिंह जी से हुई। श्री सिंह ने उनके आवास पर चार दिन गुजारे तथा वहाँ की संस्कृति का अवलोकन किया।

कनाडा में श्री सिंह भारतीय राजदूत से मिलने गये। उन्हें देखकर सभी ने खुशी प्रकट की। श्री ओ0 एस0 खोसला जी (काउन्सिल जनरल ऑफ इण्डिया) ने 7–9–1976 को अपने विचार इस प्रकार से व्यक्त किए–

"I am pleased to meet Mr. B.P. Singh. He has come out on a great adventure. I hope he acts as an ambassador of goodwill for India and strengthen our hand of friendship with the various countries, he visits.

नोट – 27

19–9–1976 को श्री सिंह को शुभ संदेश देने वालों में 'श्री जरसेम सिंह कन्डोला' भी शामिल हो गये। उन्होंने कहा –

''भगवान आपकी यात्रा सफल करे। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ रहेंगी।

नोट – 28

A - 'कनाडा' में श्री सिंह की मुलाकात श्री सन्दीप सिंह गिल से 23 सितम्बर 1976 को हुई। श्री गिल ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी –

"I wish for Brijpal Singh to have a great success in his life in the world tour."

B - 'अनुभव तो यात्रा से आता है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने तथा नये –2 लोगों से मिलने व बातचीत करने से ज्ञान की वृद्धि

होती है। ऐसा ही अनुभव श्री बी0 पी0 सिंह जी को अपनी साईकिल यात्रा के दौरान हुआ। वे लिखते हैं कि–

"पूरा ही पाश्चात्य संसार ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि विशाल अनाथालय हो। जिसमें खाने पीने का सब सामान होते हुये भी वास्तविक प्रेम नहीं है। सच्चा जीवन नहीं है। वातावरण अत्यन्त गम्भीरता लिए हुए होता है।"

C– उनकी 'ईश्वर' के प्रति भावना व आस्था भी उनके चिन्तन और मनन को प्रकट करती है। उन्होंने लिखा है कि–

"जब विश्वास अनुभव रूपी साँचे में ढल जाता है या परमात्मा का साक्षात हो जाता है, तो फिर अन्य सभी बातें अर्थहीन हो जाती है।"

जीवन में कुछ क्षण हमेशा याद रहते हैं। जैसे श्री बी0 पी0 सिंह का ननीमो–बी०सी० (कनाडा) में 28 सितम्बर 1976 को एक स्कूल में बच्चों के साथ गुजारे गये समय का विवरण इस प्रकार है कि–

"आज 28 सितम्बर 1976 को 'कनाडा' के स्कूल में 'मि0 एम0 एस0 जीवन' की ओर से मैंने बच्चों को अपनी "साईकिल से संसार भ्रमण" व "यात्रा के अनुभव" के बारे में विस्तारपूर्वक बात की। वहाँ पर 'जीवन दर्शन' व 'जीवन के सांसारिक तथ्यों पर विशेष चर्चा हुई। चलते समय स्कूल के बच्चों की ओर से अध्यापक मंडल ने मुझे '100 डालर' भेंट स्वरूप प्रदान किए।"

नोट – 29

1976 सितम्बर माह की 29 तारीख को एक आलीशान 'आध्यात्मिक सम्मेलन' का आयोजन कैनथ स्ट्रीट, डंकन बी0 सी0 कनाडा' की एक 'राबर्ट जैक्स स्टूडियो' में किया गया। श्री सिंह लिखते है कि –

"रैप्स" (**Reps**) नामक एक अत्यन्त विद्वान व आध्यात्मिक गुरू उस सम्मेलन में आये। उन्होंने एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं। वे 'जन्म' से जर्मन थे तथा 'धर्म' से एक 'बौद्व'। उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरा धर्म क्या था। मैंने उत्तर दिया, "हिन्दू, किन्तु मैं सभी धर्मो का समान आदर करता हूँ। जिस प्रकार लैम्प को जलाने हेतु तेल आवश्यक है, उसी प्रकार व्यक्ति को भटकाव से बचाने के लिये धर्म जरूरी है।" वे बहुत खुश हुए।

जापान- (JAPAN)

नोट – 30

A- आज दिंनाक 7 अक्तूबर 1976 दिन बृहस्पतिवार को श्री बी0 पी0 सिंह टोकयो (जापान) में 6:30 पर हवाई जहाज से पहुँचे। उन्होंने एक विशेष बात लिखी है कि –

"जापान की धरती पर कदम रखने के बाद मैंने अपने जीवन में एक ऐसा परिवर्तन महसूस किया जैसा पहले कभी नहीं किया था।"

B– श्री सिंह को जापान की पद्धति सबसे भिन्न लगी। वहाँ की उन्नति का एक मुख्य कारण वहाँ की कार्यशैली व व्यक्ति सोच भी है। श्री सिंह गुरू – शिष्य परम्परा का एक अनूठा उदाहरण 8–10–1976 को पेश करते हैं जो उन्हें जापान में सुनने को मिला, वह इस प्रकार हैं–

"जापान में जेन गुरू अपने शिष्यों को एक दूसरे के पास भेजते हैं जबकि उन दोनों गुरूओं में वैचारिक मतभेद होता है। एक गुरू ने अपने परम शिष्य को अपने प्रतिद्वन्दी गुरू के पास भेजा तो शिष्य ने इसका कारण पूछा। गुरू ने कहा, "मैंने कभी नहीं कहा कि वह गलत है। पद्धति तो उसकी भी गलत नहीं किन्तु अपनी पद्धति को समझने के लिये जब मैं

उसकी पद्धति को गलत कहता हूँ तो मेरी पद्धति को समझने मे आसानी हो जाती है। बोकू जी (शिष्य का नाम) तू वहीं जा। मेरी पद्धति तेरे काम की नहीं पर किसी को बताना मत। जाहिर दुनियाँ में हम दुश्मन हों, पर भीतरी दुनियाँ में हम एक है।

जब बोकूजी दूसरे गुरू के पास गया तो उसने कहा, ''जाकर अपने पहले गुरू को धन्यवाद दो, क्योंकि उसने ही तुझे मार्ग दिखाया है, अगर वह असद गुरू होता तो तुझे रोक लेता, पर किसी को कहना मत। जाहिर दुश्मनी भी हमारा षडयन्त्र है किन्तु भीतरी दुनियाँ में गहरी मैत्री है। हमारा जो खेल चल रहा है उसे बिगाड़ने की जरूरत नहीं''

श्री बी0 पी0 सिंह लिखते हैं कि संसार में बहुत कम राष्ट्र इतने मंहगे हैं जितना कि जापान। ये अमेरिका व कनाडा से तीन गुना मंहगा है। इलैक्ट्रोनिक का सामान यहाँ अवश्य ही सस्ता है। जैसे – कैमरा, घड़ी T.V. और आदि।''

नोट – 31

A- 10 अक्टूबर 1976 को श्री सिंह ने अपने जापानी मित्र के साथ 'अमेरिकन पॉप संगीत' ''याकोहोमा, निकट टोकयो'' देखा।

B- एक कहावत है कि परदेश में अपना मित्र कौन है ? तो उत्तर आता है। अपना ज्ञान, व्यवहार व अपनी ताकत। घर की याद तभी आती है। जब व्यक्ति दुखी होता है। श्री सिंह के साथ जापान में ऐसा ही हुआ। वे बीमार हो गये। उन्होंने लिखा –

''पिछले एक सप्ताह से बीमार चल रहा हूँ। इस अजनबी राष्ट्र में भगवान के सिवाय और कौन सहारा हो सकता है।''

जापान का एक अत्यधिक भीड़भाड़ वाला शहर टोकयो है। वहाँ के लोग अत्यधिक शान्त व मैत्रीपूर्ण व्यवहार के हैं।

श्री सिंह 'टोकयो' में भारतीय राजदूत श्री ई0 गौन्साल्वेज से मिले। उन्होंने श्री सिंह को अपनी बधाई व शुभकामनाएँ अर्पित की।

"My congratulations are the outstanding effort to see the world and carry the message of love to so many people. This is a true job.

श्री सिंह ने 'जनबोध' कथा से एक घटना रेयानेन की मुक्ति का वर्णन इस प्रकार से किया–

"रेयानेन का जन्म 1917 में हुआ। वह जापान के सुप्रसिद्ध सामन्त 'सिंगेन' की पोती थी। वह एक अत्यन्त सुन्दर व उत्कृष्ट कवियित्री थी। उसे साम्राज्ञी के साथ रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

दुर्भाग्यवश साम्राज्ञी का देहान्त हो गया। उसे मानव जीवन अर्थहीन लगने लगा। उसने 17 वर्ष की अवस्था में जेन का अध्ययन करने का निश्चय किया किन्तु परिजन विवाह हेतु जोर डालने लगे। रेयानेन ने इस शर्त पर विवाह किया कि तीन सन्तान होने के बाद वह भिक्षुणी बन कर घर त्याग देगी और ऐसा हुआ भी। उसने तीन बच्चों को विवाहोपरान्त जन्म दिया तथा मुंडन करवाकर घर त्याग दिया।

घूमते हुए वह 'ऐडो' नगर में पहुँची। उसने 'तेत्सुमियो' नामक महात्मा से उसे अपनी शिष्या बनाने हेतु कहा किन्तु उन्होंने उसके अत्यधिक सुन्दर होने के कारण मना कर दिया।

वह दूसरे सन्त 'हाकुओ' के पास पहुँची। उन्होंने भी उसके सुन्दर होंने के कारण मना कर दिया। तब उसने लोहे का एक टुकडा गर्म करके अपना चेहरा दाग दिया। उसकी सुन्दरता समाप्त हो गई। तत्पश्चात् 'हाकुओ' ने उसे अपनी शिष्या बना लिया। उसने लिखा है कि–

"जब थी मै,
साम्रज्ञी की सेविका
तब अपने मूल्यवान वस्त्रों की
सुगन्धि हेतु ,जलाई थी मैंने धूप,
और अब मैं एक विरक्त साधिका,
जेन के मन्दिर में प्रवेश हेतु,
जला रही हूँ अपना रूप"

20 अक्टूबर 1976, दिन बुधवार को श्री सिंह का जापान रेडियो (टोकयो) में साक्षात्कार लिया तथा उनकी विश्वयात्रा सम्बन्धी बातों व अनुभवों की जानकारी ली तथा मुझे एक 'कैनन इलैक्ट्रोनिक कैलकुलेटर' उपहार स्वरूप दिया।

'मन चंगा तो कठोती में गंगा' वाली बात श्री सिंह के साथ ठीक बैठ रही थी। अक्तूबर 1976 में दीपावली का त्यौहार पड़ा। वे घर से दूर थे किन्तु मन में दीपावली मनाने का उत्साह उन्होंने इस प्रकार से पूर्ण किया। उन्हीं के शब्दों में देखिए –

"आज रात्रि में भारतीय दूतातास टोकयो में हम सभी भारतीयों ने 'दीपावली' का त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया। यह पहला भारतीय त्यौहार था मेरी विश्वयात्रा के दौरान जो आज हमने बड़े उत्साह व धूमधाम के साथ मनाया है।"

श्री सिंह सन् 1973 से 1976 तक अपनी साईकिल पर एक देश से दूसरे देश चलते रहे तथा जो कुछ हर देश में देखा, उसका निचोड़ इस प्रकार से है –

"साढ़े तीन साल में मैंने 73 राष्ट्रों का भ्रमण किया है। सिर्फ एक ही राष्ट्र मैने ऐसा पाया जहाँ शाँति, सम्पन्नता एवं सभ्यता एक साथ चल रही है और उसका नाम है जापान।"

कोबे (जापान)

श्री सिंह चलते –2 'कोबे' (जापान) जा पहुँचे तथा वहाँ पर भारतीय दूतावास के अधिकारियों से मुलाकात की। श्री के0 वी0 एन0 मेनन (काउन्सिल जनरल ऑफ इण्डिया) ने 28–10–1976 को अपने विचार उनके बारे में इस प्रकार प्रकट किए–

"I am delighted to meet this youngman, a follower of the great sons of India like a Shankaracharya, Swami Vivekananda and Mahatama Gandhi. I am therefore not surprised that he is enjoying his great adventure of going 'Around the world' on a bicycle facing all the hardship. I have no doubt that he will prove to be a true ambassador of India.

I understand that he has a plan of writing a book about his experiences in various countries. I am sure that the book will be quite useful and interesting. I wish him good luck and success in all his understandings."

A- श्री सिंह ने जापान के बारे में कुछ इस प्रकार से लिखा है कि ऐसा लगने लगा जैसे वे जापान से बड़े प्रभावित हों।

उनके शब्द इस प्रकार से हैं –

"विश्व में जापान ही एक ऐसा देश है जिसमें एक इंच भी जमीन बेकार नहीं जाती। अगर किसी मकान के पास चार फुट भी जमीन है, उसने वहीं पर कुछ न कुछ उगा रखा है यदि विश्व के दूसरे राष्ट्र भी इसका अनुसरण करें तो संसार के पास भोजन सामग्री पर्याप्त मात्रा में हो सकती है।"

B – आज 1 नवम्बर 1976 का दिन सोमवार है। श्री बी0 पी0 सिंह घूमते–2 जा पहुँचे 'हिरोशिमा'। जी हाँ, ये वही हिरोशिमा है जहाँ अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्व में 8.15 **A.M.** पर 6 अगस्त 1945 में विनाशकारी बम गिराये थे जिसमें 13 किमी का एरिया जल उठा था तथा 70000 घर नष्ट हो गये थे और लगभग 200 हजार लोग मारे गये थे।



(श्री बी0पी0 सिंह 1-11-1976 को जापानी टूरिस्ट के साथ हिरोशिमा की पहाड़ियों पर)

श्री सिंह ने आगे इसी सन्दर्भ में लिखा है कि–

"एक मानव प्रेमी, प्रगतिशील यात्री जिसने हिरोशिमा के 'अटोमिक डेजर्ट' (परमाणु विनाश) को देखा है। वह अपने जीते जी उसे नहीं भूल सकता।"

"शहर हिरोशिमा में एक 'स्लोगन' लिखा हुआ है "NO MORE HIROSHIMA" जो कि संसार में व्याप्त बुराईयों को प्रकट करता है तथा हिरोशिमा जैसा काण्ड दोबारा न हो, इसकी चेतावनी भी देता है।"



(श्री बी0पी0 सिंह 2-11-1976 को कोयटा-जापान में बोद्ध मन्दिर के निकट)

द0 कोरिया (SOUTH KOREA)

नोट – 32

3 नवम्बर 1976 को श्री सिंह 'जापान एयर लाईन' द्वारा 'दक्षिण कोरिया' की राजधानी 'सिओल' पहुँचे।

श्री सिंह वहाँ का एक अनुभव लिखते हैं कि –

"नवम्बर 1976 को 4 तारीख थी। मैं होटल हैम्लिटन में रूका हुआ था तभी वहाँ एक अत्यन्त सुन्दर लड़की आयी तथा मुझसे इस तरह से मिली मानो कि वह मुझे पहले से ही जानती हो। जो भी हो वक्त काफी अच्छी तरह से कटा क्योंकि अलग –2 विषय पर चर्चा होती रही।

5 नवम्बर 1976 दिन शुक्रवार, वही लड़की, दक्षिण कोरिया' की राजधानी 'सिओल' में कल के ही स्थान और समय पर दोबारा मुझसे मिलने आई। उसका नाम "मिस जोंगसूकपाक" था। मैंने उसका नाम "आनन्दिता" रखा। वह खुश थी। हम अपने बीते समय के बारे में बाते

करते रहे। ये एक ऐसा समय था जिस पर किसी प्रकार का जोर नहीं था। ये समय हमारे भविष्य को नये मोड़ पर ले जाने का था। मैं अपनी आत्मा में बसे परमात्मा से ये प्रार्थना करता हूँ कि 8400000 लाख बार पृथ्वी पर जन्म लेकर तुम्हारा साथ पा सकूँ।''

नोट – 33

आज 6 नवम्बर 1976 दिन शनिवार है। द० कोरिया रहने के उद्देश्य से बहुत अच्छा है। 'आनन्दिता' मेरे साथ एयर पोर्ट तक आई है। मुझे विदा करने के लिये। उससे विदा लेकर मै 'सिओल' से हाँगकांग के लिए रवाना हो गया।



Korea Times Photo
Brij Pal Singh, an Indian globe-biker, poses beside his British Raleigh bicycle. Korea is the 73rd country he has visited since he started the trip in May, 1973.

श्री सिंह ने विश्वभ्रमण के दौरान जो अनुभव किया, उसे उन्हीं के शब्दों में देखिए–

''वास्तविकता, प्रेम व आदर्शवादिता के शब्द विश्वस्तर पर घटते जा रहे हैं। संसार का कोना –2 छान लिया फिर भी एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो यह कह दें कि यह मानव का असली रूप है। मानव आज अपनी वास्तविक प्रवृति को भूलकर जानवरी सभ्यता को भी लाँध गया है।''

चीन- (CHINA)

श्री सिंह अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए चीन की सीमा तक जा पहुँचे। उन्हें चीन में भ्रमण की अनुमती मिलने की ज्यादा उम्मीद नहीं थी। वहाँ के समाचार पत्र "साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट" ने 10–11–1976 को उनकी विश्व यात्रा के विषय में विस्तार से ब्यौरा दिया।



To this Indian round-the-world cyclist, nothing is impossible in this world. He now wants to ride his bicycle through China and is awaiting permission.

A- श्री सिंह वहाँ से घूतते हुए हांगकांग आ गये। उन्होंने अपने अनुभव से जो महसूस किया, वह इस प्रकार से है–

"इस संसार की नींव बुद्धिमान एवं मध्यम वर्ग के ऊपर खडी है। वरन् गरीब अपनी गरीबी में उलझा हुआ है तथा अमीर अपनी अमीरी में फसा हुआ है। संसार की कोई फिक्र नहीं है।"

कभी –2 श्री सिंह की मायूसी इस संसार को लेकर बढ़ जाती थी। ऐसा लगता था कि वे इस दुनियाँ में आकर खुश नहीं हैं और जो कुछ यहाँ हो रहा है, सब ढोंग और झूठ है। उनके शब्द देखिए–

"जब हम इस संसार की गहराई में जाते हैं या वास्तविकता की खोज में होते हैं, तो हमारे पास कोई ठोस आधार नहीं होता कि हम किस को प्रसन्न करें और किस को दोष दें। लोग पुराने तथ्यों को ही तोड़कर पेश कर रहे हैं।"

नोट – 34

"यात्रा सदैव अनुभव प्रदान करती है।" नये स्थान व नये व्यक्ति से मिलने पर कुछ नया सीखने को अवश्य ही मिलता है। श्री बी0 पी0 सिंह ने लिखा है कि –

"जिस वस्तु को हृदय चाहता और उसे हम पा भी सकते हैं तथा उससे समाज का भी कोई नुकसान नहीं होता तो ऐसी वस्तु को प्राप्त कर लेना चाहिए चाहे उसका परिणाम अच्छा निकले या बुरा। कई बार बुरे परिणाम से भी हमें प्रेरणा मिलती है।"

"एकला चलो रें" के सिद्धान्त पर श्री बी0 पी0 सिंह अकेले ही चलते रहे। हाँगकांग में आकर 13–11–1976 में उन्होंने लिखा है कि –

"एक वो व्यक्ति जिसके पास धन न हो वह सम्पूर्ण संसार का भ्रमण कैसे कर सकता है।

नोट –35

श्री बी0 पी0 सिंह जी के अनुभव इतनी लम्बी यात्रा के बाद परिपक्व होने लगे। उनके इस कथन से ये बात स्वतः सिद्ध हो जाती है।

"हम वास्तविकता को तब तक नहीं जान सकते, जब तक कि हमारे ज्ञान और कर्म में एकता न हो जाये। सम्पूर्ण जीवन का रहस्य आत्मिक विश्वास में निहित है।"

श्री सिंह की यात्रा अविराम जारी रहती थी। हॉगकांग में कुछ समय तक रहकर वहाँ से वे मनीला के लिए चल दिए। कथनानुसार –

"आज 24–11–1976 को दोपहार बाद में "हॉगकांग" से 'फिलीपीन्स' एयर लाईन द्वारा 'मनीला' के लिए प्रस्थान किया।"

मनीला- (MANILA)

नोट –36

A- 25 नवम्बर 1976 को 'मनीला' में भ्रमण के दौरान श्री बी0 पी0 सिंह ने जो कुछ अनुभव किया वह इस प्रकार है –

"इतना संसार घूमने के बाद जो अनुभव किया वह यह है कि लोगों के दिल और दिमाग समय के थपेडों में अपना सन्तुलन कायम नहीं रख पा रहे हैं। रहा शरीर, वह भी कार्य व अनैतिकता के बोझ से क्षीण होता जा रहा है।"

"करीब –2 संसार में पाँच सौ वर्षो में एक नयी एवं विशाल लहर आती है जो पुरानी लहरों से टकराकर एक नया रास्ता निकालती है।"

"मनुष्य का इस संसार में आना और जाना उसी प्रकार से है जैसे कि किसी किसान द्वारा फसल को बोना और पकने पर काट लेना और उन्हीं दानों से पुनः नई फसल उगाना। क्रम निरन्तर चलता रहता है।"

व्यक्ति चाहे कितना भी महान अथवा शिक्षित हो जाए किन्तु अन्तिम नहीं हो सकता और उस अन्तिम बिन्दु को जानने की ललक सभी में पाई जाती है। उसे हम पाना चाहते हैं और उसकी चाह में आगे बढ़ते रहते हैं, श्री सिंह की तरह जो अपने भाव इस प्रकार से प्रकट करते हैं–

"यह सच है ब्रजपाल के अभी तक तुम्हें किसी महान आत्मा के दर्शन नहीं हुए है। लेकिन एक बात जो तुमने अपने अनुभव से परखी है, वह यह है कि इस संसार के पीछे एक महान शक्ति है। उसको चाहे हम कुछ भी नाम दें। ये संसार अक्समात नहीं है। इसके पीछे एक नियम है। एक अनदेखी दैवीय शक्ति है।"

"यह सच है ब्रजपाल के अभी तक तुम्हें किसी महान आत्मा के दर्शन नहीं हुए हैं। लेकिन एक बात जो तुमने अपने अनुभव से परखी है, वह यह है कि इस संसार के पीछे एक महान शक्ति है। उसको चाहे हम कुछ भी नाम दें। ये संसार अक्समात नहीं है। इसके पीछे एक नियम है। एक अनदेखी दैवीय शक्ति है।"

B - 26 नवम्बर 1976 मनीला में श्री सिंह लिखते है कि –

"हमारे पुराने विचारों एवं कर्मों ने हमारे वर्तमान को रचा है और जो कुछ आज हम कर रहे है या सोच रहे है, उससे हमारे भविष्य का निर्माण हो रहा है।"

विशेष–

3 दिसम्बर 1976 के बाद श्री बी0 पी0 सिंह जी की कोई सूचना अथवा पत्र उनके परिवार को प्राप्त नहीं हुआ। इससे आगे डायरी के पन्ने भी खाली हैं। उसके बाद ज्ञात हुआ कि श्री बी0 पी0 सिंह बीमार हो गये तथा उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

समाचार पत्रों से-विदेश समाचार

"श्री ब्रजपाल सिंह जी ने 27 मई 1973 से की गई विश्वयात्रा के दौरान अनेकानेक देशों का भ्रमण किया तथा जिस देश में भी वे पहुँचते थे, वहाँ के समाचार पत्र उनके बारे में विस्तार से छापते रहते थे। श्री सिंह उन अखबारों से उन समाचारों की 'कापी' ले लिया करते थे और अपनी डायरी में भी उस समाचार को लिख दिया करते थे। उनकी डायरी व समाचार पत्रों से प्राप्त किए गये मुख्य लेख व चित्र 'हूबहू' (ज्यों के त्यों) यहाँ पर सवर्णन प्रस्तुत किए जा रहे है।'

1– **'Bild–Hemburg'** 28 फरवरी 1974 ने उनका चित्र सवर्णन प्रस्तुत किया।

(1) ↓





Amerika liegt noch vor ihm.

(2) ↑

2–**'FRANFURTER STADT RUNDSHAW'** ने 20 मार्च 1974 को श्री सिंह की यात्रा का सचित्र वर्णन किया।

3–'CRONACA DI ROMA" समाचार पत्र ने 23 मार्च 1974 को उनका विवरण सहित फोटो दिया।

(3)


Per un libro pedala intorno al mondo

(4)


BRIJPAL SINGH
Four months on the road

4–EVENING MAIL' SEP. 30. 1974

श्री बी०पी० सिंह के बारे में 30 सितम्बर 1974 को इवनिंग मेल समाचार पत्र ने विस्तार से समाचार दिया।

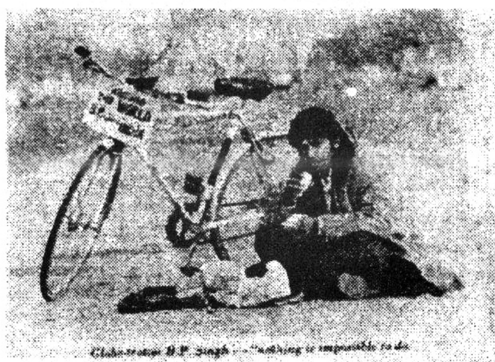
5– 7 मई 1974 को 'बर्न' के **BERNER TAGHLATT"** समाचार पत्र ने विस्तार पूर्वक उनकी साईकिल यात्रा का सचित्र वर्णन किया।

(5)





Indischer Weltenradler: Brij Pal Singh macht in Bern Station Bild: BT



Globetrotter B.P. Singh — "nothing is impossible to do.



(6)

6– बृहस्पतिवार अप्रैल 10, 1975 को **"THE ETHIOPIAN HERALD"** समाचार पत्र ने उनका समाचार – "इन्डियन ग्लोब ट्रोटर" **(Indian Globe Trotter)** के नाम से दिया।

7– **MEI-5, 1975** को **'TAIFALIO'** में श्री बी0 पी0 सिंह अलग –2 अधिकारियों से मिले। उनका सचित्र वर्णन इस प्रकार है –

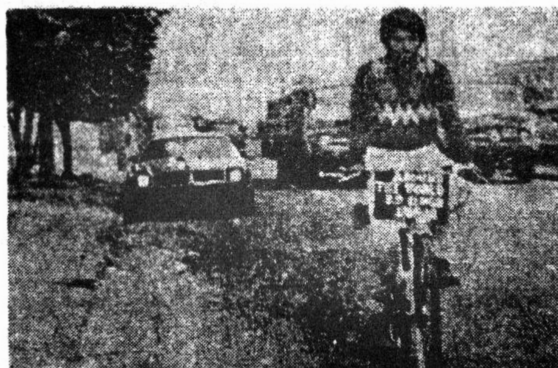
(7) ↓



(8) ↑

8– **"SUNDAY TIMES OF ZAMBIA"** ने जून 22, 1975 को उनका साईकिल यात्रा पर एक चित्र प्रस्तुत किया।

9– 4–9–1975 को श्री सिंह **SAO PAULO** पहुँचे। जहाँ समाचार पत्र ने उनके बारे में छापा।



Brij é economista. Viaja desde 73 para conhecer problemas do mundo.



Singh: 65 mil km e 30 países.

10– **THE NEWS MAXICO CITY, MONDAY JANUARY 5, 1976** में उनका विस्तृत समाचार छापा गया।

(10)



AROUND THE WORLD — It isn't such a small world after all for Brij Pal Singh, an economics student from India, who is circling the globe on a bicycle. By now Singh should be well on his way to California.



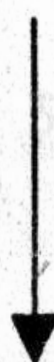
Cyclist Singh, Sans Beard

(11)

11– **"INDIAN ABROAD NORTH AMERICA"** समाचार पत्र ने 23 अप्रैल 1976 को श्री बी0 पी0 सिंह को **"YOUNG INDIAN ULYSSES OF 20TH CENTURY"** के नाम से सम्बोधित किया।

12– श्री बी0 पी0 सिंह के बारे में 'शिकागो ट्रीब्युन' (Chicago Tribune) Friday March 12, 1976 ने "Around The World in 5 Years" नामक शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया।

(12)







(13)



13. कनाडा नेशनल न्यूज पेपर– 'द ग्लोब एण्ड मेल', 14 मई 1976।

14– श्री सिंह ने 6 नवम्बर को **"THE KOREA TIMES"**–**'SATURDAY'** को अपना परिचय दिया और कहा –

"Korea is a 'heaven' and the best place in the world to live in."

वे ओसाका (जापान) से 'जहाज' द्वारा बुधवार को ''सिओल'' आये। उनके पास 20 किलोग्राम का एक सूटकेश था जिसे वे अपने साथ लेकर चलते थे।

कोरिया तक आते –2 उनके 15000 डालर खर्च हो चुके थे तथा अग्रिम यात्रा हेतु 5000 डालर की आवश्यकता थी। उनमें शराब, सिगरेट या अन्य दूसरा कोई भी शौक नहीं था। वे शुद्ध शाकाहारी थे।



Korea Times Photo

Brij Pal Singh, an Indian globe-biker, poses beside his British Raleigh bicycle. Korea is the 73rd country he has visited since he started the trip in May, 1973.

(14)



To this Indian round-the-world cyclist, nothing is impossible in this world. He now wants to ride his bicycle through China and is awaiting permission.

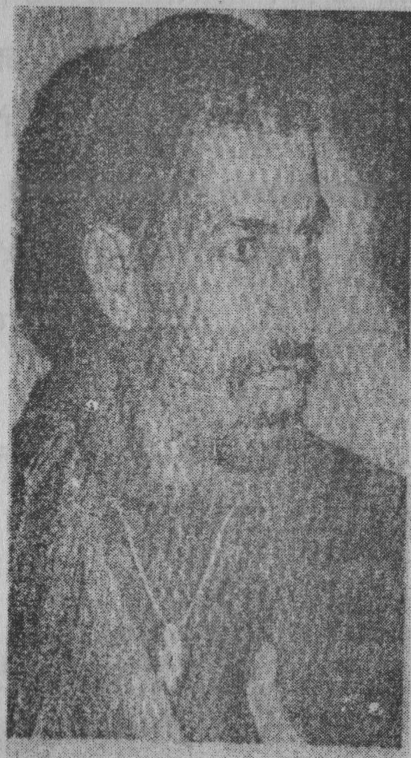
(15)

15. **"SOUTH CHINA MORNING POST"** ने 10 नवम्बर 1976 को उनकी साईकिल यात्रा का सचित्र वर्णन छापा गया। अखबार ने उनके कथन को इस प्रकार से व्यक्त किया–

"1978 के पूर्वाद्व तक वे 100 देशों से अधिक की यात्रा पूर्ण कर लेंगे तथा 60000 मील साईकिल चला लेंगे। अब तक वे 74 देशों की यात्रा में 48000 मील साईकिल चला चुके हैं।



श्री बी0 पी0 सिंह, चंचल सिंह के साथ नोटिंघम (इंग्लेण्ड) में



श्री बी0 पी0 सिंह

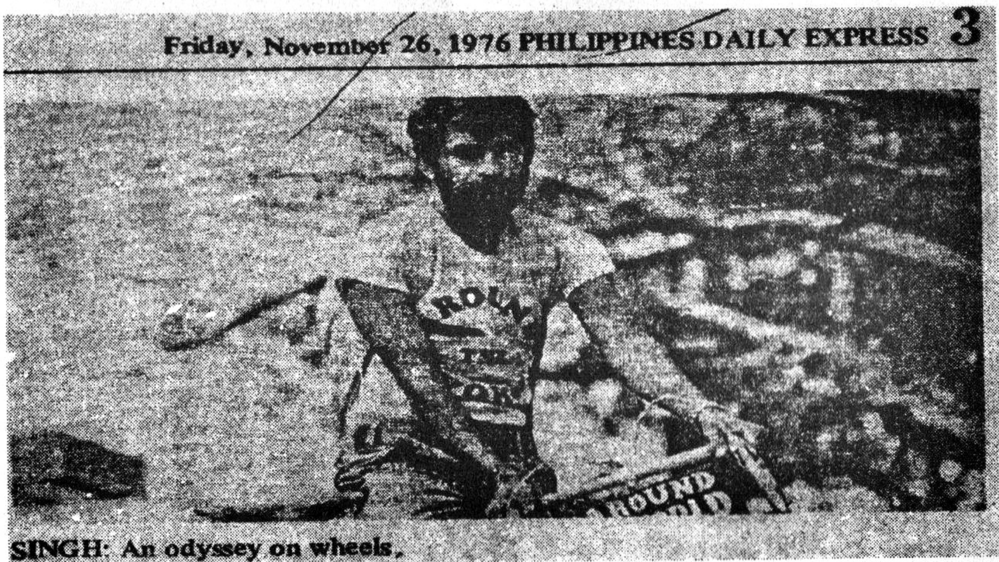
उनका अन्तिम पड़ाव

[HIS LAST DESTINATION]

श्री बी0 पी0 सिंह जी अपनी साईकिल पर आगे बढ़ते जाते थे। पुरानी यादें और बातें पीछे छूटती जाती थी। नई मंजिल, नये लोग और उनसे प्राप्त नई जानकारी, हर स्थान से लिए गये फोटो और वहाँ की संस्कृति उनकी विरासत थी। उनके पास यही एक खजाना था जिसे वे अपने साथ बड़ी हिफाजत से ले जा रहे थे।

श्री बी0 पी0 सिंह के नोट्स से ये ज्ञात हुआ कि उन्होंने 24 नवम्बर 1976 को 'होंगकांग' से 'मनीला' के लिए प्रस्थान किया। वे 'फिलीपीन्स एयर लाइन्स' द्वारा वहाँ पहुँचे।

वहाँ पर वे अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहे। प्रेस वालों को उनकी यात्रा के विषय में ज्ञात हुआ तथा उन्होंने श्री सिंह का इन्टरव्यू लिया। ये बात 26 नवम्बर 1976 की है। उनका फोटो साईकिल चलाते हुए वहाँ के समाचार पत्र 'फिलीपिन्स डेली एक्सप्रेस' [PHILIPINES DAILY EXPRESS] ने विस्तार से दिया।


Friday, November 26, 1976 PHILIPPINES DAILY EXPRESS 3

SINGH: An odyssey on wheels.

इसके बाद श्री बी0 पी0 सिंह की डायरी में 27–11–1976 से लेकर 3–12–1976 तक के लेख तो मौजूद हैं किन्तु उनकी तबियत 24–25 नवम्बर को ही खराब हो गई थी। डॉक्टर जोस के 26–11–1976 को लिखे पर्चे से यह बात ज्ञात हुई।

मनीला से प्राप्त समाचार के आधार पर

इससे एक बात तो पूर्ण स्पष्ट है कि उनका अन्तिम पड़ाव 'मनीला' ही रहा। 4 दिसम्बर 1976 को श्री बी0 पी0 सिंह जी को तेज बुखार हुआ और वहाँ उपस्थित उनके मित्रों ने उन्हें अस्पताल में भर्ती करा दिया। बुखार ने उनके गुर्दे पर असर किया। तभी 'मनीला' में भारतीय दूतावास के अधिकारी को उनकी बीमारी के बारे में पता चला तो उन्होंने श्री बी0 पी0 सिंह को दूसरे अस्पताल में भर्ती कराया।

इस प्रकार इलाज चलता रहा किन्तु श्री सिंह की हालत में सुधार नहीं हो सका। श्री सिंह ने 'मनीला' में अन्तिम साँस 29–12–1976 को ली।

भारतीय दूतावास के अधिकारियों ने श्री बी0 पी0 सिंह के परिवार वालों को तुरन्त ही यह सूचना दी। उनके बड़े भाई श्री महीपाल सिंह जी ने पत्राचार कर श्री बी0 पी0 सिंह का सामान प्राप्त करने हेतु कार्यवाही की। दूतावास के अधिकारियों ने श्री बी0 पी0 सिंह के कपडे, फोटो, उनकी विदेश यात्रा से सम्बन्धित समाचार पत्रों की कटिंग एवं कैमरा आदि उनके परिवार को भिजवा दिए। इसके साथ ही उन्होंने श्री बी0 पी0 सिंह की 'अस्थियाँ व राख' एक पात्र में रखकर उनके परिवार वालों के पास भेज दिए, जिसे उनके बड़े भाई श्री महीपाल सिंह जी ने 'श्रद्धा स्वरूप हरिद्वार' ले जाकर गंगा माँ को समर्पित कर दिया।

श्री बी0 पी0 सिंह जी ने समय के साथ चलकर प्रभु की बनाई इस दुनियाँ को अपने कदमों से नापने का एक जोरदार प्रयास किया। इतने देश साईकिल से पार करना तो एक सपने जैसा लगता है।

यह उनका एक भयमुक्त व साहस से भरा कदम था जिसने देश की शान में चार चाँद लगाये। श्री सिंह शुद्ध शाकाहारी व स्वामी विवेकानन्द के अनुयायी रहे तथा अपनी यात्रा के दौरान अति आध्यात्मिक हो उठे, तभी तो प्रभु की एक आवाज पर उनसे मिलने यह कहकर चल दिए –

"सैर की दुनियां की हमने,
जिंदगी के छोर तक
जब खुदा–ए–बन्द ने
आवाज दी, हम चल दिए।"

(ढाका जी)

इस प्रकार भारत माँ ने अपना एक साहसी सपूत श्री बी० पी० सिंह के रूप में सदैव के लिए अपने आंचल में समेट लिया और उसे प्रभु की एक धरोहर समझ प्रभु को पुनः लौटा दिया।

हम प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना करते हैं तथा अपने अश्रु रूपी पुष्प उनके पावन चरणों में अर्पित करते हैं।

बिखरी यादें

(OLD MEMORIES)

"यादें जीने का सहारा होती हैं।" याद भी उसी की आती है जिसने कार्य याद रखने के लायक किये हों अन्यथा तो लोग अपने सगों को भी चन्द दिनों में ही भुला देते हैं। इस अत्यधिक व्यस्त संसार में दूसरों के साथ बाँटने हेतु अब हमारे पास समय ही कितना है फिर भी श्रेष्ठ व्यक्तियों के श्रेष्ठ कार्यों हेतु समय निकालकर उन्हें याद रखना हमारा नैतिक कर्तव्य तो बनता ही है।

(1) इसी क्रम में श्री ब्रजपाल सिंह के बारे में जब उनके बचपन के मित्र **श्री महीपाल सिंह पुत्र श्री शेरसिंह जी (कैल)** से बात की गई तो उन्होंने अपने विचार इस प्रकार रखे –

"मैंने और श्री ब्रजपाल सिंह ने अपने बचपन का ज्यादातर समय कक्षा 8 तक एक साथ बिताया। वे खेलने के शौकीन रहे तथा कबड्डी के खेल का उन्हें बहुत शौक था। वे बचपन से ही ऋषि मुनियों की बातें ज्यादा करते थे। उनका चरित्र हमेशा ही ऊँचा रहा। स्कूल के बाद घरेलू कार्यों पर भी ध्यान दिया करते थे। उनकी प्रवृत्ति निडर रही तथा हमेशा झूठ बोलने वालों के खिलाफ रहे। वे 'सेना' में जाना चाहते थे किन्तु मैंने उन्हें मना कर दिया तथा वे 'मसूरी' कालेज में पढ़ने चले गये। तत्पश्चात् मैं सेना में चला गया तथा ब्रजपाल सिंह "विदेश यात्रा" पर निकल पडे।"

(2) इसी क्रम में जब **श्री महीपाल सिंह जी**, जो उनके बड़े भाई हैं उन्हें स्मरण करते हुए भावुक हो उठते हैं और कहते हैं कि –

"हमने श्री ब्रजपाल सिंह को उच्च अध्ययन हेतु 'मसूरी कालेज' में भेजा था। हर माह उनको पैसे व घी भेजते थे। वे कभी हमारे सामने कुछ नहीं कहते थे तथा हमारी बहुत इज्जत करते थे। हम सभी परिवार के सदस्य उनसे मिलने व उनका अध्ययन स्तर जानने हेतु मसूरी जाते रहते थे। वे कहा करते थे कि जीवन में कुछ ऐसा जरूर करना है जो सामान्य से अलग हो तथा विलक्षण हो।"

(3) 'मसूरी' में श्री बी0 पी0 सिंह के जूनियर रहे **श्री देशपाल सिंह जी** से भी उनके बारे में बातचीत हुई तो वे बड़े ही उत्साहित होकर इस प्रकार से बोले –

"मुझे श्री बी0 पी0 सिंह जी कक्षा 9 में दाखिला कराने हेतु अपने साथ मसूरी ले गये और मेरा दाखिला आर0 एन0 भार्गव इन्टर कालेज – मसूरी में कराया। देशपाल जी कहते हैं कि श्री बी0 पी0 सिंह के बाद दूसरे छात्र संघ अध्यक्ष (म्यूनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज मसूरी के) श्री ज्योत सिंह जी बने। श्री बी0 पी0 सिंह बड़े ही मिलनसार स्वभाव के थे। उन्होंने एक भोजन पकाने वाले को अध्ययन कराने में बड़ी मदद की। उनकी लोकप्रियता छात्रों के मध्य अत्यधिक थी।"

(4) मुझे **श्री राजेन्द्र सिंह मलिक** से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे मसूरी में श्री बी0 पी0 सिंह के साथ रहे। एक साथ भोजन बनाकर खाना तथा साथ –2 अध्ययन करना उनकी आत्मीयता को प्रकट करता है। वे श्री बी0 पी0 सिंह के बारे मे बताते हैं कि –

"मैं और श्री सुक्रमपाल सिंह जो कि 'मेरठ विश्वविद्यालय' में "भाई जी" के नाम से जाने जाते थे, 'वर्ल्ड टूर' पर श्री बी0 पी0 सिंह के

साथ जाना चाहते थे किन्तु श्री बी0 पी0 सिंह को उम्मीद थी कि हम दोनों विश्वभ्रमण बीच में भी छोड़ सकते हैं। इसलिए उन्होंने हम दोनों को अपने साथ ले जाना उचित नहीं समझा। वे बताते हैं कि बड़ौत के रहने वाले श्री अशोक खत्री जी श्री बी0 पी0 सिंह से 'कनाडा' में मिले थे। श्री बी0 पी0 सिंह अपनी 'विश्व यात्रा' से लौटकर 'भारत देश' की सेवा करना चाहते थे। वे श्री सिंह के शब्दों को याद करते हैं –

'मैं किसान का बेटा हूँ और चूँकि मैंने इस दुनियाँ में जन्म लिया है तो मैं इसे पूरी तरह देखना चाहता हूँ।'

श्री राजेन्द्र जी कहते हैं कि उन्होंने श्री बी0 पी0 सिंह को ये कहा था कि आप अंग्रेजी नहीं जानते, आपको परेशानी आ सकती है तो श्री बी0 पी0 सिंह ने उत्तर दिया कि अंग्रेजी भाषा उनके लिए बाधक नहीं बन सकती है। भारत एक अच्छा राष्ट्र है। श्री बी0 पी0 सिंह ने छात्र संघ की स्थापना "**मसूरी म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज**" में कराई तथा प्रथम छात्रसंघ अध्यक्ष बने। उन्होंने गरीब छात्रों की पढ़ाई में मदद की।

श्री बी0 पी0 सिंह "**युथ कांग्रेस**" के स्थापित अध्यक्ष थे तथा श्री मलिक उपाध्यक्ष थे। उस समय श्री एस0 पी0 राना उ0 प्र0 के संयोजक थे। श्री सिंह पूर्णरूपेण शाकाहारी थे। उन्होंने हरियाणा के छात्रों की भी अनेक कार्यों में मदद की।"

(5) **श्री बाबू सिंह जी बालियान** को जब श्री श्री बी0 पी0 सिंह की "**साईकिल पर विश्वयात्रा**" के बारे में पता चला तो वे उनके बारे में जानकर बड़े ही उत्साहित हुए क्योंकि श्री बालियान जी की रूचि घूमने व नये स्थानों का भ्रमण करने में रही है। उन्हें अपना छात्र जीवन याद आ गया और कहने लगे कि उनके माता पिता हमेशा ही कहा करते थे कि

उनके पैर में "पद्म" है। उन्होंने अनेक देशों की कई बार यात्रा भी की और वर्तमान में समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय हैं। वे श्री बी० पी० सिंह के बारे में इस प्रकार अपने विचार व्यक्त करते हैं –

"I praise Sh. B.P. Singh for his adventurous journey **"Around the World On Bicycle"** held at a very early age. B.P. Singh has become the ambassador of Indian people to bring the message of humanity and love to all the people of the world on bicycle.

I congratulate Sh. Yash Kumar Dhaka to highlight the activities of Sh. B.P. Singh through this book. His unique and adventurous deeds will be remembered in future. I wish for the peace of his soul in Heaven."

By –
Babu Singh Balyan
Rtd. Sub Divisional Magistrate
Founder – "Manas Suman" & "Meerut Ratan"

(6) **डा० राकेश कुमार बंसल जी** ने अपने विचार श्री सिंह के बारे में इस प्रकार से व्यक्त किए –

"मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप भारत के साहसी नवयुवक श्री बी० पी० सिंह की साईकिल यात्रा – 'अराऊण्ड द वर्ल्ड' पर एक पुस्तक जो उनके कार्यकलापों व साईकिल से विश्व भ्रमण के विषय में है, लिख रहे है।

वास्तव में श्री बी० पी० सिंह का यह साहसिक कदम अपने आप में श्रेष्ठ एवं धन्य हैं। उन्होंने साईकिल से 76 देश व 5 महाद्वीप पार करते

हुए 48 हजार मील से अधिक साईकिल चलाई जो अपने आप में ही एक आश्चर्य है। उनका विश्व स्तर पर भाईचारा आने आप में धन्य है। रास्ते में अनेकानेक कठिनाईयों का सामना उन्होंने किया तथा 'मनीला' से अन्तिम पत्र अपने परिवार को लिखा।

मुझे श्री बी0 पी0 सिंह के परिवार से भेंट का सुअवसर कैल जाने पर प्राप्त हुआ। श्री बी0 पी0 सिंह ने न केवल अपना जनपद वरन् सम्पूर्ण विश्व में भारत की छवि को प्रकाशमान किया है। मैं उस महान आत्मा को हृदय से नमन करता हूँ तथा श्री यशकुमार ढाका जी को इस श्रेष्ठ कार्य को पूर्ण करने हेतु शुभकामनाएँ व बधाई देता हूँ।"

द्वारा–

डा0 राकेश कुमार बंसल

एम0 काम0, पी0 एच0 डी0

निदेशक – राष्ट्रीय रामायण मंच व सह सम्पादक --"मानस सुमन"

(7) **श्री उदय शर्मा जी**, श्री ब्रजपाल सिंह को श्रद्वांजलि अर्पित करते हुए भावविह्वल दिखाई दिए। श्री शर्मा जी **'आनन्द टिशु लिमिटेड'** के चेयरमैन है तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। वे श्री सिंह की **'विश्व साईकिल यात्रा'** से अत्यन्त प्रभावित हुए और उनके सम्मान में अपने पुष्परूपी शब्द इस प्रकार समर्पित किए –

"I came to know about this great cyclist named Sh .B.P Singh. I am grateful to Dhaka Ji for giving me this chance to write the few lines in the honour of Late Sh. B.P. Singh.

He had an entirely different Personality who visited 76 countries on his bicycle. He was always dependent on Almighty God.

I also Congratulate Shri. Dhaka Ji for writing a book on Sh. B.P. Singh which is a difficult task in itself. Sh. Dhaka ji told me that Sh. B.P. Singh wanted to write a book on his experiences **'Around the World'.** Now the dream of Late Sh. B.P. Singh is being fulfilled by Dhaka Ji. I complement him."

By –

Uday Sharma

(Meerut Ratan & Chairman – Anand Tissue Ltd)

(8) **डा0 मोहिनीश जी** ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए–

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि भाई ढाका जी ब्रजपाल सिंह की यादों को संजोकर उन्हें सदैव के लिए धरोहर के रूप में चिरस्मरणीय बनाने जा रहे हैं।

श्री बी0 पी0 सिंह जी ने "विश्व साईकिल यात्रा" में 76 देशों का भ्रमण कर राष्ट्र को जो गौरव प्रदान किया है, उसके लिए मैं उन्हें हृदय से नमन करते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

डा0 मोहिनीश (सीनेटर)

चौ चरण सिंह विश्वविद्यालय (मेरठ)

(9) आदरणीय **कविवर श्री विष्णु जी सरस** अपने शब्दों की माला श्री बी0 पी0 सिंह को इस प्रकार समर्पित करते हैं –

"आज के भौतिकवाद में जहाँ धन की दौड़ में अधिकांश लोग एक दूसरे को पछाड़ने में झूठ एवं फरेब के सहारे रातदिन लगे हुए हैं, वहीं श्री ब्रजपाल सिंह जी का जन्म होना एक ईश्वरीय चमत्कार से कम नहीं है, जिन्होंने विश्वबन्धुत्व की भावना को जीवन का परम लक्ष्य मानकर मात्र

साईकिल द्वारा विश्व के अनेक देशों का भ्रमण किया तथा गीता का उपदेश देकर भारतीयता का झण्डा फहराया। ऐसे गीता मर्मज्ञ, संत सरीखे, त्यागमूर्ति को मैं शत् –2 प्रणाम करता हूँ तथा अपनी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर अपने जीवन में बड़ी पावन उपलब्धि समझ अपने को सौभाग्यशाली व धन्य समझता हूँ।''

मैं श्री यश कुमार ढाका जी को इस पवित्र कार्य को पूर्ण करने हेतु ढेरो शुभकामनाएँ देता हूँ।

(10) श्री बी0 पी0 सिंह के बारे में **श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' जी** ने अपने श्रद्धा सुमन इस प्रकार अर्पण किए–

''श्री ब्रजपाल सिंह जी का साईकिल पर 'विश्वभ्रमण' करने की प्रतिज्ञा स्वयं में ही उनकी दृढ़ता का प्रतीक थी। उन्होंने साईकिल पर 76 देशों व 5 महाद्वीपों में प्रेम व भाईचारे का सन्देश दिया। उनकी ये श्रेष्ठ एवं उच्च इच्छा शक्ति आने वाली पीढ़ियों का मनोबल ऊँचा कर उन्हें साहसिक व देशभक्ति के कार्यों हेतु प्रेरित करती रहेगी ऐसा मेरा ये पूर्ण विश्वास है। मैं उस महान आत्मा को सादर नमन करता हूँ।''

वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'

(सचिव)

साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संगम अकादमी परियावाँ– प्रतापगढ़ (उ0प्र0)

(11)

JANHIT FOUNDATION 

श्री यश कुमार ढाका
नेहरू नगर मेरठ

16.12.04

प्रिय ढाका जी,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि हमारे क्षेत्र के एक नौजवान ने साईकिल द्वारा विश्व भ्रमण जैसे साहसिक एवं दुर्गम कार्य को पूर्ण करने का बीड़ा उठाया था। निश्चित रूप से यह कार्य युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

श्री सिंह इस क्षेत्र ही नहीं वरन् भारत की भी शान हैं। उनके बहादुरी से परिपूर्ण कार्यों को आज युवा पीढ़ी के समक्ष लाना हम सबका परम् कर्तव्य है। इस दिशा में आपके द्वारा तैयार की जा रही पुस्तिका निश्चित रूप से एक मील का पत्थर साबित होगी ऐसा मेरा मानना है।

भारत के इस महान सपूत की स्मृति में आज मैं और जनहित फाउंडेशन के सभी साथियों की ओर से श्रृद्धांजलि।

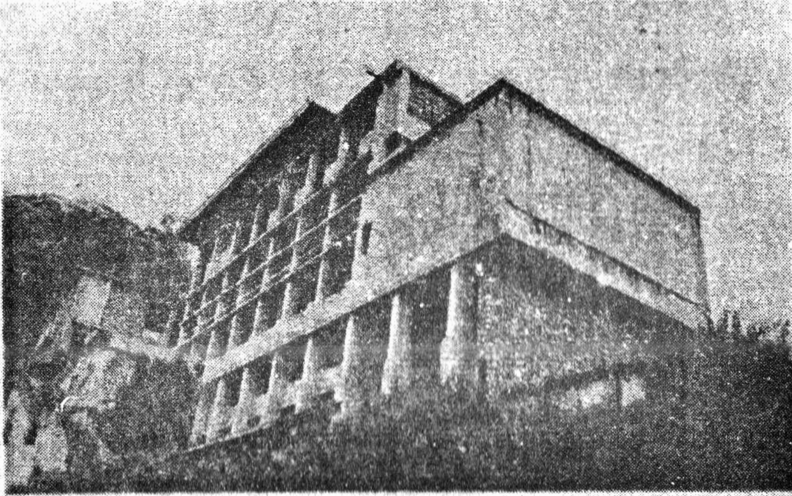
धनयवाद

अनिल राणा
(निदेशक)
जनहित फाउंडेशन

C-28, Shastri Nagar, Meerut (U.P.) Ph : +91 121 2763418, 2769329
Email : janhit_foundation@yahoo.com Website : www.janhitfoundation.org

मसूरी वर्णन

(A VISIT TO MUSSOORI)



म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज मसूरी

श्री बी0 पी0 सिंह ने अपनी शिक्षा मसूरी (उत्तरांचल) में प्राप्त की थी। इसलिए मुझे वहाँ जाकर उनके समय में, उनके साथ पढ़ने वाले मित्रगणों से बातचीत करने की प्रबल इच्छा हुई। मेरी पत्नी श्रीमती नीलम ढाका भी उस विद्यालय को देखना चाहती थी जिसमें उनके चाचाजी श्री बी0 पी0 सिंह पढते थे, अतः वे भी मेरे साथ मसूरी 4–10–2004 को चल पड़ीं। हमने श्री देशपाल जी से उनके मित्रों के पते ले लिए थे।

सर्वप्रथम हम मसूरी में श्री गोवर्धन नागपाल जी से मिले। उन्होंने बताया कि –

A – "श्री ब्रजपाल सिंह मेरे सीनियर थे। वे कालेज के कार्यक्रमों में बढ–चढ़ कर हिस्स लेते रहे। वे दिल के बहुत अच्छे थे। उनकी कार्य प्रणाली बहुत ही उपयोगी थी। उन्होंने सभी छात्रों को संगठित करने की पहल की। दूसरों की मदद करने को हमेशा तत्पर रहते थे। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ।"

B – हम मसूरी में श्री गुरूचरण सिंह जी चढ्ढा, अध्यक्ष व्यापार संघ (मसूरी) से भी मिले। उनका बहुत ही अच्छा स्वभाव था। उन्होंने हमसे तसल्ली से बातचीत की और बताया कि–

"मेरी मुलाकात श्री बी0 पी0 सिंह से प्रवेश के समय 1971–72 में हुई। मैं लगभग दो वर्ष उनके साथ रहा। श्री सिंह अपने शब्द व वचन के पक्के थे। विद्यालय में क्षेत्रीय व बाहरी ग्रुप हुआ करते थे। मैंने उन्हें छात्रसंघ बनाने की सलाह दी। उस समय श्री थापरयाल जी प्रधानाचार्य थे।"

प्रारम्भ में वे छात्रसंघ के लिए सहमत नहीं हुए किन्तु बाद में मान गये। श्री बी0 पी0 सिंह विद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष बने और मैं महामंत्री बना। बाद में छात्रों के हितों के लिए हम लोगों ने भूख हड़ताल भी की। वे अपने जीवन में कुछ नया करना चाहते थे। इसलिए "विश्व साईकिल यात्रा" पर निकल पड़े।

मैं उनका सम्मान उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति व श्रेष्ठ चरित्र के कारण करता हूँ। छात्र उन्हें बहुत पसन्द करते थे। उन्होंने विद्यालय के वातावरण में बहुत सुधार किया।

हमने उनके साथ मिलकर "युथ कांग्रेस" भी बनाई। हमने एक "सांस्कृतिक प्रोग्राम' भी किया तथा जो पैसा उसमें से बचा उसको गरीब छात्रों की फीस भरने व किताब आदि में लगा दिया।

श्री चढ्ढा स्मरण करते हैं कि श्री बी० पी० सिंह हम सभी छात्रों के प्रेरणास्त्रोत थे। हमने उनकी सलाह पर किसी अन्य से लेकर कोई भी वस्तु नहीं खाई। आज भी उनकी याद हमारे दिलों में जीवित है। हमने उनकी स्मृति में कई वर्षों तक खेलों जैसे टेबिल टेनिस आदि का आयोजन भी कराया।

हम **'म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज'** पहुँचे। वह सोमवार का दिन था। रास्ते बताने में हमारी मदद विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने की। उनसे ही ज्ञात हुआ कि सन् 2004–05 को विद्यालय में सम्पन्न हुये छात्र संघ चुनाव में अध्यक्ष पद पर एम० काम० फाईनल के छात्र श्री त्रिलोक राणा विजयी हुए हैं तथा श्री विनोद पंवार महामन्त्री पद पर हैं। अध्यक्ष श्री त्रिलोक राणा बहुत ही विनम्र व गुरूजनों को आदर देने वाले हैं। उन्होंने ही हमको आदरणीय प्रवक्ता मण्डल से मिलवाया। वहाँ पर उस समय डा० सुनील पंवार जी, डा० श्री रामगुप्ता जी एवं डा० प्रमोद भारतीय जी उपस्थित थे। उन्होंने हमको भरपूर सहयोग प्रदान किया तथा श्री ब्रजपाल सिंह की साईकिल से विश्वभ्रमण की बात जानकर प्रसन्नता प्रकट की।

आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, डा० आर० एस० शुक्ला जी से उस समय भेंट नहीं हो सकी। वे कार्यवश बाहर गये हुए थे।

विद्यालय के **श्री भीम सिंह जी**, जो श्री ब्रजपाल सिंह के 'छात्र जीवन' से ही वहाँ थे, ने बताया कि –

"श्री बी० पी० सिंह आदत के बहुत अच्छे थे। छात्र जीवन में उनकी 'अंग्रेजी' कमजोर थी। उनका स्वभाव दूसरों की मदद करना था।"

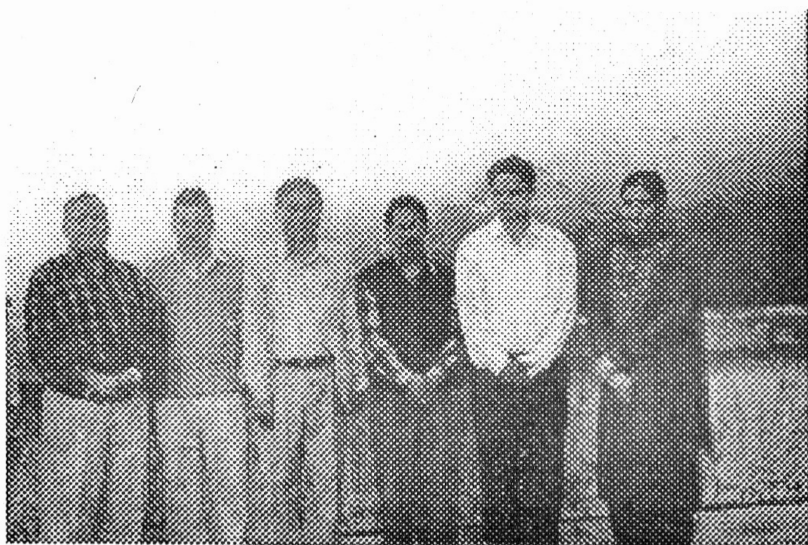
विद्यालय के ही श्री 'भगवत प्रसाद जी' ने उनके बारे में इस प्रकार से बताया कि –

"श्री ब्रजपाल सिंह अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। सभी छात्र उन्हें बहुत पसन्द करते थे।"



(छात्र संघ प्रतिनिधि, छात्रों को धन्यवाद देते हुये)

कार्य पूर्ण कर हम मसूरी से वापिस देहरादून के लिए चल दिये। **श्री बी0 पी0** सिंह से जुड़ी यादें वहाँ ताजा हो गई थीं। उनके पुराने **मित्रगण** इतने लम्बे समय बाद उनके बारे में बात करके अपने आपको **छात्र** जीवन में लौटा हुआ महसूस कर रहे थे। यादें पुरानी और बिखरी हुई थीं जिन्हें जोड़ने का प्रयास हम कर रहे थे।



(विद्यालय परिवार के साथ लेखक, बायें व उनकी पत्नी, दायें)

मसूरी कालेज का यह छात्र विश्वस्तर पर इतना महान व **साहस** भरा कार्य करने के उपरान्त भी प्रसिद्धी के उस मुकाम तक नहीं **पहुँच** सका जिसके वो लायक था। मसूरी की वादियों में आज भी बी0 पी0 सिंह जीवित है और उन्हें जीवित रखने का श्रेय उनके कार्यों एवं सिद्वान्तों को जाता है।

"म्यूनिसिपल पोस्ट ग्रेजएुट कालेज – मसूरी" के इस छात्र को पाकर 'मसूरी – (देहरादून)' को उस समय कितनी प्रसन्नता हुई होगी जब दिनांक 23–4–1976 को **"इण्डियन एब्रौड"** में श्री बी0 पी0 सिंह को **"20 वीं शताब्दी का यूलेसिस"** कहा गया। **"द डेली टैक्सास"** समाचार पत्र ने दिन सोमवार, जनवरी 1976 को उन्हें **"साईकिलिंग प्रोफेसर"** जैसे **शब्दों** से नवाजा।

धन्य है यह विद्यालय जिसने श्री सिंह को इतनी दृढ़ता व **शक्ति** प्रदान की कि वह साईकिल पर विश्व यात्रा हेतु निकल पड़े। विश्वस्तर पर अनेक बार इस विद्यालय व (मेरठ विश्वविद्यालय) का नाम श्री सिंह की साईकिल यात्रा को लेकर समाचार पत्रों की शोभा बढ़ाता रहा। देश का नाम 'इण्डिया' तो उनकी साईकिल पर सूर्य की भाँति चमकता रहा। **हम** इस विद्यालय की श्रेष्ठता को शत –शत नमन करते हैं।

समीक्षा एवं सार

(WRITER`S VIEWS)

इस संसार में हर एक व्यक्ति अपनी एक छवि लेकर जीना चाहता है। वह इसके लिए प्रयास भी करता है और शेष भाग्य के भरोसे छोड़ देता है। परिस्थितियों से जूझ कर संघर्ष करने वाले व्यक्ति 'चन्द' ही होते हैं। "जांबाज" कहलाना तो बहुत लोग चाहते हैं किन्तु उसके लिए प्रयास गिने चुने व्यक्ति ही कर पाते हैं।

श्री ब्रजपाल सिंह जी ने अपनी उम्र व ज्ञान को सार्थक करते हुए 'विश्व भ्रमण' पर जाने की योजना बनाई तो एक सच्चे व बहादुर इंसान की तरह उसको पूर्ण करके भी दिखाया। उन्होंने "स्वामी विवेकानन्द" की पुस्तकों से जो ज्ञान अर्जित किया, उसी ने उनके जीवन को जीने का एक नया रास्ता दिखाया। मनुष्य का लक्ष्य सारे दिन काम करके थककर तथा खाना खाकर सो जाना मात्र ही नहीं है। यदि हम ऐसा कर रहे हैं तो ये 'सांसारिकता' है और जो इससे ऊपर उठकर कुछ नया करने का दम भरते हैं, वे ही सच्चे अर्थों में 'हीरो' कहलाते हैं तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान कर चिरकाल तक अपने नाम को अमर कर देते हैं।

श्री बी० पी० सिंह ने ग्रामीण क्षेत्र में जन्म लेकर भी एक बड़ा दिल और दिमाग पाया। उनका पढ़ाई हेतु 'मसूरी' जाना ही एक नये कदम का प्रतीक था। वहाँ पर छात्रों को संगठित करना भी उनकी एक नई सोच थी। एम० ए० अर्थशास्त्र से उत्तीर्ण कर "विश्व यात्रा" पर जाने का विचार भी उनके जीवन में कुछ नया कर गुजरने का प्रतीक था।

यात्रा का प्रारम्भ 'आठ डालर', एक पासपोर्ट तथा एक साईकिल पर करना अपने आप में एक चुनौती पूर्ण कार्य था। विश्व यात्रा पर जाते समय उनका 'अंग्रेजी ज्ञान' अत्यन्त कमजोर था किन्तु एक देश से दूसरे देश में घूमते हुए उन्हें वहाँ के लोगों से अंग्रेजी में ही बात करनी पड़ी। उनकी डायरी के पन्नों में उनके हाथ से लिखी अंग्रेजी भाषा अत्यन्त सार्थक व अच्छी है। उन्होंने विश्व के बारे में तथा वहाँ के देशों के बारे में लिखते समय अंग्रेजी भाषा का ही अधिक प्रयोग किया है। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने तीन भाषायें –अंग्रेजी, जर्मनी तथा स्पेनिश सीख ली थीं।

ये बात बिल्कुल सच है कि घर से निकलकर सुख की उम्मीद कम ही करनी चाहिए। श्री बी0 पी0 सिंह ने यात्रा के दौरान अनेकानेक कष्ट उठाये।

'जर्मनी' में उनका धन लूट लिया गया। 'इथोपिया' में बदमाशों ने उन पर हमला कर दिया और उन्हें लगभग 14 दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। 'दार–एस–सलाम' में उनके कपड़े चोरी हो गये तथा लीमा (पेरू) में उनका कैमरा खो गया। 'चिली के रेगिस्तान में साईकिल टूट गई। न खाना पास था और न पानी। उस दिन 240 किमी0 साईकिल चल चुकी थी। पूरी रात रेत के ढेर पर पड़े रहे। अगले दिन एक वाहन ने उन्हें मदद की और तब उनके प्राण बचे। 'नैरोबी' के जंगल से गुजरते समय जानवरों के डर से पेड़ पर बैठकर वक्त गुजारना पड़ा आदि ऐसी अन्य बहुत सी घटनाएँ है जिनका सामना करके श्री सिंह ने 76 देशों और 5 महाद्वीपों की यात्रा पूर्ण की। उस समय तक वे 48000 मील से अधिक साईकिल चला चुके थे। अपनी यात्रा का खर्च पूरा करने हेतु वे समाचार पत्र वितरण, अस्पताल, फूल, जूस और बागवानी आदि का कार्य किया

करते थे। एक जूस की फैक्टरी में भी उन्होंने काम किया। उन्हें अप्रवासी भारतीयों से भी मदद मिल जाया करती थी।

2 HEMBURG 13, DEUTSCHE PRESS- AGENTUR (dpa) लिखता है कि –

"ओसोलो' (नार्वे) में उन्होंने एक सन्तरे की जूस फैक्ट्री में "इंग्लिश लैग्यूऐज रिशपश्निस्ट" के पद पर 22 दिन तक काम किया और 700 मार्क्स अर्जित किए तथा उस पैसे से अपनी एक नई साईकिल खरीदी।'

श्री सिंह लिखते हैं कि भाषा की समस्या उनके सामने अक्सर आती रही। इस समस्या के कारण कभी आँसू आते रहे तो कभी हँसी। उन्हीं के शब्दों में आप भी देखिए –

"In Iran (So many few people speak English). I asked for water and they produced of all things, lock. In Holland, I asked for milk and was given butter milk."

उन्होंने 'नार्थ अमेरिका' के हिन्दू टेम्पिल में 23 अप्रैल 1976 को 'इण्यिन एब्रोड' के संवाद्दाता 'श्री पवन सहगल' को दिए गये साक्षात्कार में बताया कि –

"मैंने एक घण्टे में 15 मील प्रति घण्टे की गति से साईकिल चलाई तथा "मई 1973 से अप्रैल 1976" तक पूरी यात्रा में मेरा 22 पाऊण्ड वजन घटा तथा वर्तमान में 132 पाऊण्ड बचा है।"

उनके बारे में THE NEWS MEXICO CITY, MONDAY JAN.5, 1976 लिखता है कि –

"श्री सिंह ने कहा कि वे अच्छे व अनुकूल मौसम में एक दिन में 200 मील तक साईकिल चला सकते हैं।"

उनकी पूरी यात्रा में उन्होंने 4 साईकिल बदली तथा 5 पासपोर्ट का उपयोग किया जिसमें से 4 का उल्लेख उनकी डायरी में मिलता है।

1- Ist – Passport No. – J – 439580 - LUCKNOW

2- IInd – Passport No. – J – 580448 - BERLIN

3- IIIrd – Passport No. – J – 995261 - ADDIS ABABA

4. IVth – Passport No. – J – 155094 - MEXICO CITY

उन्होंने पत्र में कहा –

"मेरी यह यात्रा एक "डिसकवरी" (Discovery) है तथा 50 घण्टे तक मैं अपनी इस यात्रा के विषय में बोल सकता हूँ।

"Chicago Tribune" – Friday, March 12, 1976 के अखबार ने लिखा है कि –

"He will go to Hawaii, The Far East, Russia and home again sometime in 1978. He plans to write a book about his experience tentatively titled – **"ODYSSEY".**

इसी प्रकार "THE DAILY TEXAS" MONDAY, JANUARY 19, 1976 को अपने समाचार में श्री बी0 पी0 सिंह को **"CYCLING PROFESSOR"** कहकर सम्मानित किया। अखबार ने उनके विचार इस प्रकार रखे –

Sh. B.P. Singh said–

" No good thing can be done without difficulties."

"INDIAN ABROAD (NORTH AMERICA) Friday, April 23, 1976 के समाचार पत्र ने श्री बी0 पी0 सिंह के बारे में **"YOUNG INDIAN ULYSSES OF 20th CENTURY"** लिखकर समाचार दिया।"

श्री बी0 पी0 सिंह अपनी यात्रा के दौरान लगभग 40 पत्र प्रतिमाह लिखते थे जो कि भिन्न –2 देशों में अपने मित्रों व शुभचिन्तकों के लिए

होते थे। मैंने उनके सामान से प्राप्त पत्रों को पढ़ा। वे अत्यन्त मार्मिक व शिक्षाप्रद होते थे। कई विदेशी लड़के और लड़कियाँ उनसे प्रभावित होकर उन्हें पत्र लिख देते थे। श्री सिंह ने उन्हें भी 'स्वामी विवेकानन्द' का ज्ञान दर्शन ही पढ़ाया। वे इस यात्रा के माध्यम से संसार की परिस्थितियों व भविष्य को भी देखना चाहते थे, जैसा कि उन्होंने एक अखबार को बताया भी है कि –

"I have learnt about people and their customs, religions, political and economic sitsuations. I have come to learn more about the future of the world".

अखबार "SOUTH CHINA MORNING POST– WEDNESDAY 10, 1976" लिखता है कि –

"Sh. B.P. Singh hopes to visit NAURU, The tiny but incredibly rich Island of Phosphate and will carry on to Australia, his sixth contenent. By the time early 1978 comes along, he expects to have Covered 60000 miles and cycled through more than 100 Countries."

वैसे तो मुझे काफी मात्रा में उनसे सम्बन्धित विदेशी समाचार पत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें उनकी साईकिल यात्रा का विस्तारपूर्वक वर्णन है। कुछ अलग –2 कथन भी है। उनकी इच्छा "आस्ट्रेलिया" जाकर घर लौटने की थी। तत्पश्चात् वे अपनी यात्रा के अनुभवों पर एक "औडसी" नाम से पुस्तक लिखना चाहते थे और दूसरी इच्छा–अर्थशास्त्र (ECONOMICS) विषय (कम्पलीट एण्ड कम्परेटिव स्टडी आफ वर्ल्ड इकोनोमिक्स) पर 'डाक्टरेट' (Ph.D) करना चाहते थे। अब इसे 'वक्त की ताकत' कहें या 'भाग्य का लेख' कि श्री सिंह 'मनीला' (फिलीपिन्स) में बुखार से पीड़ित हुए। उन्हें भारतीय दूतावास ने चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराई किन्तु

कुछ विशेष फायदा न मिल सका और लगभग 25–26 दिन अस्पताल में रहने के बाद उनका देहान्त 29–12–1976 को हो गया।

सदी के इस अद्भुत 'विश्व साईकिल यात्री' की समस्त बातें, कार्य व घटनाएं अखबारों में सिमट कर रह गई।

उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान लगभग प्रत्येक अखबार को अपने गाँव–कैलशिकारपुर, जनपद–मुजफ्फरनगर (उ0 प्र0) व अपने विद्यालय "म्युनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कालेज मसूरी" जो उस समय "मेरठ विश्व विद्यालय" के अन्तर्गत आता था, का वर्णन किया तथा विश्व में अपने देश का नाम रोशन किया।

जो कार्य उन्होंने 27 वर्ष की आयु से प्रारम्भ कर 30 वर्ष की आयु तक 76 देश घूम कर 48000 मील से अधिक साईकिल चलाने का किया, ऐसा कार्य तो विश्व में चन्द लोग ही कर पाते हैं जिसने "एकला चलो रे" की तर्ज पर अकेला चलकर संसार में अपनी हिम्मत की एक अनोखी मिसाल कायम की। उन्होंने एक अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि होते हुए भी सादा, सरल, और सन्त जैसा जीवन गुजारा। एक देश में शाकाहारी भोजन न मिलने पर चावलों पर नमक छिड़कर कई दिन तक खाया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो हमें उनकी जीवन शैली की गहराईयों तक जाने हेतु विवश करते है। श्री बी0 पी0 सिंह को अपने राष्ट्र से अत्यन्त प्रेम था। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि मैं सारी दुनियां घूमकर अन्त में अपने देश में ही रहुँगा। उनके शब्दों को देखिये –

"India lives in her ten lakhs of villages. I would like to go and settle down in one such villages that is real India, my India."

"उन्होंने भारतीय नारी को विश्व में श्रेष्ठ एवं महान माना है और कहा है कि वह सृष्टि के अन्तिम दिन तक महान ही रहेगी क्योकि वह आज भी अपनी मर्यादा में सीमित है।"

साथ ही साथ हम उस 'माता' को भी नमन करते हैं जिसने श्री **सिंह** जैसे 'शूरवीर' को जन्म देकर 'माता' होने का नाम सार्थक किया। उनके इस पुत्र ने 'पुत्र' होने की मर्यादा निभाकर अपनी 'माताश्री' को धन्य कर दिया। कितनी उचित है ये पंक्तियाँ उनकी माताश्री के लिए –

"जननी जने तो भक्त जन, या दाता या सूर,
नहीं तो जननी बाँझ रह, काहे गवाँवत नूर"

ऐसे ही शूरवीर की माता श्रीमती परसन्दी देवी ने श्री सिंह को माता के साथ –2 पिता का भी प्यार दिया क्योंकि श्री सिंह के पिता का निधन उस समय हो गया था जब वे 6 माह के थे।

आज हमारे देश को श्री बी0 पी0 सिंह जैसे वीर सपूतों की आवश्यकता है। यद्यपि आज श्री सिंह हमारे बीच नहीं है फिर भी उनके श्रेष्ठ कार्य हमारे लिए प्रेरणाश्रोत बने रहेंगे और उनको स्मरण कर हम स्वयं में एक नई शक्ति का संचार करते रहेंगे। हमारे श्रेष्ठ, पवित्र एवं **देशभ**क्ति के कार्यों में श्री बी0 पी0 सिंह जी सदैव जीवित रहेंगे क्योंकि –

"श्रेष्ठ कार्य करने वाले कभी नहीं मरते, वे सदैव अपने कार्यों में जीवित रहते हैं।"

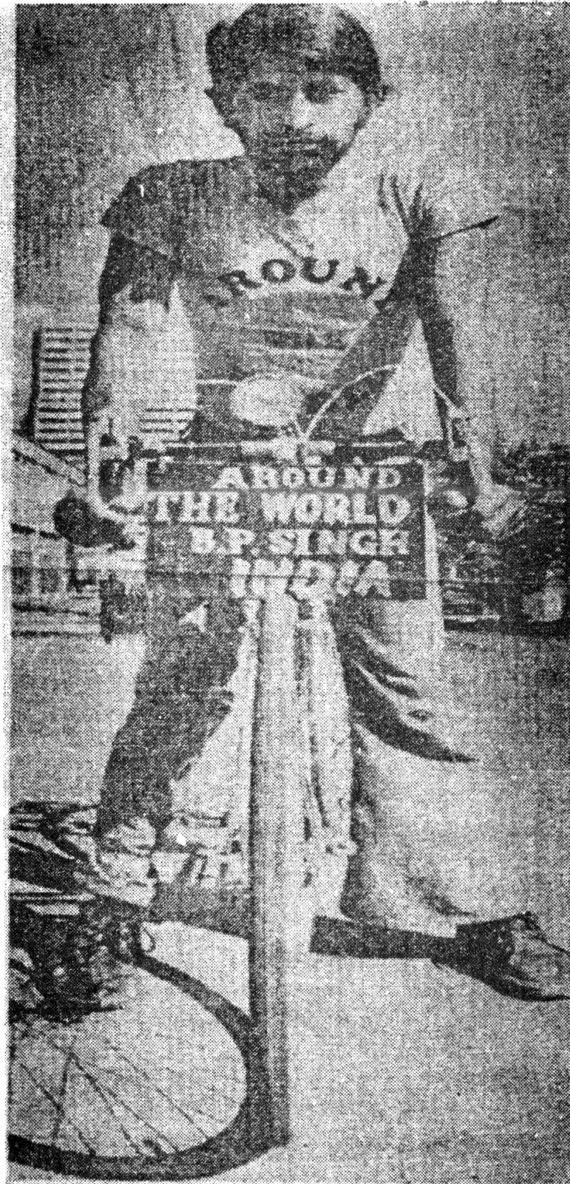
वे भौतिक रूप से न सही किन्तु आध्यात्मिक रूप से सदैव हमारे साथ रहेंगे, शायद यह कहते हुए–

"गर बिछुड़ जाएं तो मिलना, भाग्यवश हो फिर कहीं
तुम चले आना मिलेंगे, राह में हम फिर वहीं"
(ढाका जी)

हम उस महान आत्मा को कोटि –2 नमन करते हैं।

''इति श्री''

देश की शान



The bikeman cometh

Brijbal Singh started cycling around the world three years ago. Now, 44,000 miles later, he's still pedalling strong. He arrived in Ottawa this week having already visited [illegible] different countries since he left his native India. Mr. Singh, 27, has gone through four bicycles and "so many punctures I've forgotten." The reason — adventure. He hopes to make it back home, via Japan and Australia, in two years.
[illegible]

श्री ब्रजपाल सिंह

(From—Ottawa Journal, Saturday, May 29, 1976)

मुद्रक :– शिवम आफसैट प्रिन्टर्स, A–1, वैशाली कालोनी, गढ़ रोड़, मेरठ, फोन:– 3092752



- " इस विशाल रेगिस्तान में चलते-चलते, मैं थक गया। न साथ में खाना रहा और न पानी। रेगिस्तान का कोई अन्त नही। 240 किमी0 चल चुका हूँ। कोई भी शक्ति नहीं बची है। साईकिल टूट चुकी है। समय भयानक है। कोई आशा नहीं, अब सिवाय मौत के। यही सोचते-सोचते मैं रेत के ढेर पर लेट गया। " (बी0 पी0 सिंह)

- ब्राजीलिया से साओ पाउलो जाते समय कई बार तो उनसे मिलने व स्वागत करने हेतु सड़क रूक जाती थी।

- अमेरिका में समाचार पत्र द्वारा उन्हें " यंग इण्डियन यूलेसिस आफ 20th सेन्चुरी " व (द डेली टैक्सास - आस्टिन) ने उन्हें " साइकिलिंग प्रोफेसर " कहा।

- नैरोबी के जंगल में जानवरों के डर से उन्हें वक्त पेड़ो पर गुजारना पड़ा।

- "भारत को समझना वैस्ट वालों के लिए आसान नहीं। भारत एक महान राष्ट्र है और बेहद शक्तिशाली है।"

(एच0 डी0 हारनाडे - लास एंजिल्स)

यश कुमार ढाका

